Home

अंक-76-77
जून-सितं0 2015

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

सहयोग-₹40/-

पुरखा-पुरनिया कवियन के आकलन

महेन्दर मिसिर, भिखारी ठाकुर, रामजियावनदास बावला आ गोरख पाण्डेय पर भगवती प्रसाद द्विवेदी, तैयब हुसैन पीड़ित, अशोक द्विवेदी आ तुषारकान्त के आकलन–मूल्यांकन, नीरज सिंह आ विजय शंकर पाण्डेय के कहानी, डा0 प्रमोद कुमार तिवारी आ ओमप्रकाश के आलेख, हस्तक्षेप आ सामयिकी में शिलीमुख। आनंद संधिदूत, राजगुप्त के लघुकथा। डा0 कमलेश राय, शशिप्रेमदेव, मिथिलेश गहमरी, शिवपूजनलाल विद्यार्थी, शिवजी पाण्डेय, अशोक तिवारी आदि के कविता का साथ उपन्यास ''बनचरी'' के तिसरकी कड़ी। सतीश त्रिपाठी के यात्रा संस्मरण आ अउर स्थायी स्तम्भ।

''पाती अक्षर सम्मान'' आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया इकाई के समारोह-मुख्य आकर्षण

मुख्य अतिथि गण के सरस्वती चित्र पर माल्यर्पण आ दीप प्रज्वलन आ शैलेन्द्र मिश्र, ओमप्रकाश के देशगान

अतिथिगण का साथे भगवती प्रसाद द्विवेदी आ प्रकाशउदय के ''अक्षर सम्मान'' से सम्मानित करत ''पाती'' संपादक

प्रो० सदानन्द साही

प्रो० अवधेश प्रधान

बापू भवन, टाउनहाल, बलिया में आयोजित कवि मंच आ कविता के रसास्वादन करत जनसमुदाय

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंकः 76-77 (संयुक्तांक) www.bhojpuripaati.com (तिमाही) जून-सितं० 2015

आजीवन सदस्य/संरक्षक
तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात), राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया एवं जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया।

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

उप-संपादक
विष्णुदेव तिवारी

सह-संपादक
हीरा लाल 'हीरा', सान्त्वना,
सुशील कुमार तिवारी

कंपोजिग/ग्राफिक्स
शैलेश कुमार, सत्यप्रकाश पांडेय,
अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

आवरण चित्र
शचीन्द्र नाथ झा
(ललित कला अकादमी के सौजन्य से)

सुप्रसिद्ध कवि पं0 रामनवल मिश्र आ
यशस्वी लेखक चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह
के 'पाती परिवार' का ओर से विनम्र सरधांजलि !

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001

संपादन-कार्यालयः-
टेगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001 एवं
40/76, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-19
मो0- 08004375093, 91-9919426249
e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com

एक अंक पर सहयोग-40/-
सालाना सहयोग-200/-
(डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में....

हमार पन्ना - • **'हिन्दी–डे' माने हिन्दी दिवस पर भाषा–विचार**/3–4

बतकही - • **'पाती' का नाँवें पाती**/डा0 प्रमोद कुमार तिवारी/6–7

यात्रा-वृत्त - • **सिंगापुर में.....**/सतीश त्रिपाठी/11–12

शब्द-संसार - • **बतकुच्चन**/डा0 ओम प्रकाश सिंह/8

सामयिकी - • **'राजनीति के कन्फ्यूजियाइल'**/शिलीमुख/9–10

कहानी -
- **थाती**/नीरज सिंह/26–30
- **गुलेल**/विजयशंकर पाण्डेय/31–32

कविता/गीत/गजल
- **डा0 कमलेश राय**/5 • **शिवजी पाण्डेय रसराज**/10
- **शशि प्रेमदेव**/12 • **शिवपूजनलाल विद्यार्थी**/17
- **अशोक कुमार तिवारी**/20 • **मिथिलेश गहमरी**/55

लघुकथा -
- **उपकार के मजबूरी**/राजगुप्त/25
- **चोरी आ भीख**/आनन्द संधिदूत/50

उपन्यास-अंश - • **बनचरी**/33–50

आकलन/मूल्यांकन
- **महेन्दर मिसिर...**/भगवती प्रसाद द्विवेदी/13–17
- **भिखारी ठाकुर...**/तैयब हुसैन पीड़ित/18–20
- **रामजियावनदास बावला...**/अशोक द्विवेदी/21–23
- **गोरख पाण्डेय...**/तुषारकान्त उपाध्याय/24–25

गतिविधि/साहित्यिक-समाचार-
- 'पाती अक्षर सम्मान आ विश्व भोज0 सम्मेलन, बलिया इकाई के अधिवेशन हीरालाल 'हीरा'/51–54
- बक्सर में गणेशदत्त 'किरण' जयन्ती/54

राउर पन्ना - पाठक लोगन के पाती/56

'हिन्दी डे' माने 'हिन्दी-दिवस' पर 'भाषा-विचार'

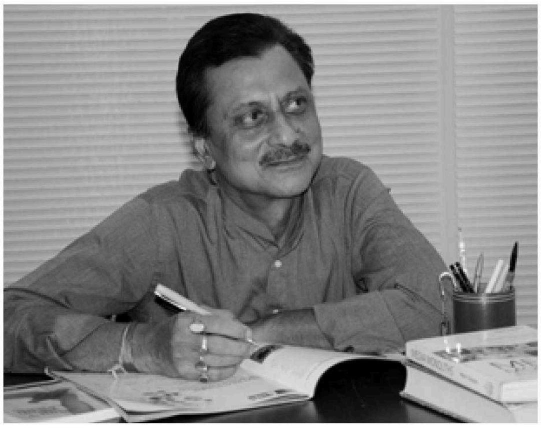

आज दुनिया के बहुते भाषा मर–बिला रहल बाड़ी सऽ। एकर मतलब ई ना भइल कि जवन भाषा कवनो क्षेत्र–विशेष आ उहाँ के जन–जीवन में जियतो बाड़ी सऽ उन्हनियो के मुवल–बिलाइल मान लिहल जाव। जवन आजुओ अपना सांस्कृतिक समाजिक खासियत का साथ अपना 'निजता' के सुरक्षित रखले बाड़ी सऽ। सोच–संवेदन आ अनुभूतियन के सटीक, प्रासंगिक अभिव्यक्ति देबे में सक्षम आ शब्द–संपन्न अइसन भाषा–सब के सम्मान सहित सकारे में बहुतन के अजुओ हिचक बा। इन्हन कऽ स्वाभाविकता गँवारू आ पछुवाइल लागत बा आ भद्रजनन (?) का अंगरेजियत का आगा भाषा के संपन्नतो उपेक्षित हो जातिया। अइसनका 'शिष्ट–विशिष्ट' नागर लोगन का जमात में लुगरी वाला 'लोक' के अर्थे पिछड़ापन रहल बा। ऊ लोग अपना बनावटी आडंवर आ बड़प्पन में लोकभाषा के सुभाविक सिरजनशीलता के क्षणिक–मनरंजन के चीजु मानला। ई अंगरेजी दाँ अभिजात हिन्दीवादी लोग 'अनेकता में एकता' के गान करत ना अघाला, बाकि आपन भाषाई वर्चस्व आ दबंगई बनवला रखला खातिर, अनेकता के 'अस्तित्व' आ 'निजता' के नकरले में आपन शान–गुमान बूझेला।

ई ऊहे हिन्दी–प्रेमी (?) हउवे लोग जेके खुदे हिन्दी का दुर्दशा के परवाह नइखे रहल। ई अंग्रेजी के बनावटी आदर देई लोग बाकि अपना देश के लोकभषन के सम्मान पर हाय–तोबा मचावे लागी। भाषा का दिसाई गंभीर लउके वाला ई लोग तब तनिको विचलित ना होला, जब उनहीं के गाँव–शहर में उनहीं के आत्मीय लोग अपना भाषा का प्रति लगातार अगंभीरता के प्रदर्शन करेला। संवाद आ जनसंचार माध्यमन–में भाषा के जवना तरह से लिहल जाये के चाहीं, वइसन ना भइला के कुछ वजह बाड़ी स। हमनी का खुद अपना बात–व्यवहार आ अभिव्यक्ति में भाषा के चलताऊ बनावत जा रहल बानी जा। अपना सुविधा आ सहूलियत का मोताबिक भाषा के अचार, मुरब्बा आ चटनी बना लिहल प्रचलन में आ गइल बा। ह्वाट्स ऐप आ फेसबुकिया 'शार्ट कट' के मनमानी के त बाते अलगा बा। हिन्दी के अंगरेजी में लिखे के फैशन भा मजबूरी बा। 'एस एम एस' आ 'मेल' भाषा का दिसाई हमन का लापरवाही आ हड़बड़ी के अलगे दरसावत बा। कवनो नियम, कवनो अनुशासन नइखे। भाषा के

वालन के जीवन–संस्कृति आ चेतना के आखिरी दम तक बचवले रहेले आ ज्यों तनी खाद–पानी–हवा मिलल ऊ आपन हरियरी आ ताजगी लिहले जीवंत हो उठेले। भाषा के इहे गुन–धर्म लोक का गति–शीलता आ विशेषता के पहिचान देला। अपना देश में कतने अइसन लोकभाषा बाडी सऽ जवना में लोक के अंतरंग खुलेला आ खिलेला। जवना में अनुंभव, बोध आ ज्ञान के अपार क्षमता–बल–बेंवत बा। ई परस्पर एक दुसरा से घुललो–मिलल बाड़ी सऽ जइसे भोजपुरी–अवधी, भोजपुरी मैथिली, भोजपुरी छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, भोजपुरी अंगिका। ई कूल्हि लोकभाषा मिलिये–जुल के हिन्दी के जातीय विकास में सहायक भइल बाड़ी स आ हमन का राष्ट्रीय एकता के अउर पोढ़ बनवले बाड़ी सऽ। तबो काजने काहें जब एह भाषा–सब के निजता, सम्मान आ समानता क बात आवेला त कुछ कथित हिन्दीवादी राष्ट्र भक्तन (?) के खुजली होखे लागेला। मातृभाषा से विलग होखे के सबक ऊ लोग सिखावेला, जेके राजभाषा के तिजारती, दफ्तरी आ बाजारू घालमेल में बेपटरी भइला के तनिको चिन्ता नइखे, जे अंग्रेजी में हिन्दी–डे, 'सेलिब्रेट' करऽता। मीडिया चैनल, फिल्मकार आ नवकलाकार अपना कमाई खातिर, लोगन के चटोरपन का तुष्टि खातिर भाषा के जब जइसन चाहत बा तोड़–मरोड़ लेता। विज्ञापन से लगायत साहित्य तक भाषा के देसी–विदेसी खिचड़ी, चटनी, अचार सिरका बनावल जा रहल बा।

एने हिन्दी–भाषा में 'अराजकता' खुल के अठखेली करत लउक रहल बिया। गली–सड़क चौराहा के

भाषा में चमत्कारी घालमेल आ उटपटांग हरकत के पूरा छूट बा। 'कचरा' फइलावे वालन के महिमामंडनो होत बा, बस ऊ अपना 'गोल' भा 'दल' क होखे। एह अराजक–अभियान के हिन्दी भाषा–साहित्य के समझदारो लोगन क नेह–छोह–शह मिल रहल बा।

कुछ अपवाद छोड़ के भाषा के जिये आ प्यार करे वाला लोग पहिलहूँ कुछ करे का स्थिति में ना रहे आ अजुओ नइखे। भाषा के ठीकेदार, व्यापारी आ महन्थ पहिलहूँ तिरछा मुसुकी काटत रहलन सऽ आ आजुओ काटत बाड़े सऽ। हिन्दी में, तकनीकी आ व्यवहारिक शब्दन का आड़ में कतने देसी–विदेशी शब्द आ मोहावरा, पढ़े वालन खातिर अजब–गजब अर्थ उगिल रहल बाडन सऽ। भाषा के हिंग्लिसियावत जवन नव बाजारू हिन्दी बिया ओमें बोलियन क तड़को बा। कुछ विद्वान त एके हिन्दी के बढ़त–'ग्राफ' आ ओकरा 'वैश्विक–विस्तार' से जोड़त छाती फुला रहल बा लोग। माने हिन्दी में रउवा आपन मातृभाषा लेके घुसि आईं आ एकर ऐसी–तैसी करत अपना के ओही में विलय क दीं, बाकि खबरदार अपना मातृभाषा के मान्यता के नाँव मत लीं।

'सत्ता' आ 'राजनीति' दूनो – शिक्षा, संस्कृति आ भाषा के ठेका कुछ खास संस्था, अकादमी आ संस्थानन के देके आपन पल्ला झार चुकल बाड़ी सऽ। कुछ विश्वविद्यालयी विभागो एह दायित्व के पेशेवर ढंग से निभा रहल बाड़न सऽ। मीडिया चैनल आ भाषा–साहित्य के महोत्सव करे वालन क दखल अलग बा। करोड़न का कमाई खातिर कुछ फिल्मकारो 'भाषा' के ऐसी–तैसी करे क अधिकार पवले बाड़न सऽ। अब एमे भाषा खातिर गंभीरता देखावे, ओके संस्कारित–अनुशासित करे, के आगा आई? केहू का लगे अतना फालतू टैम नइखे अगर बटलो बा त ऊ चिचियाइल करस। प्रलाप–रूदन आ विलाप–मिलाप खातिर साल में एगो दिन तय क दिहल बा। ओह दिन, याने 'हिन्दी–डे' पर रउवों आईं–कुछ कहीं, कुछ सुनीं–फेरू घरे जाईं।

ई सब कहला–गवला क मतलब केहू क विरोध नइखे। दरसल भाषा–संस्थान आ अकादमियन क आपन विवशता भा आंतरिक–राजनीति आ कर्म–धर्म हो सकेला। एही तरे राजनीतिक दलन के आपन निजी स्वारथ आ फायदा–नोकसान क चिन्ता बा। 'सत्ता', सुविधा, पद, सम्मान आ पुरस्कार केके ना लोभावे? हमनी का खुदे अपना निजी स्वार्थ, जाति–धरम, क्षेत्र आ गोलबन्दी में बाझल बानी जा। आपुसी जलन, विखराव–विघटन आ हमनी क निजी पूर्वाग्रह सबसे बड़ रोड़ा बा। भाषा के कुछ पुरान–नया पैरोकारो चुप बाड़न सऽ। ऊ उहाँ जरूर बोलिहन सऽ, जब कवनो लोकभाषा के भारतीय भाषा–श्रेणी में–आठवीं अनुसूची में मान्यता देबे के बात आई। ओघरी हिन्दीवादियन के हिन्दी के बाँहि कटत लउके लागी आ राष्ट्र भाषा का रूप में राष्ट्रीयता खतरा में नजर आवे लागी। ऊ ए सत्य के बेल्कुले भुला जइहें सऽ कि हिन्दी के एही लोक–भषन से संजीवनी आ शक्ति मिलल बा। ब्रजी, अवधी, मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी जन–भाषा के साहित्य से हिन्दी–साहित्य संपन्न भइल बा। आपन क्षेत्रीय भाषा–संस्कृति आ पहिचान भइलो पर, हिन्दी पट्टी के राज्य राष्ट्रीय एकता आ राष्ट्रीय संकल्पना के आकार देले बाड़न सऽ।

राष्ट्रीय भाषा का रूप में, आठवीं अनुसूची में जनभाषा भोजपुरी के शामिल भइला पर कुछ हिन्दीवादी लोगन द्वारा बार–बार विरोध समझ से परे बा। अनजाने अब ई विरोध भोजपुरी खातिर आवाज उठावे वालन का भीतर, हिन्दी का प्रति असहिष्णुता के जन्म दे रहल बा। ई शुभ नइखे। अगर हिन्दी के समृद्ध आ संपन्न होत देखे के बा त हिन्दी पट्टी के प्रतिष्ठित आ संपन्न भोजपुरी भाषा के आठवीं अनुसूची में ना शामिल भइल, अन्याय–पूर्ण बा। 'भोजपुरी' करोड़न हिन्दी–प्रेमियन के मातृभाषा हऽ। ओके समानता आ सम्मान के दरकार बा। करोड़ो भोजपुरिहा समानता आ स्वाभिमान का साथ, हिन्दी का भाषाई राष्ट्रवाद में शामिल रहल बाड़न सऽ। सामाजिक–सांस्कृतिक समरसता में ऊ बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगू, मलयाली, असमिया सबका साथ खड़ा बाड़न सऽ, फेर उन्हनी के आपन समृद्ध मातृभाषा काहें उपेक्षित रही ?

सर्वविदित बा कि हिन्दी अपना बोलियन आ जनपदीय–भाषा सब से तत्व ग्रहण करत आइल बिया। कूल्हि हिन्दी–राज्य अपना भाषाई खासियत आ विविधता का साथहीं संगठित भइल बाड़न सऽ त साहित्यिक रूप से समृद्ध आ शब्द संपन्न लोकभाषा भोजपुरी के छल–पाखंड से उपेक्षित क के, भा धौंस जमाइ के, भा अपना वर्चस्व से, ओके रोके क प्रयास कइल करोड़न भोजपुरिहन में क्षोभ आ आक्रोश के जनम देई। सब अपना भाषा में पलल–बढ़ल बा आ ओकरा अपना मातृभाषा से लगाव बा। एकर मतलब ई थोरे भइल कि ओके हिन्दी भा दोसरा राष्ट्रीय भाषा से विरोध बा। जेकरा भोजपुरी भावेला ओके हिन्दियो भावेला। एगो ओकर मातृभाषा हऽ दुसरकी राजभाषा। ••

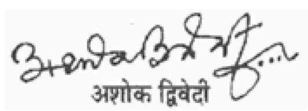

कमलेश राय के दू गो गीत

डॉ. कमलेश राय

[एक]

cgjs&?kjs& [kr [kfjgkus
1 rwsHkysfu[kgjsxkp
jktsl qk d· 1 kt> fugkjr
tkxsykfHku1 gjsxkpA

vk[k; u 1 ku & fogku
fg; keal iuk1 ?kj 1 tkds
1 wt ds1 x pys1 Qj esa
fcu fl gjsfcu Fkkds
tjy djsfnu&fnu Hkj ?kkesa
Nu Hkj Nkg dsv1 jsxkpA

dcgwikFkj & ikyk dcgw
1 qkk & ck<+& rckgh
fdfl e&fdfl e d· dkV fcNy
ck
vkdjs1 xjh jkgh
dsrukailp cnkbZdjds
rcgw#dsu BgjsxkpA

ekVh g· : ik & 1 ksuk
ekVh g· vkdj Fkkrh
ekVh vkdjsekFk d· pUnu
ekVh 1 xq 1 ;?kkrh
vtjh Hkj ekVh dscws
mtjs& cl svk1 pjsxkaA

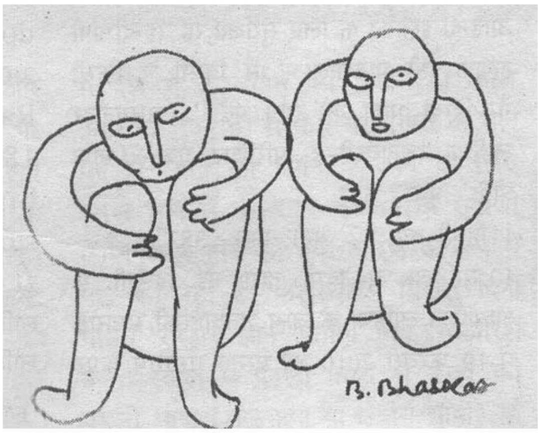

[दू]

ge ir>j eaiRfr txkds
ikr&ikr e/kqkl fy[kyk;
dkVu dsdkju&dkju ij
Qwyu d· bfrgkl fy[kykA

1 k> <jstc ikp il kjs
vkxu&vkxu vfUg; kjk
1 wt ij igjk ykxstc
fl 1 dsykxsnft; kjk
ge ekVh d· fn; k tjkds
?kj&?kj vkl &mtkl fy[kykA

tc&tc tjr tB dsvkxu
Nu&Nu eu&ijku ngds
/kjrh d· pwj ngds
1 xjh 1 qk d· fl oku ngds
ge vk[k; u eal kou ysds
v/kju ij e/kgkl fy[kykA

1 kp ds[kfrj cu&cu Mkyr
ix&iq kfju ehjk1 s
1 cn&1 cn vk[kj&vk[kj esa
ysdsiij dcjk1 s
ge r· xx dBkSh gjr
dk'kh eajSkl fy[kykA••

258@bZ&1] 1 gknrijk
eÅ] m0i0

से एह प्रेम के दावा त हमनी का भोजपुरिया लोग खूब करेनी बाकिर प्रमाण नाहीं के बराबर मिलेला। हमरा ई कहे में कवनो संकोच नइखे कि बंगाली, मराठी, तमिल भा मलयाली समाज के अपना भाषा से जइसन प्रेम बा, अगर ओकर दसो प्रतिशत भोजपुरिया लोगन में आ जाए त 'पाती' जइसन दर्जन भर पत्रिका के पाठक संख्या लाखन में पहुंच जाई।

हमरा के बड़ा नीमन लागल ह कि पिछिला कुछ अंक में प्रबंध संपादक प्रगत द्विवेदी 'तनी हट–हटा के' नाम से लिख रहल बाड़े। आ जइसन नयका पीढ़ी के लिखे के चाहीं ओइसन लिखत बाड़े। हट–हटा के सोचे आ करे के जज्बा उनुका भीतर लउक रहल बा, चाहे ऊ भोजपुरी के आडियो–वीडियो प्रारूप से जोडे के बात होखे चाहे फेसबुक–ह्वाट्सएप जइसन नयां जनमाध्यम में विस्तार करे के। नया पीढ़ी खाली उमिर से नया ना होले ऊ अपना विचार से नया होले। भोजपुरी में अभियो भावपक्ष बेसी बा, जरूरत वैचारिक लेखन के बा, प्रगत जी के एगो बात हमरा नीमन लागल ह कि ऊ तीत लागे आ कड़वा लागे वाला बात करे खातिर तइयार बाडन (कुछ अइसनो छुवे क, उदबेगे क कोसिस करब जंवन दुखइबो करी) अक्सर बेहतर आ नया के निर्माण खातिर कुछ तोड़–फोड़ मचावे के पड़ेला, एकरा खातिर समाज के तइयार करे के पडेला, इहो संपादक के एगो काम हऽ। नयको अंक में हम उनुकर लिखल खोजत रहनीं हँ, कवनो कारण से ना लिखले ह बाकिर अगिला अंक में इंतजार रही। नयका पीढ़ी के लगे गति आ तनी हड़बड़ी बा, एह से संभव बा कि ऊ तीन महीना ले पत्रिका के प्रिंट संस्करण के इंतजार ना करे। दुनिया भर के पत्रिका धीरे–धीरे 'ई' संस्करण में बदल रहल बाड़ी स। महत्वपूर्ण 'बात' के पहुंचल बा आ ओकरा में एगो बड समूह के हिस्सेदारी बा, ऊ चाहे जवना माध्यम से होखे। अगर प्रगत जी नयका पीढी के लक्ष्य क के अइसन कवनो योजना बनावत बाड़न त ओकर स्वागत होखे के चाही। प्रिंट आ इलेक्ट्रानिक दूनो माध्यम में संबंध बने आ जादे से जादे लोग से संवाद होखे, एह से बेसी हमन का भाषा खातिर, का चाहीं ?

'पाती' के संपादक लगातार एह कोशिश में लागल बाड़े कि एकरा के वैचारिक चेतना के, बहस के अउर संवाद के पत्रिका के रूप में भोजपुरिया समाज के सोझा राखीं। भोजपुरी अकादमी के विवाद पर परिचर्चा के पाती में प्रमुखता से छापे के बात होखे भा प्रेम कविता आ प्रेम कथा के विशेषांक निकाले के; द्विवेदी जी लगातार वैचारिक हलचल पैदा करे के कोशिश में लागल बानीं। संपादकीय आ आलेख के चयन तक में उनुका एह प्रयास के देखल जा सकेला। ई बात एकदम स्पष्ट बा कि दुनिया के कवनो भाषा खाली गीत, कविता आ लोक साहित्य के बल प आज के संचार क्रांति के युग में ना बच पाई। अगर ऊ वैचारिक साहित्य से ना जुड़ी अपना भीतर ज्ञान साहित्य के रचना ना करी त बाकी भाषा ओकरा के किनारे ढकेले में देर ना लगइहें स। एगो पुरान कहावत ह कि 'जे रची उहे बची', आ जे खाली नकल करत रही आ दूसरा लोग के लकीर पीटत रही ऊ एक दिन आपन सब कुछ गँवा के दूसरा में समाहित हो जाई।

अब ई भोजपुरिया समाज के तय करे के बा कि ऊ कइसन भविष्य चाहत बा। एगो रस्ता ई बा कि अपना भाषा के पत्र, पत्रिका, किताब के गंगा में दहा दिहल जाव आ लेखक लोग से कह दीहल जाव कि छोड़ऽ भोजपुरी, तूहूँ राजनीति आ बाजार के अनुसार अंग्रेजी के माला जपऽ। ई आसान रस्ता बा, दुसरका कठिन रस्ता बा कि अपना संस्कृति के, अपना मूल्य के बचावे के कोशिश कइल जाव आ जे भी लोग एह दिशा में काम कर रहल बा ओकरा के समर्थन सहयोग दिहल जाव। ढेर दूर मत जाईं खाली भोजपुरी भाषी शिक्षक आ प्रोफेसर लोग अगर ई तय कर लेवे कि हमनी के एगो कवनो भोजपुरी पत्रिका खरीदब जा आ 6 महीना में एगो लेख लिखब जा त सदस्य संख्या कई हजार में पहुंच जाई आ नीमन लेख के कवनो कमी ना रही। असल में सवाल पत्रिका बचावे के ना हऽ, सवाल ह कि अपना भीतर कुछ मौलिक कुछ ठेठ 'आपन' बचल रहो। ताकी जब तीन चार दशक बाद रउआ कवनो बच्चा से बात करीं तऽ ई कह सकीं कि फलानां चीज हमनी के आपन हऽ। बाकी खान–पान से लेके पहनावा आ चटाई तक सबकुछ त विदेश से आइए रहल बा। अब ऊ चाहे 'पाती' होखे, अशोक द्विवेदी होखँऽ भा कवनो दूसर रचनाकार अपना दम पऽ ना त भाषा के बचा सकेले ना संस्कृति के ई तऽ समाजे तय करी कि ओकरा के का करे के बा, का छोड़े के बा आ का बचावे के बा। आ समाज कहीं हवा में थोड़े पैदा होला ऊ त हमरे आ रउआ से नू बनेला। तऽ सीधे रउवे से पूछ रहल बानीं कि रउआ कवना ओर बानीं ? ••

fgUnh dkslhZ dkWyst, fo'ofo|ky;] xqtjkr] lwjr&30] xq/khuxj&382030

शब्द-संसार

बतकुच्चन

डा0 ओमप्रकाश सिंह

एक दिन पढत घरी धेयान में आइल कि जवन 'पाजिटिव' थिंकिंग वाला पाजिटिव शब्द बा ओकर सही भोजपुरी का होई? धनात्मक चिंतन, गुणात्मक चिंतन भा अइसने कवनो दोसरा शब्द से ऊ सही भाव सामने ना आ पावे। तब का हमनी का लगे 'पाजिटिव थिंकिंग' के सोचे ना होखे? उबारू सोच, आगा ले जाये वाला सोच खातिर कवनो शब्द काहे नइखे, भा बावे बाकिर हमरा मालूम नइखे, अगुआही सोच, अगताही सोच का ऊ मतलब पूरा कर सकेले? कुछ त रउरो सभे बोलीं। पाजिटिव थिंकिंग, माने कि सकारात्मक सोच। सकारथ सोच ओह सोच के कहल जाला जवन आदमी के मनोरथ पूरा करे, ओकर इच्छा पूरा करे भा ओकर सोचल सगरी काम पूरा करे में सहायता करे। ठीक एकरा उलट होले 'निगेटिव थिंकिंग' माने कि नकारात्मक सोच, माने कि अकारथ सोच जवन बेकार के सोच होले, जवना से कवनो मकसद, कवनो कारज पूरा ना होखत होखे। कहल जाला कि सोचावट में बहुते ताकत होले बाकिर ओकर सही इस्तेमाल हमनी का ना कर पाईले जा। सही सोच हमेशा सकारथ होखेला गलत सोच अकारथ बनि जाला। अब सकारथ आ सवारथ वाली सोच में मकसद एके लेखा होखला का बावजूद दुनू सोच में बहुते अन्तर होला, सवारथ वाला सोच क लोग बस आपन सोचेले आ ओकरा एहसे कवनो मतलब ना होखे कि एह दौरान दोसरा के कतना नुकसान होखत बा। अब एहिजा सवारथ वाली सोच कि काहे ना ओकरा के लंघी मार दिहल जाव कि ऊ ढिमला जाव आ हम आगा निकल जाईं; जबकि सकारथ सोच रउरा में स्फूर्ति आ उत्साह भरे के काम करी जवना से रउरा ओकरा से तेज दउड़ सकीं। इहो ना होखे कि हर तरह के सोच पूरा हो जाव। कवनो सोच चाहे ऊ कतनो सकारथ सोच काहे ना होखो सही ना हो सके जब ओकर मकसद प्रकृति के नियम का बहरा होखे, जइसे कि केहु सोचे कि ओकरा लगे तीन चार गो हाथ हो जाव त ई कवनो सोचावट से ना हो सकी। हँ सकारथ सोच रउरा के एह लायक जरूर बना दी कि रउरा कई हाथ के काम अपना दुइये हाथ से कर सकीं। सकारथ सोच उहे सकारथ होले जवना पर रउरो पूरा भरोसा होखे, अगर रउरा बेमन के, बिना भरोसा के कुछ सोचल चाहत बानी त सोचीं। ओकरा के जागते में सपना देखला से बेसी मानल भूल होखी, अब सकारथ अकारथ आ सवारथ से मिलते जुलत शब्द होला महारत, हर आदमी कवनो ना कवनो गुण में महारत हासिल कर सकेला आ ओह महारत के सही इस्तेमाल से आपन सगरी मनोरथ अपना सकारथ सोच से पूरा कर सकेला, अब एह पूरा पर इयाद आइल कि एगो पुरावल होला, एगो पुरइन, हवा कबो पुरुवा बहेले त कबो पछुआ, आ कोर्ट कचहरी पंचायत में अकसरहा पुरवा साखी के जरूरत पड़ेला। अब एकरा के रसरी लेखा पूरत जाईं जतना मन करे आ तबे सही बतकुच्चन होई। पुर कहल जाला नगर भा शहर के बाकिर एकर इस्तेमाल कवनो शब्द का अन्त में प्रत्यय के रूप में बेसी होला, जइसे कि भागलपुर, नागपुर, जयपुर वगैरह, बाकिर जब पुर के चरचा कइल जाई त ई जगहा पूरा ना पड़ी, पुरइन कमल के पत्ता के आ प्लासेंटो के कहल जाला जवना से बच्चा अपना महतारी का कोख में जुड़ल रहेला, ओह प्लासेंटा के पुरइन शायद एहसे नाम पड़ल कि ऊ कमल के फूल लेखा छितराइल रहेला आ नाभि नाल के सीधा नार भा नाल कहल जाला। पुरनिया बूढ़ पुरान लोग के भा पहिले जनमल लोग के कहल जाला जे अब नइखे। अक्सर सुने के मिलेला कि हमनी का पुरनियन का जमाना में अतना सस्ती रहे कि पूछीं मत, हालांकि ओह घरी के सस्ती एह चलते रहल कि तब लोगन के खरीदे के बेंवत ना रहत रहे जतना आजु अतना महँगियो में बावे। पुर आ पूरब में कवनो नाता ना होखला का बावजूद पूरब के रहे वाला लोग पुरबिया कहा गइल आ पूरब से आवे वाली हवा पुरवइया। पूरबे से पुरबी बनल जवन गीत के एगो शैली ह आ जवना के जनक रहले पं0 महेन्दर मिसिर। आजु ले उनुकर रचल पुरबी लोग का जबान पर चढ़ल बा जइसे कि "अंगुरी में डँसले बिया नगिनिया ए ननदी" बाकिर अब नया पुरबी कमे लिखात बा, आ पुरवट त रउरा सभे में बहुते कम लोग देखले होखी। बाकिर ई एगो चमड़ा के थैली होत रहे जवना से इनार से पानी निकालल जात रहे, आ जवन आदमी पुरवट से पानी निकालत रहे ओकरा के पुरहा कहल जाव, पुर के छोट रुप हो गइल पुरवा जवन कवनो छोटहन गाँव के कहल जाला, अब तनी पूरो का ओरि देखल जाव बाकिर कुछ पुर अबहियो बाकी बा, पुरवा माटी के बरतन भरुकी भा चुकिया के कहल जाला। अलग बाति बा कि प्लास्टिक के गिलास के चलते कोंहार के बनावल पुरवा कमे उलकत बा। गाँवो देहात में अब प्लास्टिके के गिलास छाप लिहले बा, अब एह बात के पुरवावल भा पुरवासाखी के जरूरत ना पड़े के चाहीं, काहे कि ई त सभका नजर का सोझा बा। अब चलीं पूर पर, त पूर भरूआ सामानो के कहल जाला जवन कवनो चीज में भा पकवान में भरल जाला, आ पूरन कवनो काम के भा घटना के पूरा होखला के कहल जाला जइसे कि पूरनमासी महीना पूरा भइला के दिन के कहल जाला जहिया चनरमा अपना पूरा आकार में होखेले, अब त रउरो कहत होखब कि वाह रे बतकुच्चन, कतना पुरबऽ एह पूर के? पूरल के मतलब रसरी बरल होला आ कवनो काम के पूरो कइल, अब आजु एह पुर से पूर तक आवे में हमार जगहा पूरा हो गइल, अलग बाति बा कि हम ई ना कह सकीं कि हमार बाति पूरा हो गइल। बात ना भइल हनुमान जी के पोंछ हो गइल कि ओराते नइखे! ••

Hkkst iqjh dkMV dke] cfy;k

सामयिकी

राजनीति के कन्फ्यूजियाइल

शिलीमुख

बात के बतंगड़ बनावल एघरी अइसन प्रचलन में आ गइल बा कि पूछीं मत। देश के राजनीतिक दल एकरा के आपन प्रमुख अस्त्र बना लेले बाड़ें सऽ। हर बात में हुज्जत करत "धोती–कुर्त्ता फार के/ सड़क प निकल जा झार के।" मीडिया चैनलन के खुरपेंची दिमाग अइसने कुल सीन खोजेला। आखिर अभिव्यक्ति के आजादी क एगो ठीका ओकरो बा। सीन 'पाजिटिव' ले ढेर 'निगेटिव' रही त ऊ अउर जोर से चिकरी–चिचियाई। कहे क मतलब ई कि ओकरा के कुछ सनसनी भा चटखारेदार चाही। जवना से ओकरो भाव बढ़ो। लोग दीदा फारि के देखो।

हमन का लोकतंत्र में राजनीति 'लोक' के अपना दलगत नजरिया से देखेले। 'लोकतंत्र' थाहे आ जाने का बजाय अब राजनीति, 'लोकमत' बनावे आ बिगाड़े का दौर में आ गइल बिया। राजनीति 'लोक' खातिर कुछ करो भा ना करो ओके भ्रमित (कन्फ्यूज) त कइये दी। 'सत्य' के कबो साफ ना होखे दी। ओइसहूँ एघरी 'असत्यमेव जयते' क बोलबाला बा।

जनसेवा आ लोकहित का नाँव पर राजनीति के ए बी सी डी शुरू करे वाला छटंकी–छुट भइया भा 'बास' टाइप नेता शुरुवे से यदि आपन नीयत आ निष्ठा साफ राखित त देश भा देश का लोगन के कुछ भला होइत, बाकि यदि सबकर भले हो जाई त ओकरा के, के पूछी? ईमानदारी आ निष्ठा हेरत–हेरत अपने हेरा जाए के बा। सवाल ई बा कि 'परहित' आ 'जनसेवा' काहें? तोहरा लगे कुछ रही तब न देबऽ? 'सेवा' खातिर बल–बेंवत औकात आ सामरथ चाही। ई नइखे। तबो लोकहित आ जनसेवा का राहे चलत चल जाईं। ओकरे बले, बल–बेंवत, सामरथ–सत्ता कूल्हि भेंटाइ जाई।

अब त टीबी, सिनेमा मे अक्सरे देखे में आवेला। रेक्सा ठेला वाला होखे भा कुली–मजूर, सब्जी बेचे वाला होखे भा पहलवानी करे वाला। इस्कूल के निकलुवा, चोर–चाई, चरित्र–भ्रष्ट कुछऊ होखे अचके ओकरा ज्ञान हो सकेला आ अचके भाग पलट सकेला। ज्ञान चक्षु खुलते हृदय परिवर्त्तन हो जाई आ ऊ नेता बनि के बड़का मंत्री तक बन जाई। हमरा कबो–कबो बुझाला कि एकदम निखट्टू, नाकारा आ बेकारो आदमी एकरा खातिर 'फिट' बा। फिटे ना 'क्वालिफाइड' बा। नेता आ मंत्री के ग्लैमर अइसन बा कि अब बड़–बड़ बुद्धिजीवी, माफिया, ठीकेदार आ धन–दउलत वाला रईसो नेतागिरी आ राजनीति में आपन मूड़ी ढुकावल चाहत बा। बलुक आम आदमी ले आपन लहावे का चक्कर में बा।

चिचियाइल, नखड़ा कइल, पोंहड़क पसारल, हेकड़ी देखावल, बात के बतंगड़ बनावल, नीमनों के अझुरावल, थेथरई का हद ले कुतरक कइल आदि–आदि। यदि आ गइल त रउवों राजनीति खातिर सुतंत्र आ 'क्वालिफाइड' बानी। बगलोल, डेराभुत, भ्रमित–भकुवाइल 'वोटर' क हाल ई बा कि ऊ कबो रउरा फंदा में फँस जाई। जात, धरम, क्षेत्र, गरीबी, भ्रष्टाचार, महंगाई, बेकारी, अराजकता का चक्कर में चकरात 'वोटर' के आपन निजी माया–मोह आ छुद्र सवारथ अलगे घेरले रहेला–बस मोका अइला पर ओकर मति मारे आ भरमावे के कला चाहीं। एह 'कला' से संपन्न कलाकार राजनीति में आपन फुटही–रँगही कूल्हि सिक्का चला सकत बा।

एघरी कुछ लोगन के ई 'वोटर' समझदार आ चल्हाँक नजर आवे लागल बा। कवनो राजनीतिक दलवाली सरकार से आजिज आके जदि जनता ओके सत्ता से बेदखल क दिहलस त ओके जन जागृति आ जनसमझदारी से जोर दियाता। एह जनता क कवन ठेकान? ऊ त अक्सर अपने गोड़ प टाँगी चलावत रहेले। कब ओकर चेतना–बिजुकि के अचेतन होई कवनो ठेकान नइखे। पढ़ुवा–समझदार ले बहक जाता। एही से, 'सत्ता' से बेदखल आ– कुर्सी से उतरल राजनीतिक दल, हारियो गइला प चैन से ना बइठे। राजसुख, रुतबा, कुरुसी के चस्का आ हिरिस ओके उदबेगले रहेले। ऊ सूतत–बइठत, जागत–उँघात सत्ताधारी का नाक में दम करे के बहाना आ उपाइ खोजत रहेला। ओघरी 'जनसेवा' आ 'जनहित' के मंत्र–जाप ऊ अउरी तेजी से करे लागेला। अनखुन–खुरचाल खोजत, सत्ता पर कुबोल बोलत, पोंहड़क पसारत, बेबात–हल्ला मचावत आखिर ऊ टीबी चैनल आ मीडिया के दामन पकड़ले, जनता के भरमावे–अझुरावे का अनवरत अभियान में जुट जाला।

साँच पूछीं त जनता के 'पीर', परिस्थिति आ जथारथ से वास्ता ना राखे वाला पक्ष–विपक्ष के ई अफलातून हवाई नेता भुइंयाँ उतरबे ना करेलन सऽ। एक–दोसरा पर कींच–कानो फेंकत, हुल्ल–हपाड़ मचावत ई राजनेता जनता क दुख–दर्द दूर करे का बजाय अउर बढ़ा देत बाड़न सऽ। टी.वी खोललीं ना कि रोज एगो हल्ला–बखेड़ा। दुसरा का आँखि के फुल्ली देखला में अपना आँख क माड़ा भोर पर जाता। सूप त सूप, चलनियो ठठा के हँसे लागऽतिया, जवना में बहत्तर छेद बा।

पहिले सूप, चलनी, आखा, झरना, खेती–गृहस्थी आ रसोई के जरूरी सामान मानल जात रहे। सूप, अरकस–बथुवा, खुद्दी, पइया, भूसी लकड़ी,

फटकि–फेंकि के भा उचिलाइ के सारतत्त्व (माने नीमन अनाज) अपना लगे राख लेव। एकरा उलट आखा, चलनी भा झरना अपना अनगिनती छोट–बड़ छेदन से अनाज भा 'सारतत्त्व' बहरा निकालत नीचे गिरा देव आ थोथा, ठूरी–भूसी–लकड़ी अपना पासे राख लेव। गाँव घर में एही गुन प कहाउत बन गइल। आजु राजनीतिक नेतन के आपुसी कुकुर–झौं–झौं आ बयानबाजी देखि के साफे बुझाई कि सूप पर चलनी हँसऽतिया। आपन कमी, गलती आ पाप ना देखि के, दुसरा में खाली कमी आ नुक्स निकालल राजनीति के स्वस्थ परंपरा बन गइल बा।

हाय–हाय रे मजबूरी...जवना सत्तामद आ सुख–सुविधा का नशा में हम कबो झूमत–अइंठत चलत रहलीं आजु ओही के दोसर छीन लिहलस। छिनिये ना लिहलस ओपर कब्जा क के गेंडुली मरले बइठल बा। बात–बात प हंगामा खड़ा करे वाला, कूल्हि दुनियाँ के चोर–बेइमान बतावे वाला सुराजी पाटी के देखीं कि ऊ सत्तानशीन भइलो पर आपन बकवादी सुभाव नइखे छोड़त। ऊ अब अउरी जोर–शोर आ अहंकार से, आपन कमी आ दोस भुलाइ के दुसरा पर तोहमत मढ़े आ झगरा करे में बाझ गइल बा।

राजनीति एक किसिम क खेले हऽ। पहिले समस्या पैदा करऽ, फेर ओपर अँगुरी ध के चिचिया, फेर ओकर समाधान करे क घोषणा करऽ। याने पहिले आग लगावऽ फेरु चिचिया–चिचिया के बुतावऽ। पहिले कूड़ा फइलावऽ फेर जब दस–पनरह दिन में बसना आ बेमारी फइले लागे त कैमरा वाला टीम का सँग ओके बहारे–बटोरे का अभियान क श्रीगणेश करऽ। अब त मीडिया चैनल वाला एह सद्भावना–यात्रा में पहिलहीं से हाजिर रहत बाड़न सऽ। बे राजनीति के रोटी खइले ऊहो कइसे जीहें सऽ। उन्हन क खइलको ना पची।

राजनीति के हाल ई बा कि जब केहू साफ–सफाई के बात करत बा त सवाल, भोग के रोग से मुक्ति खातिर– योग के बात करत बा त सवाल। 'योग' आ 'वियोग' के झगरा संयोग नइखे....ई राजनीति के बदलत कुरूपता के उद्घाटन हऽ आज हर पार्टी के ईश्वर, अल्ला, गॉड, नेता–नायक अलगा अलगा बा। एही तरे योगो– अलगा–अलगा। बुझला एही से मास्टर मउनी राम, अपना एगो धतिंगड़–खुरपेंची लड़िका के 'जनसेवा' क सलाह देत, नवकी 'सुराज–पार्टी' में भर्ती करा देले बाड़न। ओइसहूँ उ उनका कहला में ना रहे। एकदम अमान आ मनसरहँग। बहेंतुआ अस घुमला ले नीके भइल कि ओकर हृदय परिवर्त्तन हो गइल आ ऊहो जनसेवा क नइकी उज्जर टोपी पहिन लिहलस। अब ऊ पहिले गली–मुहल्ला फेरु जिला, फेरु जिला, फेरु प्रदेश....आ एक न एक दिन मउनी राम का सँगे सबका के कन्फ्युजिया देई। ओकरा में जन नेता बने क कूल्हि लच्छन बा। राम बचावसु एह देश के! ••

गीत

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

झरे हरदम अनासो नयनवाँ,
अकेली रात भारी लागे।
लगे छूटिहें अचानक भवनवाँ
अकेली रात भारी लागे।

उभ–चुभ होखे मन, डूबे उतराये,
कुछ बा ना आपन, सब कहे के कहाये,
आवे अँखियों ना कवनो सपनवाँ,
अकेली रात भारी लागे।

छिपि–छिपि पनिया में, हुटुके मछरिया,
ओसहीं वेकल मन, सूझे ना कगरिया,
होई प्रान के बुझात बा हरनवाँ,
अकेली रात भारी लागे।

कउवन के काँव–काँव, होला चहुँओर,
फेंकरे सियार–कुक्कुर रोवे होत भोर,
पीर उठे जाने कवना करनवाँ
अकेली रात भारी लागे।

xh0&ih0& e§hVkj] cfy;k

यात्रा–वृत

सिंगापुर में कुल बढ़ियें नइखे

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय विश्व भोजपुरी सम्मेलन)

हमनी के सिंगापुर के समृद्धि, धन, सुव्यवस्था, परिवहन के सुगमता आदि कुल्हि अतिशयोक्तियन के बारे में लगातार बतावल गइल बा। भारत से सिंगापुर जाए वाली फ्लाइट उत्सुक भारतवासियन से भरल रहेले जे सिंगापुर या तऽ छुट्टी मनावे जालन, भा खरीददारी करे। हमनी के कुल्हि नेता अपना शहर के सिंगापुर नियर आदर्श बनावल चाहेलें। हम लगभग तीन साल पहिले, पहिली बार सिंगापुर गइल रहलीं। जवन हम सिंगापुर के बारे में सुनले रहलीं, ऊ हमरा के साँचे लागल। वास्तव में सिंगापुर सपना के शहर नियर लागत रहे। चौड़ा–चौड़ा साफ सड़क, सड़क के दूनो तरफ घास के मैदान अउर पेड़। सुव्यवस्थित यातायात, पर्यावरण के अनुकूल इमारत, शायदे कहीं कचरा, कूड़ा आ धूल होखे, सचहूँ एगो स्वर्ग लेखा रहे। ओह सफर के दौरान हम सिंगापुर बहुत कमे दिन रहलीं, काहें कि हमनी के नॉमपेन्ह, किलींग फिल्ड्स, महान अंगकोर वैट अउर अंगकोर थॉम के दौरो करे के रहे। नॉमपेन्ह बहुत कुछ कलकत्ता नियर लागल, टूटल–फूटल सड़क, टूट–फूट वाला जीर्ण इमारत, भीड़–भाड़ वाला बाजार, खाए–पिए के गंदा अस्वास्थ्यकर दुकान अउर अव्यवस्थित यातायात, लेकिन खिलल–खुलल हँसत–मुस्कुरात लोग। दुर्भाग्य से ई सिंगापुर में ना रहे। सिंगापुर बहुत पश्चिमीकृत लागल, जहाँ बुझाय कि सब केहु कवनो मिशन पर अउर बहुत जल्दी में बा।

हम दुबारा दू हफ्ता खातिर अपना बेटा मयंक आ उनुकर मेहरारू स्नेहा के संगे रहे खातिर 16 अक्टूबर, 2014 के सिंगापुर गइनीं। हमरा लगे बहुत कुछ करे खातिर ना रहे, त हम सिंगापुर घूमे के निर्णय कइनीं। हम सबेरे जल्दी उठे वाला हईं, अउर रोजाना सवेरे टहलला के बहुत धार्मिक भाव से पालन करेनी। मयंक सबेरे जल्दी ऑफिस चल जात रहलन। हमार मेहरारू आ बहू स्नेहा दूनो लोगन के व्यायाम में कवनो रूचि ना रहे, एही से दिन में देर तक ले सुतस लोग। हम हर रोज एक बार में लगभग चार घंटा खातिर टहले जाइल करीं। हम मयंक से कहलीं कि उनुकरा तीन साल सिंगापुर में रहला के दौरान, ऊ जेतना ना देखलें, हम अपना ओह सफर में ढेर सिंगापुर देखलीं अउर ऊ ई बात स्वीकारो कइलन। मयंक वैली पार्क में एगो सझिया मलिकाँव (सहस्वामित्व) वाला घर में रहत रहलें अउर उनकरा घर के पास से एगो खूबसूरत नहर गुजरे, जवन समुद्र में जाके मिले। ई लगभग 10 किलोमीटर की दूरी तक रहे। रास्ता के किनारे लाइन से सुन्दर खूबसूरत पार्क, मॉल, रेस्तराँ रहे, जवन एकरा के टहले वाला खातिर मजेदार बनावे। एक बार टहलत–टहलत हम घूमे लगलीं अउर 1822 में स्थापित फोर्ट कैनिंग पार्क पहुँचलीं, सँवरल घास के मैदान, दूसर देशन से आइल सदियन पुरान पेड़, आकर्षक लिखल पंक्ति अउर बोर्ड इत्यादि, सिंगापुर के अतीत–सिंगापोरा के अरथवान करत एगो आलीशान, सुव्यवस्थित वानस्पतिक पार्क। 13वीं, 14वीं सदी में लोग भारत से सिंगापुर पहुँचल शुरू कइले। सिकंदर महान के एगो राजसी वंशज त्रिबुआना (त्रिभुवन), जिनकरा के सिंगापुर के स्थापना के श्रेय दिहल जाला अउर जे 1299 से प्रारंभ कइके 48 बरिस ले राज कइलें, से शुरू करत, उनकर पुत्र पिक्रम वीर द्वारा आगे ले जाइल गइल, ओकरा बार उनुकर पुत्र राणा विक्रम, फिर पंदुका श्री महाराज द्वारा अउर अंततः सुल्तान इस्कंदर शाह, जिनकर शासन काल खाली तीन बरिस रहला के नाते कम रहे। सभे शुरूआती पाँचों राजा, जे सिंगापुर पर राज कइलें, उनुकर नाम भारतीय रहे। ईस्ट इंडिया कंपनी 1819 में सिंगापुर द्वीप में एगो व्यापार केंद्र के स्थापना कइलस। ई अपना विभिन्न परियोजना के पूर्ति खातिर तमिलनाडु अउर बंगाल से भारी संख्या में गिरमिटिया मजदूर ले आइल। एह लोगन के जीवन बड़ा कष्टप्रद रहे। एह लोगन से अपराधी जइसन व्यवहार कइल जाव। अउर बहुते जोखिम वाला काम जबरदस्ती गुलाम नियर करावल जाव। ओह लोगन के वापस अपना देश लौटला के कवनो आशा ना रहे। ओमे से कई गो खराब अउर क्रूर व्यवहार कइला के वजह से मर गइलें। ऊ लोग सिंगापुर के असली निर्माता रहे। कई बरिस बाद, ओह लोगन के वंशज में से कुछ प्रभावशाली अउर समृद्ध हो गइल बाड़न। आज उहाँ के लघु भारत पर भारतीय मूल के लोगने के प्रभुत्व बा, अधिकतर तमिल लोगन के पासे ऊ सब कुछ बा, जवन भारत में कवनो व्यक्ति के मिलेला। ई भारत के बाजार के प्रतिरूप नियर लागेला।

हम भारतीय मूल के एगो आदमी से मिललीं, जे फोर्ट कैनिंग पार्क में बागवानी के काम खातिर नियुक्त कइल गइल रहल। वास्तव में पार्क में सभे श्रमिक दक्षिण एशियाई रहलें। हम ओकरा वेतन के बारे में ओकरा से पूछलीं, ऊ बतवलस कि ओकरा के हर महीना 750 डॉलर (1 डॉलर = रू. 50), अउरी आवागमन, आवास दिहल जाला। आगे जाँच–पड़ताल कइला पर ऊ कहलस कि पाँच गो अउर आदमी ओकरा संगे एगो छोट कमरा में साझा करेलें। ओह कमरा में कवनो बॉथरूम (शौचालय) नइखे। उहन लोगन के जवन खाना दिहल जाला, ऊ एकदम स्वादहीन अउर पोषक तत्व से हीन होला। ओकर वेतन हमरा के एकदम अविश्वसनीय ढंग से कम लागल, काहें कि हम खुदे कुछ दिन पहिले रू.25 प्रति केला, रू.225 प्रति किलो प्याज अउर रू.500 प्रति किलो भिंडी खरीदले रहलीं। न्यूनतम बस के किराया 1.30 डॉलर यानी रू.65 रहऽ, एही से सिंगापुर बस यात्रा खातिर सायद विश्व में

बाकिर उन्हुके प्रसिद्धि पूरबी गीतन के बेताज बादशाहे का रूप में मिलल। कोलकाता, बनारस, मुजफ्फरपुर के नामी–गिरामी तवायफ उन्हुका के आपन गुरू मानत रहली सऽ आ ताजिनिगी उनकर रचल गीत गवली स। एक तरफ उन्हुका हरमुनिया, तबला, पखावज, मृदंग, बाँसुरी जइसन अनगिनत बाद्ययंत्रन पर अधिकार रहे, त दोसरा ओर ठुमरी, टप्पा, ग़ज़ल, कजरी, दादरा, खेमटा वगैरह राग–रागिनियनों पर महारत हासिल रहे। इहे ओजह बा कि उन्हुकर हरेक रचना संगीतात्मकता से ओतप्रोत होत रहली स, जवन सहजे जन–जन के कंठहार बनि जात रहली स। उन्हुका पूरबी गीतन में त रोमानियत आ वियोग के मर्मस्पर्शी छटा देखते बनत बा।

'अँगुरी में डँसले बिया नागिनिया रे', ए ननदी दियरा जरा दे', 'सासु मोरा मारे राम बाँस के छिउँकिया', 'ए ननदिया मोरी रे', 'सुसुकत पनिया के जाय', 'पानी भरे जात रहीं पकवा इनरवा', बनवारी हो, लागि गइले ठग–बटमार', 'आधी–आधी रतिया के पिहिके पपिहरा', 'बैरिनिया भइली ना, मोरा अँखिया के निनिया बैरिनिया भइली ना', 'पिया मोरा गइले सखि पूरबी बनिजिया, से देके गइले ना, एगो सुगना खेलवना, से देके गइले ना...' जइसन अनगिनत गीत पथरो दिल वालन के मोम–अस पघिलावे के सामरथ राखत बाड़न स। बुझिला ढेलाबाई आ बाकी तवायफन के बाथा–कथा से उन्हुका अइसन गीत रचे के प्रेरना मिलल होई। सही माने में ऊ नारी–मन के कुशल चितेरा रहलन।

महेन्दर मिसिर जियतार गीतन का जरिए कपोल कल्पना के जगहा खुरदुरा जथारथ के बानी देले रहलन। जब उन्हुकर भरोसेमंद नोकरे गोपीचंद्र उन्हुकरा साथे दगाबाजी कइले रहे त उन्हुका आँतर से मरमभेदी गीत गूँजल रहे

'पाकल–पाकल पानवा खियवले गोपीचनवा
पिरितिया लगा के ना
मोहे भेजले जेहलखनवाँ रे
पिरितिया लगा के ना!'

बाकिर मिसिर जी के सोहबत से तुकबंदी करेवाला गोपीचंद अपना हाजिरजबाबी के परिचय देत बोलल रहे :

नोटवा जे छापि–छापि गिनिया भँजवलऽ,
ए महेन्दर मिसिर
ब्रिटिश के कइलऽ हलकान, ए महेन्दर मिसिर
सगरे जहनवाँ में कइलऽ बड़ा नाम,
ए महेन्दर मिसिर
पड़ल बा पुलिसवा से काम, ए महेन्दर मिसिर!'

बाकिर ऊ अइसन काहें कइले रहलन? अपना देशभक्ति आ राष्ट्रीयता के खुलासा करत मिसिरजी अपना एगो गीत में लिखलहूँ रहलन :

'हमरा नीको ना लागे राम, गोरन के करनी।
रुपया ले गइले, पइसा ले गइले,
ले गइले सब गिन्नी
ओकरा बदला में दे गइले ढल्ली के दुअन्नी
हमरा नीको ना लागे राम, गोरन के करनी।'

ओइसे त महेन्दर मिसिर के गीत जन–जन के जबान आ लोकस्वर में आजुओ मौजूद बाड़न स, बाकिर सौभाग से उन्हुका चुनिन्दा गीतन के संग्रह 'कविवर महेन्दर मिसिर के गीत–संसार' शीर्षक से डॉ. सुरेश कुमार मिश्र के संपादन में अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद्, लखनऊ से सन् 2002 में प्रकाशित भइल रहे। सुरेशे जी के संपादन में मेखला प्रकाशन, दिल्ली से सन् 2012 में एगो अउर किताब 'महेन्द्र मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ' शीर्षक से छपल रहे, जवना में भक्ति, प्रेम, ग़ज़ल आ विविध विषयक् कुल्हि मिलाके 307 गो रचना संकलित बाड़ी स।

महेन्दर मिसिर अपना जिनिगिए में किंवदन्ती बनि गइल रहलन। उन्हुका पर अब ले तीन गो भोजपुरी उपन्यास रचा चुकल बाड़न स – 'फुलसुँघी' (पाण्डेय कपिल), 'महेन्दर मिसिर' (रामनाथ पाण्डेय), 'पूरबी के धाह' (जौहर शफियावादी) बाकिर उन्हुका कृतित्व के सार्थक मूल्यांकन अबहुँओं शेष बा। एह दिसाई 'महेन्दर मिसिर : विविध आयाम', 'महेन्दर मिसिर : भोजपुरी गीतकार' के मार्फत ठोस शुरूआत हो चुकल बा।

महेन्दर मिसिर साढ़े साठ साल के उमिर में हलिवन्त सहायक– ढेलाबाई का कोठी में बनल शिव–मंदिर में 26 अक्टूबर, 1946 के आखिरी साँस ले ले रहलन, बाकिर पूरबी के ऊ अनमोल रतन लोककंठ से फूटि के जन–जन के मन–परान के हरदम झंकृत करत रही। लोकधुन पूरबी में रचल उन्हुकर अमर गीत लोक–साहित्य के अमूल्य निधि बाड़न स।

पूरबी के पुरोधा :

हिंदी आ भोजपुरी में एके सँगे सिरिजना करेवाला द्विज महेन्द्र आ महेन्दर मिसिर में महेन्दर मिसिर एही से बाजी मारि ले गइलन कि बकौल मैथिल कोकिल विद्यापति– 'देसिल बयना सब जन मिट्ठ!' महन्दरो मिसिर के अपना महतारी भासा के ताकत के बखूबी एहसास रहे। तबे नूं ऊ लोक सं बहुत किछु लिहलन आ 'त्वदीयम् वस्तु गोविन्दः...' लेखा लोक के रंजित करत अइसन लवटवलन कि सउँसे भोजपुरी लोक सुखद अचरज में डूबि गइल। एगे सँगें लोकरंजक कवियो, त तमाम राग–रागिनी, लोकधुन

में पारंगत गायको। भगती भाव में डूबल रामायणी आ कीरतनकारो, त सफल कथावाचको। बाकिर पूरबी गीतन के प्रणेता ओह सभ पर भारी परि गइल आ जिनिगिए में ऊ पूरबी के पुरोधा मानल जाए लगलन।

भोजपुरी के आदिकवि कबीर के भासा के हालाँकि 'पंचमेल खिचड़ी' कहल जाला, बाकिर ऊ खुदे कबूलले रहलन– 'भासा हमरी पूरबी, हमको लखे न कोय/ हमको तो सोई लखे, जे धुर पुरबिया होय।' दरअसल ई उत्तर भारत के पूर्वांचल के भासा भोजपुरिए ह, जवना के कबीर पूरबी कहले रहलन। पूरबी में भोजपुरी अंचल के सुख–दुख के संवेदनात्मक अभिव्यक्ति मिलेला। एह हल्का में रोजगार के साधन आ उद्योग–धंधा के अभाव के कारन रोजी–रोटी के जोगाड़ में कमाए खातिर पूरब माने कोलकाता के रुख करे के परत रहे। बस, चंद रोज खातिर मरद–मेहरारू के साथ। फेरु नई–नवेली दुलहिन के रोवत–कलपत छोड़िके नवहन के 'पूरब' जाए के लचारी। संजोग आ वियोग के लोकरंजक छटा त पूरबी गीतन में परिलक्षित होला। ओइसे भोजपुरी इलाका में एह किसिम के पारम्परिक गीत झूमर, जँतसार वगैरह पहिलहीं से गावल जात रहे, बाकिर महेन्दर मिसिर लोकप्रिय लोकधुनन में सिंगारपरक संजोग–वियोग के अइसन चटक आ भाव भरल गीत रचलन कि लोकमानस ओह गीतन के दीवाना हो गइल आ उन्हुका के पूरबी के प्रवर्त्तक मानल जाए लागल। ऊ तमाम लोकधुन के साधि के परम्परा आ आधुनिकता का बीचे अइसन सामंजस्य स्थापित कइलन कि धुन आउर गीतन के ताजगी सुननिहारन के अभिभूत कऽ दिहलस।

दरबारी संस्कृति में अपना गायकी का जरिए शोहरत बिटोरे वाला महेन्दर मिसिर राग–रागनियन आ लोकधुनन पर सिद्धहस्तता हासिल कऽ लेले रहलन। साज–बाज पर त उन्हुकर एकाधिकार रहबे कइल। बाकिर उन्हुका पूरबी गीतन–धुनन के अमरता में चंद मशहूर गायिका–नर्तकियनों के अहम् भूमिका रहे, जिन्हनीं का बीचे रहिके, जिन्हनीं खातिर ऊ गीतन के रचना आउर गायन कइले रहलन। उन्हुका खातिर ओह नामी–गिरामी गायिका लोग के भूमिका ठीक ओइसहीं रहे, जइसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र खातिर बंगाल के नामचीन गायिका मल्लिका–माधवी के आ महाकवि जयशंकर प्रसाद खातिर काशी के नामी गायिका सिद्धेश्वरी बाई के। बेशक, मिसिर जी का भावुक कवि के ढेलाबाई के काँट–कूस भरल जिनिगी के लोर भिंजल दरदीली दास्तान से ओइसन मरमस्पर्शी गीत रचे के प्रेरना मिलल होई।

गाँव से परदेस जात खा नवही मरद खूब वादा कइले रहे, बाकिर उहाँ गइला का बाद एगो पातियो ना पठवलस। नायिका के अपना आँख के नींन आ पपीहा के सुर दुसमन नियर लागत बा। हिया में हूक जगावे वाली कोइलर से सवतिया डाह होत बा। एगो पूरबी में विरहिन के वेदना के बानी देत मिसिर जी के पाँती देखीं :

'आधी–आधी रतिया के पिहिके पपिहरा,
से बैरिनिया भइली ना
मोरा अँखिया के रे निंनिया से बैरिनिया भइली ना
पिया कलकतिया घरे भेजे नाहीं पतिया,?
से सवतिया भइली ना,
कुहु–कुहु कुहुके कोइलिया,
से सवतिया भइली ना।'

नवोढ़ा अपना दुलारी ननद से दिल के बात बतावत बाड़ी। उन्हुका अपना आँतर के पीर जेठ के खरउरिया दुपहरिया में खाली गोड़े चलला लेखा बुझात बिया। असह बाथा–कथा के का कतहीं अंतो बा? ननद से बतिआवत पूरबी के शुरुआत किछु एह तरी होत बा :

'जेठ–बइसखवा के तलफी भुभुरिया,
ए ननदिया मोरि रे
चलत मतें पउआँ पिराय, ए ननदिया मोरि रे
अपने ना अइलन पिया भेजे ना सनेसवा,
ए ननदिया मोरि रे
भेजि देले डोलिया–कँहार, ए ननदिया मोरि रे!'

एगो गीत में गाँव छोड़त खा पति पत्नी के मन बहलावे का गरज से एगो सुग्गा देत बा। ऊ सुग्गे सनेसवाहक के भूमिका निबाहत बा आ गँवई पत्नी के बदहाली के बयान परदेसी बालम का लगे जाके करत बा :

'पिया मोरा गइले रामा पूरबी बनिजिया,
से देके गइले ना
एगो सुगना खेलवना, से देके गइले ना
उड़त–उड़त सुगना गइले कलकतवा,
से जाके बइठे ना
ओही सामीजी के पगिया, से जाके बइठे ना
पगरी उतारि सामी जाँघे बइठवले,
से कहऽ सुगना ना
मोर धनी के कुसलिया, से कहऽ सुगना ना!'

किछु गीतन में उलाहना के सुरो मुखरित भइल बा। कन्हैया का सँगें गोपियन के शाश्वत नेह–छोह आ बिछुड़न के बानी देत ई पाँती का मरम के छुअला बेगर रहि सकेले? कान्हा, तूँ ई का कइलऽ?

'साँवरी सुरतिया तोहरो आँखि से ना उतरे,
कान्हा ई का कइलऽ
रहि–रहि जिउआ घबड़ाय, कान्हा ई का कइलऽ
कहत महेन्दर, कान्हा, सुधियो ना लिहलऽ,
कान्हा ई का कइलऽ

तहरा बिना जियलो ना जाय,
कान्हा ई का कइलऽ।'

संयोग श्रृंगार के चित्रण में खूब रमल बिया। बाकिर रीतिकाल के

अधिका समाज के उपेक्षित आउर दबाइल–कचराइल लोग गावल। गणिका से लेके मजदूर तक। नाचवालन से लेके हरवाह–चरवाह ले। सामंती संस्कार में पलला–बढ़ला के बावजूद करोड़न लोग देसे में, सात समुन्दर पारो जाके गावल' :

'माया के नगरिया में लागल बा बजरिया,
ए सोहागिन सुनऽ
चीजुवा बिकाला अनमोल, ए सोहागिन सुनऽ!'

प्रखर नवही लेखक अविनाश नागदंश, महेन्दर मिसिर के पूरबी धुने के 'बटोहिया', 'फिरंगिया' आउर 'विदेसिया' के प्रस्थान–बिन्दु मानत बाड़न। उन्हुकर पाँती गौरतलब बा– 'मिसिर बाबा लोकगायन के समूची मार्मिकता, सरसता से सुसज्जित लोकप्रिय पूरबी धुन के सिरिजना कइले रहलन। जवन पाँख लागते देस के सबसे बड़ भाषा, देसकाल के सीमा–रेखा के लाँघत सात समुन्दर पार जाके भी अपार लोकप्रियता हासिल कइलस। ई ओही पूरबी धुन के प्रसाद ह, जवना के ग्रहण क के बाबू रघुवीर नारायण 'बटोहिया', प्राचार्य मनोरंजन 'फिरंगिया' आ जनकवि भिखारी ठाकुर 'बिदेसिया' के रचिके भोजपुरी साहित्याकाश के अतना चमकदार नक्षत्र बनि सकलन।'

इहे ओजह बा कि परिपाटी आ लोक से अरजल गीत–संगीत के अनवरत साधना से महेन्दर मिसिर जवन नायाब धुन तइयार कइलन, ऊ उन्हुकर आ खाली उन्हुके मौलिक धुन होके रहि गइल। आजु उन्हुका के ओह धरोहर पूरबी के जब जनक, प्रवर्त्तक भा पुरोधा कहल जाला, त एह कथन में कतहीं से अतिशयोक्ति ना, उन्हुका साधना का प्रति मान–सम्मान के भावे परिलक्षित होला। उन्हुका रचनात्मकता के पड़ताल करत वरिष्ठ कथाकार–समालोचक डॉ0 जवाहर सिंह बिलकुल सटीक आ ठीक लिखले बाड़न– 'ऊ अपना कविता आ गीत से भोजपुरी भाषा के एगो मानक रूप बनवलन। उनकर रचना ना सिरिफ भोजपुरी लोकसंस्कृति, लोकचेतना, लोकमानस, लोकभाषा आउर लोकमुहावरन में रचल–बसल रहे, बलुक ऊ खुद भी गीत आ लोकसंस्कार के मरम के पूरी तरह पहिचानत रहन। उनका गीतन में शब्द के रुक्खड़पन हृदय के रस में घुलिके संगीत के लयकारी में बदल जाला आ राग–रागिनी के कल–कल, छल–छल प्रवाह में कजरी आउर पूरबी में ढल जाला। मिसिर जी भोजपुरी भाषा के नया संस्कार, शब्द के कोमलता आउर ध्वनि–संगीत के मधुरता देले रहन।' ••

■ 'kdqryk Hkou] 1 hrk'kj.k ysu] eBkiqj] iVuk 800001

नवका जुग के नया रीत बा

✍ शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी'

का बोवले का पवले बाबू
का पोसली का पवली माई
बेटा बीबी–बच्चा लेके
दूर शहर में मउज करे।
बूढ़ मतारी–बाप गाँव में
खइला–पियला बिना मरे!!
नवका जुग के इहे रीत बा
बूढ़ मतारी–बाप तीत बा
का दुनियाँ दरखास करे
बेटा जब उपहास करे?
बेटा के बस एकहीं उत्तर
'आवे के फुर्सत नइखे'
पोता–पोती देखे खातिर
नित दादी के लोर झरे!
कर्जा ले ले, बबुआ पढ़ले
मरि मरि कर्जा बाप भरे
अंडा जस जेकरा के सेवले
ऊ छाती पर मूंग दरे
बबुआ चाभसु मुर्गा–मुसल्लम
मातु–पिता के आँत जरे!

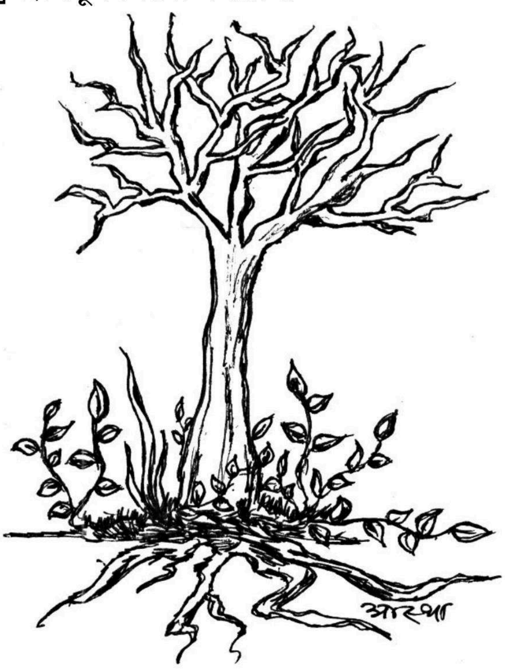

■ ulydBige dkyksuh] pqukjkM] cjbZ;k] okjk.klh lk&5

आकलन–मूल्यांकन–2

भोजपुरी संस्कृति के विभूति : भिखारी ठाकुर

तैयब हुसैन पीड़ित

आलेख के शीर्षक में 'संस्कृति' शब्द आइल बा। 'संस्कृति' संस्कार से बनल बा जेकर शाब्दिक अर्थ होला – 'सुधारल'। 'संस्कार' शब्द में 'सम' उपसर्ग आ 'कृ' धातु पावल जाले। 'संस्कृति' में ईहे 'सम' उपसर्ग आ 'कृ' धातु के योग बा, जवन संस्कृत भाषा के देन हऽ।

आज के परिभाषा में जो व्यापक नजरिया से देखल जाव त 'संस्कृति' का अन्तर्गत खान–पान, रहन–सहन, पहिनावा–ओढ़ावा से लेके भाषा आ कलात्मक अभिव्यक्ति सबकुछ समाइल बा। एह दृष्टि से भोजपुरी संस्कृति का बारे में जॉर्ज ग्रियर्सन से लेके राहुल सांकृत्यायन, प्रि0 मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, प्राचार्य रामेश्वर सिंह काश्यप आदि लोग अपना गद्य आ पद्य में बहुत कुछ कह आइल बाड़न। खोजे वाला त ऋग्वेद में 'इमे भोजाः' शब्द के अर्थ लगावत भोजपुरिया संस्कृति के संबंध मुनि विश्वामित्र के जजमान से जोड़ेलन, जेकर तप–भूमि भोजपुरी क्षेत्र 'बक्सर' मानल जाला।

जार्ज ग्रियर्सन भारत के विकास में भोजपुरियन के महत्वपूर्ण योगदान मानत लिखले बाड़न कि देश खातिर जवन काम बंगाली लोग अपना कलम से कइलन, उहे काम भोजपुरिया लोग अपना लाठी से गइले बा।

सचहूँ जो इतिहास देखल जाय त सिपाही का रूप में भोजपुरिया जवान मुगलन से लेके अँगरेजन के पहिला पसंद रहत रहे। कहलो गइल बा–'माथ प पगड़ी, हाथ में लट्ठ, तब देखऽ भोजपुरिया ठट्ठ।'

अब एह क्रम में जो भिखारी ठाकुर के मूल्यांकन कइल जाव त सचहूँ समाज–सुधार खातिर उनकर कइल कोसिस चउतरफा आ सांगोपांग गुने बहुते महत्वपूर्ण सिद्ध होई। उनका के 'भोजपुरी संस्कृति के महान विभूति' कहल उचित कहाई।

भिखारी के लेके कुछ बात एह संदर्भ में आलेख के शीर्षक के सबूत बनी। भिखारी ठाकुर के भोजपुरी के शेक्सपियर कहल जाला। जइसे शेक्सपियर अंग्रेजी के नाटककार भा कवि दूनों रहस, उनकर अंग्रेजी भाषा पर अधिकार मानल जाला, भोजपुरी भाषा में भिखारी ठाकुर के स्थिति कुछ अइसने बा। ऊ कवि बाड़न, नाटककार बाड़न, कलाकार बाड़न, समाज–सुधारक बाड़न आ उनकर लिखल भोजपुरी के गिनती आदर्श भोजपुरी भाषा का रूप में कइल जाला।

उनका के जे देखले बा, ऊ बड़–बुजुर्ग बतावेलन कि ऊ पगड़ी बान्हत रहलन। मिरजई पेन्हस, खान–पान, बोलचाल, रहन–सहन सब में भोजपुरिया संस्कार उनका में कूट–कूट के भरल रहे। एही लेखा जवन ऊ रचना क गइल बाड़न भा कला छोड़ गइल बाड़न, ओकरा अध्ययन से जवन बात छनके आई ऊ भोजपुरी–संस्कृति से मेल खाले।

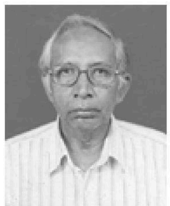

भिखारी ठाकुर के जन्म बिहार में सारण जिला के, कुतुबपुर दियारा में 18 दिसम्बर 1887 के नाऊ–परिवार में भइल रहे। उनका जनम के एक साल पहिले ले उनकर जनम 'भूईं' तब के आरा जिला में पड़त रहे। भिखारी के जनम–काल में ई गंगा के कटान से सारण जिला में चल आइल। मतलब ई कि भिखारी ठाकुर खाँटी भोजपुरिया–क्षेत्र आरा–छपरा के मनई रहलन। जाति विशेष गुने उनका ऊँच–नीच सब परिवार के मरद–मेहरारू के भीतर–बाहर के, रहन–सहन, सुख–दुख आ संस्कार के नजदीक से पता रहे।

ऊ 1917 से 1962 ई0 तक 29 किताब के रचलन जवना में दर्जन–भर उनकर नाटक बड़ुए। 'बिदेसिया', 'बेटी–बेचवा', 'भाई–विरोध', 'पियवा निसइल', 'विधवा–विलाप' आ 'गबरघिचोर' लेके त उनकर नाम उच्च कोटि के रंगकर्मियन में गिनल जाला।

फुटकर रचना या तऽ भक्ति से संबंधित बा ना त समाज–सुधार से संबंधित। 10 जुलाई 1971 के उनकर इहलीला समाप्त भइल। दिन शनिचर रहे, जवना के उनका एगो कविता के पंक्ति से मिलान कके उनकर भविष्यवाणी बतावल जाला– 'कहत भिखारी, शनिचर के दिन होई, सँउसे गाँव के बटोर।'

उनकर सब नाटक मंगलाचरण से शुरू होत रहे, जवना में समाज में लोकप्रिय देवी–देवता– राम, कृष्ण, शिव, सीता, पार्वती, गंगा, अम्बिका भवानी, पियनिया के देवी साथे स्थानीय सती–स्थान आ पीर के मजार के स्तुति पावल जाला। अइसन बहुदेववादी भइल आम भोजपुरिया लोग के भक्ति–भावना के संस्कृति ह। भक्ति के गीत बहुधा मधुरोपासना शैली में बा। जइसे– राम के विवाह–प्रसंग, शिव के विवाह–प्रसंग आ कृष्ण के सखियन साथे रास रचावल आदि। ई प्रभाव साइत ऊ अपना आस–पास में भइल भक्त नियन– रामाजी (सिवान), रूपकलाजी (सारण) आ सखी सम्प्रदाय के लक्ष्मी सखी, कामता सखी (गोपालगंज) से लेले रहस, जे ईश्वर के पति आ दुलहा मान के आराधना करसु।

अपना नाटकन के सूत्रधारीय में जवन समाज – सुधार के बात ऊ हरिकीर्तन–शैली में करत रहस, ऊहो भोजपुरिया–समाज के आम लोगन में घर कर रहल बुराइयन के रोके भा सुधारे के भरसक कोसिस रहे। जइसे– बेटा–बेटी के मतारी–बाप के सेवा करेके चाहीं, औरतन के कपड़ा अइसन पेन्हे के चाहीं, जेह से तन भली–तरी ढँकल रहे। गहना आ नशा के हद से जादे

चाहत ना करे के सीख, बाल–बिआह, बेमेल विआह के मनाही। विधवा के समस्या का प्रति सहानुभूति आ टूटत संयुक्त परिवार के कुफल आदि।

एह क्रम में त कुछ बात ओही घरी अइसन सामने ले आइल बाड़न जवन आजुओ प्रासंगिक बा। जइसे–अकसरुआ बूढ़ लोग खातिर बूढ़शाला के निर्माण के जरूरत आ लमहर प्रवास के दौरान घरे रह गइल औरतन के चारित्रिक विचलन जायज आ एह परिस्थिति में पैदा भइल नाजायज संतान (गबरघिचोर) के सामाजिक मान्यता आ ओह पर मतारी के सर्वाधिकार माने के बात आदि।

हालांकि एह दू–तीन मुद्दा के अलावा प्रगतिशील सोच के उनकर सीमा प्रचलित भोजपुरिया संस्कृति में बन्हाइल लउकता। 'बेटी–बेचवा' नाटक के बेटी अपना दादा के उमिर के पति साथे रहला का इन्कार में भाग के नइहर आ जातिया, बाप–मतारी के रो–रोके आपन दुखड़ा सुनावत अइसन शादी खातिर धिक्कारतिया, बाकी गँवई संस्कार गुने ओही पति का साथे जाये के मजबूर बिया। ऊ विधवा हो जातिया तऽ 'विधवा–विलाप' नाटक में भतीजा ओकर जायदाद हड़पे का नीयत से, घर से निकाल दे ताड़न सऽ, बाकी बंगाल में भइल सुधारवादी आन्दोलन के बादो भिखारी अपना एह नाटक में विधवा के बिआह नइखन करा पावत। ऊ साधु के आश्रम में रह के 'ए मोर कन्हैया, अँगनवा में आ जा' भजन करे में शेष जीवन काट दे तिया। थोड़ा में ई भिखारी खातिर भोजपुरी संस्कृति के बंधन बा कि उनकर जादेतर नाटक या त हृदय–परिवर्तन में समाप्त होता या ईश्वर–भक्ति करत समाज के यथास्थिति में।

उनकर रचना–काल भारत में अंग्रेजीराज के गुलामी से लेके आजाद भारत तक बा। बाकी कतहूँ ऊ आजादी के आन्दोलन के बात अपना नाटक में नइखन ले आ पावत। हँ, देशकाल के प्रभाव में जवन उनका आस–पास के भोजपुरिया समाज के तत्कालीन हालत रहे, ऊहे प्रकारान्तर से उनका नाटकन के विषय बनल बा।

आखियान करे के बात बा कि इन्हन में ऊ अनजाने बदलत समाज के तस्वीर खींचत बाड़न बाकी अपना समझ के सीमा गुने; जाने में असमर्थ बाड़न कि अइसन होत काहें बा?

एक–दू उदाहरण दिहल इहाँ जरूरी बुझाता। ऊ 'जय हिंद खबर' किताब में ब्राह्मणन से नाऊ के काम के तुलना करत पारिश्रमिक कम मिलला पर अँगुरी उठावत बाड़न। उनका एह बहाने समाज में प्रचलित वर्ग–व्यवस्थो सालत बा। ई समाज में पैदा हो रहल दलित–चेतना का रूप में आज रेघियावल जाला। अइसहीं उनकर सुप्रसिद्ध नाटक 'बिदेसिया' में बिदेसी जब कलकत्ता चल जा ताड़न आ उहाँ के कवनो चालू–पुर्जा औरत का साथे बियाह कके रहे लागत बाड़न त एह लमहर वियोग के दुख नायक के बियहुती मेहर 'प्यारी सुन्दरी' रो–रो के काटतिया– 'पिया गइलन कलकतवा ए सजनी! गोड़वा में जूता नइखे–मथवा प छातवा ए सजनी! कइसे चलिहें रहतवा ए सजनी!....' उपाय का रूप में ऊ बहरा जात बटोही से अपना पति के पता लगा के भेजे के बिनती करताड़ी बस – 'पिया मोर गइले परदेस, ए बटोही भइया!...'

बाकी जब बटोही के समुझवला पर बिदेसी गाँवे लवट आवताड़न त उनकर दोसरकी शहरूआ मेहरि रोवे–गावे का जगहा बुद्धि से काम लेतिया आ पूछत–पाछत उनका गाँव पहुँच के सौतिन का रूप में परिवार में आपनो अधिकार जमा ले तिया। ई आज के शब्दन में 'नारी–सशक्तीकरण' कहाई, जवन ओही घरी समाज में शहरी हवा आ कमोबेश नारी–शिक्षा से शुरू हो गइल रहे। सामाजिक आ आर्थिक कारणन में जमीन के बन्दोबढ़ती में जमीदार अंगरेजन के बिचवलिया बन के एगो नजदीक के शोसक अउर पैदा हो गइल रहस। ओने भोजपुरी क्षेत्र में कल–कारखाना आ जमीन के कमी से बहरा गइल गबरू जवानन के नियति बनल जात रहे। अंग्रेज के चल्हांकी से कुटीर उद्योग के खतम भइलो एगो कारण रहे। 'बिदेसिया' नाटक एही कुल बदलाव के दस्तावेज हऽ।

अइसहीं भिखारी के क्षेत्र में नदियन के अधिकता गुने बाढ़–सुखार, मेला लागल आ धर्म के आड़ में ठगी उनका 'गंगा–स्नान' नाटक हऽ जेह में धर्म के रूढ़िवादिता आ वाह्याडम्बर का प्रति भिखारी, कबीर लेखा चेतावत मिलिहें।

ई परिवार के बहरवाँसू भइला के फल हऽ कि 'भाई–विरोध' नाटक में संयुक्त परिवार टूट जाता। भाई–भाई अलग हो जा ताड़न। बिजली, आटा–चक्की आ हैंड पाइप अइला से अब केहू के समाज के सहायता के परवाह नइखे। इहाँ तक ले कि लाउडस्पीकर से गवनइयो होखे लागल बा। परिवार में खून–खराबा आ थाना–पुलिस के नउबत पहुँच जाता। हत्या, गोली–बनूक से होता। ई 'एकला चलो' के भावना आ मशीनीकरण भोजपुरी संस्कृति में नया बात रहे, बाकी पूँजीवादी–व्यवस्था के आवश्यक फल जवना के भिखारी के नाहियो चाह के नाटक में देखावे के पड़त बा। ई उनका कला पर भोजपुरिया संस्कृति के विपरीत पड़ल देशकाल के प्रभाव हऽ, परिवर्तन के प्रमाणो।

भिखारी ठाकुर के आपन सीमा रहे। ऊ जादे

पढ़ल–लिखल ना रहस। टोइ–टो के रामायण बाँचस। कैथी लिपि में लिख पावस, बाकी ई उनका अन्दर के सजग कलाकार आ सचेत संस्कृति–कर्मी के कमाल रहे, जे ऊ बहरा गइलन त पहिले त रामलीला, रासलीला आ 'जात्रा' देख के अपनो नाच–मंडली का माध्यम से आस–पास के ग्रामीण लोगन का आगे परोसे लगलन। आम भोजपुरिया के परिचित लोकधुन, लोक–नृत्य आ लोकनाट्य–शैली अपनाइ के अपना कला के लोग के सुख–दुख से अइसे जोड़लन कि उनका पात्रन से दर्शकन के साधारणीकरण होखे लागल। बिना ताम–झाम के उनका नाटक दर्शकन से जुड़ के, उनका बीच से शुरू होके, गाहे–बेगाहे दर्शको [redacted]

कमी आ नाटक करे खातिर आर्थिक अभाव के रोना रोवे वालन के गाल पर उनकर रंगकर्म जइसे एगो जोरदार तमाचा रहे। ऊ नाटक का दौरान कवनो ताजा घटल घटना पर आसानी से व्यंग्य कऽ लेसु। जइसे रेल–भाड़ा बढ़ला पर बिदेसिया में बटोही के टिप्पणी भा कुल्हरिया महाराज के नौकरन का प्रति क्रूरता पर मंचे पर उनकर सुनावत ई फैसला कि– 'दामुल–फाँसी ना, एह बदमास के कुल्हरिया महाराज किहाँ रख दऽ अपने ठीक हो जाई।'

बंगाल के अकाल के प्रमाण लेके बंगाल में जब 'जात्रा' में बदलाव आइल आ 'ईप्टा' के गठन भइल त भिखारी ऊ एहू समसामयिकता के अपना नाटकन [redacted]

जिला बनारस, भीखमपुर,
चकिया तहसील हमार बाय!

ई कविता 'बावला' के 'रहनी' आ 'कहनी' बतावे खातिर बकौल खुद मुकम्मल बिया। सुख–सुविधा आ बहुत का कामना से दूर, अपना साधारन 'रहनी' में खुश आ सन्तुष्ट। गिरहस्थ–सन्त अइसने न होला। घर–परिवार–समाज आ देश पर, अपने से जोड़ि के कवनो बात कहे के सुभाव उनके 'लोक' के कवि बनवलस। उनका स्वर में 'लोक' क स्वर रहे। प्रेम, भक्ति, प्रकृति, हर्ष–उल्लास, करुना, वेदना, क्षोभ से भरल आ समाजिक विसंगतियन से उभरल सवालन क जबाव खोजत, बावला के अपना राम पर पूरा भरोस रहे कि ऊ अन्याय ना करिहें–

जबरा के आगे मुँहदुबरा न बोलि पावै,
अबरा समझ केहु घसियो ना डालै।
लोफरा लबरिया से, छुरिया कटरिया से,
डरहीं के मारै केहू जीभ न निकालै।
देसवा क नेतवा अनेतवा न रोक पावै
खेतवा कियरिया पसेनवाँ से पालैं।
टुअरा क नाईं पनकुँवरा पुकार करै :
अस क अन्हेर बा, करेजवा में सालें।
XXX XXX XXX XXX
कुस कास मड़ई पतउवा क बरतन,
दुअरे लगल पतलोइया क टाटी
हम आदिवासिया जँगलवा में घर–बार,
बँहियाँ के बल बा हमार परिपाटी
केहू क नगरिया सहरिया चुहुलगुल
नीक रहा हमरी पहड़िया क घाटी
तोहरे विकास कै न आस विस्वास हमैं,
बायँ भगवान ऊ हमार दिन काटी।

बीस–पचीस बरिस पहिले कवनो कवि सम्मेलन में हमसे पहिले–पहिल मिलल रहले 'बावला' त उनकर लयनू–लपेटल सुभाव हमके अनासो अपना ओर खिंचले रहे। परिचय में बतवले कि पद्माकर चौबे, चन्द्रशेखर मिश्र, जगदीशचंद मिश्र, अमरनाथ मिश्र आ हरिराम जी जइसन कुछ अउर बड़कवन का सरहले–बढ़वले हमहूँ सुरसती माई का दुअरा पहुँचलीं। 'बबुआ बोलतऽ ना! केहो देलस तोहैं बनवास' गीत हम रेडियो से सुनले रहलीं आ ओह गीत के रचवइया हमरा सोझहीं रहे। लोक कंठ में रचल–बसल भाव–भगति आ नेह–छोह के मरम छूवे वाली रागिनी 'बावला' का गीतन में रहे। राम–बनवास के अपना सरेहि में उतार के छोहाये–मोहाये वाला कवि बावले हो सकत रहलन –

काँट–कूस क डगर, गोड़वा फूलन ले सुघर
कवन बावला पठवलैं रहिराँव बबुआ
कहवाँ जइबा, बतावा केहि ठाँव बबुआ?
XXX XXX XXX XXX XXX
जइबा कहाँ बाबू बनवाँ में,
हम तोहरा के राखब नयनवाँ में!
XXX XXX XXX XXX XXX
हम बनवासी कोल–भील क बेटउवा
रउवा राजाबाबू हउवा!
बनवासी हमलोग, नाहीं सेवा करै जोग
लोग बावला भइल बा
राउर देख के सुभउवा
रउवा राजा बाबू हउवा!
XXX XXX XXX XXX XXX
केकर करेजवा बजर कै सँवारल
कवने अहेरिया क अइला तूँ मारल
हमरा से कहि देता नाँव
ए बबुआ, आज रहि जा हमरे गाँव।

अइसन मीठ प्रेम–भगति में पगल निहोरा गीत बाबले कवि गा सकत रहले। बन का दुर्गम राह में सुकुवार राम–लछुमन आ लाजवन्ती सलोनी बहुअरि सीता के देखि के गँवई गँवार क मनोदशा का होई? मयगर–मोहगर 'बावला' अपना मन का आँखी देखले आ अनुभव कइले, तबे न उनका मुँह से ई लोक–स्वर फूटल –

इन्हैं पठउलैं नीक न कइलैं संग नारि सुकुमारी
नइहर में बिटिया गढ़ुवालिन,
बिपत परल ससुरारी।
पति के संग धरम निरबाहैं,
कउनो सुविधा नहिं चाहैं;
डाहै बदे कउनो बिजुरी गिरउलै होइहैं
छूरा कवनो निरमोहिया चलवले होइहैं!
बोली में मिसिरी घोरल बा रंग रूप अनदेखा
धन्य भूमि जहँ परत बा
इनकै पुन्य–चरन कै रेखा
रोइ–रोइ कहैं गँवार गँवारी,
धीरज धरैं धरम–धुर–धारी
आरी अपनै प' बावला चलवले होइहैं।

लोकज्ञान वाचिके–परंपरा से होला। लोक में बढ़ल–पनपल रामकथा सुनि के पोढ़ भइल 'बावला' खातिर रामचरित मानस सबसे जाँचल–परखल पोथी बनल। ज्ञानी–गुनी क संगति मिलल त अउर निखरि के सहजे 'लोकस्वर' बनि गइल।

कई बरिस पहिले, एक बेर बावला से नागरी नाटक मंडली बनारस में, एगो सरकारी आयोजन का भोजपुरी कवि सम्मेलन में हमार फेर भेंट भइल। बे

कलफ के मिमोराइल–चिंगुराइल कुर्त्ता, ठेहुना पर ले चढ़ल मोटिया धोती, कान्ह पर गाँधी आश्रम के झोरा आ अँगौछा। कविताई का बाद राती खा विश्राम गृह में सँगहीं रुकलन। हाल–चाल पुछला प' जवन बतवलन ओके सुनि के मन बहुत बिकल भइल। हमके उनकर सुनावल ऊ सवैया इयाद पड़ल, जवन ऊ ओह दिन मंच पर सुनवले रहलन। नया साल पर सगरी लोगन के योग–क्षेम आ बढ़न्ती क शुभकामना रहे ओमे। हम सोचलीं, गाँव–देहात के कष्ट आ विषमता में जिये–जूझे वाला एह कवि के कइसन अमृत–उद्‌गार रहे, समाज आ देश खातिर –

"प्रेम सद्‌भाव रहे, सबसे लगाव रहै,
कहीं न दुराव न त कहीं हड़ताल हो।
न्याय हो कचहरी में, पहरी विकास करै,
एकरस डहरी न कहीं, ऊँच–खाल हो
एकता अखंडता क दियरी जरत रहे,
पियरी पहिरि के सिवान खुशहाल हो
देश क विकास होय, गली–गली रास होय,
एहि विधि शुभ शुभ, शुभ नया साल हो।"

समता, न्याय, एकता, सद्‌भाव, समरसता के कामना करे वाला अइसन कवि, प्रेम आ विनय के अभरन पहिरे वाला निस्पृह बावले हो सकत रहलन; जेकरा भीतर मानव–गरिमा–संवेदना आ सद्‌विचार जीयत रहे। सँचहूँ ऊ अपना लोक परंपरा के साधक माटी के कवि रहलन।

'बावला' जी हमरा घरे (बलिया) दू बेर अइलन। दुख–सुख बतियवला का बाद, आपन प्रिय कवितो सुनवलन। हमरा कहला पर 'पाती' खातिर कुछ व्यंग्य रचनो दिहलन; बाकिर जवन आनन्द आ तृप्ति उनका लोकधुन वाली भक्तिपरक, मौलिक उद्‌भावना करत, किसनऊ कविताई में मिलल ओकर हम बखान ना कर सकीं। ऊ सुनावत खा हमेशा हमके गोसाईं जी का कथा–प्रसंगन में एगो नये–भाव–भूइं का मर्मी–काव्य के आस्वाद करवलन।

बावला जी लोगन के भलहीं बउराह दिहाती बुझासु बाकिर चल्हाँक रहलन। अपना काम भर क चल्हाँकी उनका रहे त रहे, दोसरो के राह देखावे क रहे। 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' का मुम्बई अधिवेशन में हम जब ट्रेन से स्टेशन पर उतरलीं त हरान–परेसान रहलीं– गंतव्य क पता–ठेकान वाली चिट्ठिये घरे छूटि गइल रहे। सँगे गइल दू जाना हमरे भरोस प' रहे लोग। हम भकुवाइल–अउँजाइल डँउँड़ियाते रहनी कि 'बावला' जी मिल गइले। पता वाली चिट्ठी उनका लगे रहे, बतवले कि उनकर लड़िका/भतीजा मुम्बइये बा। ऊ बुझला ओकरे इन्तजारी में रहले। हम कहलीं कि हमरे सँगे चलीं, फोन क के लड़िकवा के ओइजे बोलाइ लिहल जाई। अइसहूँ लड़िकवा दू घंटा बादे आइत। बावला जी मान गइले। उनहीं का चिट्ठी का आधार पर हमनी का ठहरे वाला जगह– स्टेडियम में पहुँचलीं जा। हमके जौन कमरा मिलल ओही में उनहूँ के बइठवलीं। ओहू जा उनका सँगे खाली ऊ कान्ह में टाँगल, झोरवे भर सामान रहे। नहाइ–धोइ के जब ऊ आपन फींचल धोती–गमछा जँगला पर पसारे लगलन त केहू हँसत चुटकी लिहल, "बावला जी स्वीमिंग–पूल देखत बाड़न।" लोग हँस पड़ल। दरसल जँगला से स्टेडियम के ऊ स्वीमिंग पूल साफे लउकत रहे, जेमे मरद–मेहरारू अधोवस्त्र में संगहीं नहात पवँरत रहले सऽ। बावला निस्पृह भाव में आके लगे बइठ गइलन। सबका मुसुकी–चुटकी से बेपरवाह। थोड़िकी देरी बाद उनकर लइका आइल आ सँगे लिया गइल। हम ओठँघल सोचत रहलीं, माया नगरी का सगरी माया से परे ओह गँवई कवि का बारे में, उनका सरलता आ सोझबकई का बारे में।

'बावला' जी हमके जब भेंटइलन, एक्के रंग–ढंग, एक्के भेख में। अइसन ना कि गरीबी उनके ना डँसलसि, महँगी उनके ना चँपलसि; अन्याय–अनेति उनके ना भेंटाइल, खराब परिस्थिति उनके ना बेधलसि, बाकिर कुल्हि का बादो ऊ समरस भाव सुभाव में जिये के आदत बना लेले रहलन। सन्तोष आ धीरज उनकर भितरी–बल रहे, ओही बले ऊ विषमता आ गैरबरोबरी से जूझत हर कठिनाई से निबुकि अइलन। सबुरी जिनिगी, विनयी 'रहनी' आ कर्मनिष्ठा उनके हर दुख आ समस्या से उबरे सिखवले रहे। ऊ सरल सहृदय आ सुभाविक कवि रहलन। राजनीति आ गोलबन्दी वाला साहित्यिक–समाज से फरका। उनका कविताई में ओढ़ल क्रांतिकारिता, सतही भावोच्छ्‌वास बनि के नइखे उभरल। बनावटी प्रतिरोधी सुर का जगहा, वेदना आ पीड़ा करुण व्यंग्य का साथे मरम के छुवत मिली। ऊ अपना कविता में विसंगति आ विद्रूपता कहीं संकेत में त कहीं सहजे बतावत–देखावत बाड़न– "हमके बतावा कि चिरइन के जान बदे/भारत के पासे बन्दूक कुल केतना हौ?" अनेति का खिलाफ 'बावला' के प्रतिरोध, 'कवि' का रूप में अतने हो सकत रहे। ऊ संवेदनहीन व्यवस्था का अमानवी व्यवहार पर एसे ज्यादा कहे का स्थिति में ना रहले, काहें कि लोककवि का रूप में, ऊ अपना सीमा के जानत रहलन। ••

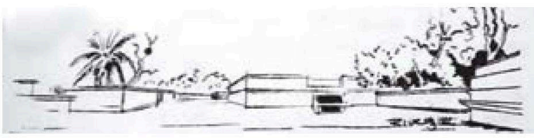

मूल्यांकन

गोरख के गीतन के स्वर

तुषारकान्त उपाध्याय

गीत आ कविता जहाँ जिनगी के परब के संघतिया बनेले, ओहिजे मन से हार रहल बाकि संघर्षशील लोगन के फेर से लड़े खातिर तैयारो करेले। दुनिया भर में गीत जिनगी में फेर से नया जिनगी खोजे के सहारा रहल बा। जब आज के कष्ट आ कायल होखे वाला अन्हार लउकेला त ईहे गीत आ गवनई भोर के किरिन लेखा मन में आस जगावेला।

अब तुलसी के 'मानस' देखी। ई घर घर के सिंगार ह। अपना भीतर के शक्ति के खोज आ सहायक शक्ति के पहचान के संगठित होके कतनो बड़ आ ताकतवर आततायी/राक्षस से लड़ जाये के आह्वान ह मानस। सूर त अपना गीत आ भजन से औरतन के मुकुति के राहि खोल दिहले।

गीत आ कविता अंगेजी औपनिवेशिक सत्ता से लड़े आ लोगन के जगावे के कारगर हथियार बनल। बंकिमचन्द्र के 'बन्दे मातरम' के युद्धघोष के कुछुये बरिस बाद 1911 ई में रघुवीर नारायण के बटोहिया में भोजपुरी के राष्ट्रगीत उभरल ''सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देशवा से/मोर प्राण बसे हिमखोह रे बटोहिया''/इ गीत भोजपुरी के सीवान के फलाँगत संघर्ष और जिजीविषा के स्वर बन गइल रहे। गुलामी आ शोषण, ओकर कारण अउरी ओकरा के पोसे वाला तत्व से लड़हीं खातिर महेंद्र मिश्र, रामविचार पाण्डेय, रामेश्वर सिंह 'कश्यप', धरीक्षण मिश्र, मोती बी ए, महेंद्र गोस्वामी लेखा कवि आ गीतकार लोग मन से हार रहल जन–समुदाय के लुकार धरा दिहले। विजेंद्र अनिल, राम जियावन दास 'बावला', गोरख पाण्डेय त अपना अनुभव आ साँच के उपज से गीतन से अइसन आन्ही पैदा कइले की 'हाथ लहरावत मुर्दो जुलूस में खाड हो जाये।' गोरख सबसे अलग रहले। लिखले त हिंदियो में, बाकि भोजपुरी गीतन से उ जनमानस के आवाज बन गइले। किसान–मजदूर आंदोलन में अपना के झोंकि के व्यवस्था में जरि से बदलाव खातिर जनता के तैयार करे के बीड़ा उठवले। उनकर गीत भोजपुरी का दायरा के बाहर हरेक दबल कुचलल आ शोषित वर्ग के क्रांति के आवाज बन गइल। सीधे करेजा में उतर जाये वाला भाव आ कहे का सहज अंदाज उनका गीतन के देश के आक्रोश और दमन के विरोध का स्वर बना दिहलस। कुल्हि मेहनत मजूरी के बादो कमी आ तकलीफ झेले खातिर अभिशप्त जीवन के तस्वीर से उनकर गीत 'मेहनत के बारहमासा' के आरम्भ होता :

हमरे सुगना के ले गइल बुखार सजना
नाही दवा–दारू नाहीं उपचार सजना
तोर मेहनत–मजूरी सब बेकार सजना
अस जिनगी जियल धिरकार सजना।

ई घोर निराशा ''निराला'' के अवसाद् आ क्षोभ से मिलल दिखत बा। निरालोजी लिखले रहले 'हो इसी कर्म पर वज्रपात, यदि धर्म रहे नत सदा माथ/इस पथ पर मेरे कार्य सकल। हों भ्रष्ट शीत के से शतदल। (सरोज स्मृति) त 'पूस की रात' नियन हार के मानि लेबे के बेचारगी पैदा करावत बा।

गोरख रोवे आ निराश होके बइठे वाला कवि ना रहले। ऊ एही निराशा के ताकत के ताकत बनवले संगठित होके संघर्ष करे खातिर सब के जगावे के काम कइले।

बीतता अन्हरिया के जमनवा हो
संघतिया सबके जगा द
नेहिया के बन्हल परनवा जगा द
अँसुआ में डुबल सपनवा जगा द
मुकुति के मिलल बयनवा
संघतिया सबके जगा द।

गोरख अपना गीतन के माध्यम से प्रजातंत्र के नंगापन अउर विभिन्न बुर्जुवा आंदोलनन के आडम्बर आ प्रपंच के खुल के सामने रखलन। तथाकथित समाजवादी नेतागण जइसे–जइसे जाति–पांति का ज्वर के उभार के जनता के भावना से विश्वासघात कइल लोग अपना आ अपने परिवार की समृद्धि आ सुरक्षा जिनका खातिर समाजिक उत्थान के प्रतिमान बन गइल, ओकर असलियत गोरख का प्रसिद्ध गीत समाजवाद में बड़ी बेबाकी से खुलत बा।

समाजवाद बबुआ, धीरे धीरे आई
समाजवाद उनके, धीरे धीरे आई
हाथी से आई/घोड़ा से आई
अंग्रेजी बाजा बजाई, समाजवाद........।
कांग्रेस से आई/जनता से आई
झंडा के बदली हो जाई, समाजवाद .....
वादा ले आई/लबादा ले आई
जनता के कुर्सी बनाई, समाजवाद.......
महंगी ले आई/गरीबी ले आई
केतनो मजूरी कमाई, समाजवाद......
धीरे–धीरे आई/ चुपे चुपे आई
आंखिया पर परदा लगाई, समाजवाद ......।

गोरख के आँख आवेवाला दिनन में लउके वाला समाजवाद के नंगा रूप देखत रहे। रजवाड़न के लजा देबेवाला समाजवादी नेता लोगन के जनम दिन आ विवाह उत्सव के फिजूलखर्ची ओह समाज आ जनता के साथ धोखा ह जवन ई लोग के जनता अपना बीच के आदमी जान के चुनलस। ई लोग बुझिला बाकी सब पार्टी आ नेता से आगे निकल के खाली अपना घरे परिवार सीवान में कैद हो गइल। अब जनता का मोहभंग के स्थिति हो गइल बा। जनता समझ रहल बिया की खाली झंडा के बदली भइल बा। कि जनता खुदे अइसन नेतन के कुर्सी बन गइल बिया।

'जब वोट मांगे अइले' में झूठ आ छलावा परदा से बाहर निकल आइल बा आ ईहो साँच कि सब ढकोसला नेता लोगन के खाली अपने उत्थान खातिर बा। अब अपनही खाड़ होके ई किला के ढहावे क समय आ गइल बा।

'पहिले पहिले जब वोट मांगे अइले त कहे लगले ना तोहके खेतवा दियइबो ओमे फसली उगइबो....।

सोंचलीं के अब तक जेके जेके चुनलीं
हम के बनावे सब काठ के पुतरिया......
अब हम इहो किलवा ढहइबो त एही हाथे ना
तोहके मटिया मिलइबो
ललका झंड फहरइबो
त एहि हाथे ना।

त जब कबो शोषण के विरोध करे के जनता क्रुद्ध होई, शोषक–दमनकारी ताकतन से लोहा लेबे आ आत्मोत्सर्ग खातिर तैयार होई, त ओकरा गीत में, गोरख के गीत शामिल होई। भले लोग उनकर नाम ना जानसु। ••

■ esa jkW, cq kdky kuh iVuk&1

लघुकथा

उपकार के मजूरी

राजगुप्त

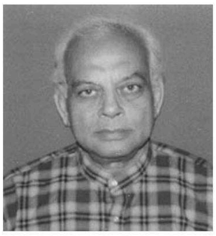

जेठ के महीना, गर्मी के दिन, तिजहरिया के बेरा रहे। नीमि का फेड़ का तरे छँहात हवा खात रहलीं। अतने में देखत हईं कि पुरुब का ओरि से करिया बदरी मेड़रात आवता। बुझि गइलीं कि आन्ही आई।

हरदम करिया बदरी देखि के बगइचा में दउड़ि जात रहलीं। आजु असकत लागल। अबे आन्ही आवे में देरी बा। सोचते भर में जवन बवन्डर अचकले उठल कि बुढ़िया आन्ही झूठ हो गइल। दउरी लेके बगइचा का ओरि लंक लगा के दउड़ि गइली। बगइचा कोस भर दूर रहे। पहुँचत–पहुँचत आन्ही अचकले पटाइ गइल। मय टोला परोसा पहिलहीं से लपटल रहे। हमरा पहुँचे से पहिलहीं मय लोग आम बीनि ले ले रहे। बाजी–बाजी जाना खाँची दउरी में आम लेके लवटत रहे। हम खाली हाथ कइसे लवटीं। बगइचा चउगठे लगली। गढ़हा गुड़ुही पतईन में टकटोरे लगली। लुकाइल तोपाइल खोजला पर दस–पाँच आम भेंटाइल। सीतुही के पानी से भला पियास जाई। दउरी में आम ऊँट के मुँह में जीरा अस लागल। पछतात लेके चललीं। अपना असकत पर खीस बरल।

आगा बढ़त एगो बूढ़ लउकली। लगे जाके नीक से देखलीं। चतुरी चाची रहली। खाँची में आम लेके घर के सवाँग के अगोरत रहली। चतुरी चाची हमरे टोला के रहली। बहुत मशहूर रहली। एह से कि उनका अँगना में फरेन बईर के फेड रहे। खूबे मीठ रहे। छेदही पइसा ले के जाईं त बइर अँजुरी से नापि के देसु बाकिर घलुआ मँगला पर हाथ मिमोरि के भगा देसु। हमरी इहाँ हाथ लपक ना चाहीं। अइसहीं करे के होखी त हमरी इहाँ अइबे जनि करिहे। पुरनका सज्जी भुला के मने मन सोचली। चतुरी चाची केतना फरहर बाड़ी। जवानन के कान काटत बाड़ी। तनिकी सा आन्ही में खाँची भर आम बीनि ले ले बाड़ी। साँझि होता। अबले घर से केहू आइल ना। आपन बाँहि मिमोरल भुला के चतुरी चाची से कहलीं, "इया, अब कुछुवे देर में राति हो जाई। सिआर बोले लगिहें स। कहऽ त तोहार खाँची घर तकले चोहँपा दीं।"

इया कहली, "जुग जुग जिअऽ ए बबुआ। कुबेरा तोहरा के देखि के मन में आस बन्हल हऽ। मुँह के बाति छीनि लिहलऽ। चोहँपा दे नाती। बड़ी पुन्न होई।"

हम इया के भारी खाँची कपार पर उठवलीं। ताहि ऊपर आपन खाली ध' के घरे चलि दिहलीं। घरे पहुँचला पर इया कहली, "तोर खाँची खलिहे बा। हमरा में से थोड़े तूँहू लेले।" हम इया के जबाब देत कहलीं, "उपकार के मजूरी ना होला ईया।"

ईया तकते रहि गइली। ••

■ jkt 1 kMh ?kj] pkSd dVjk] cfy;k

कहानी

थाती

नीरज सिंह

पुरनका शिवाला के पुजारी पं. गोबिन मिसिर के पराती के राग पहिले उठे कि मियाँ टोली के मुरुगवन के बांग पहिले सुनाय– इ केहू ना कहि सकत रहे। ई दुनो बात होखे आ ओकरा संगे–संगे सउँसे जगदीशपुर में जगरम हो जाय। बाग–बगइचन में चिरई चहचहाय लागँसन। कुइयाँ–इनार प पनिहारिन एकट्ठा होके रहि–रहि के खिलखिलाये लागँस, बड़का पोखरा प नहाये–धोआये खातिर मरद–मेहरारू पहुँचे लागस, मंदिरन के घंटी रहि–रहि के बाजे लागे आ चारो ओर रास्ता बहराये लागे। थोरही देर बाद आगे–आगे गरदन में बान्हल घंटिन के मूड़ी झांट–झांट के बजावत बैल आ ओकनी के पाछे कान्ही पर हर आ जुआठ लेले हरवाह लोग। कहे वाला कहत रहे कि एने पंडीजी आ मोलवी साहेब लोग के दुआरी प पढ़निहार जुटस आ ओने कई गो हरवाह लोग कट्ठा–दुकट्ठा जोत–दोखार देत रहे। कहे के माने ई कि सुरुज भगवान के मुसकइला के बाद जवन ललकी किरिनिया फूटँऽ सऽ आ छछाइल–धधाइल धरती माई के कोरा में समाये खातिर दउड़ँ सऽ, ओकनी के जमीन प उतरत–उतरत जगदीशपुर में जिनगी के कार–बार शुरू हो जात रहे।

ओहू दिन त ओइसहीं जागल रहे जगदीशपुर बाकिर देखते–देखते कोहराम मच गइल रहे। जेकरा के देखऽ, उहे गिरत भहरात बाबू के महलिया के ओरे दौड़ लगवले बा। अनजान आदमी केहू के रोक के पूछहूँ के कोसिस करे तऽ ऊ एको सबद बोले के तइयार ना। बतइबो करे त कइसे, अपने एह उड़त खबर के सच्चाई परख लेबे तब नूं केहू के कुछ बताओ। जेकरा के देखऽ ऊहे– 'का भईल? ए भइयवा?... कुछ बताव ना इयार!' कइले बा आ ओकर गोड़ अपने–आप बाबू के महल के ओरे घूम जात बा। देखते–देखते नगर के खास आ आम–सभ केहुए महल के भीरी एकट्ठा हो गइल। पहिले सउँसे दालान भरल, ओकरा बाद बरामदा, फेरु सामने के सहन आ ओकरा बाद गते–गते सउँसे मैदान। अइसन जुटान केहू के दरवाजा प कबहूँ–कबहूँ होखेला। जइसे छोटका बबुआ के तिलका के दिन भइल रहे भा बड़का मलिकार के इंतकाल के दिन भइल रहे, भा उनका सराध आ बबुआन के पगड़ी बन्हइला के दिन भइल रहे। ओह सभ मौकन प लोग चाहे त दुखी रहे भा सुखी रहे। अइसन बिचबिचवा हालत कबहीं ना रहे। जइसे–जइसे भीतर से छन–छन के खबर बहरियात रहे, लोगन के चेहरा प अचरज के रेघारी खिंचात जात रहे। सभ केहू के मन में एके सवाल– ई कइसे भइल भगवान? महीनवन से जेकर सांस टँगाइल रहे, कंठ रुन्हाइल रहे, बउसाव पटाइल रहे, अन्न छूट गइल रहे आ जेकरा जिनिगी के गाड़ी कसहूँ–कसहूँ दूध, फल के रस आ पानी के सहारे खिंचात रहे, ऊ सकलनाथो कुँवर रानी बोले लगली, लोग के बोला–बोला के हाल–चाल पूछे लगली– 'इ कइसे भइल दइब?.... धन्न हवऽ तूं भगवान....' 'जेहि के किरपा पंगु गिरि लंघै, अंधन के पुनि देत दिखाई.... धन्न हवऽ.... धन्न हवऽ तूँ ए अन्तरजामी!'

'रानी ठीक हो गइली, रानी बोले–बतियावे लगली' –खबर जेने–जेने पहुँचल, खुशी के लहर दउड़ गइल। परजा–पवनी, नोकर–चाकर, गोतिया–देयाद, हितई–नतई गते–गते बाढ़ के पानी जइसन पसर गइल खबर। लोग–बाग दउड़ परल सुनतहीं। भीठहाँ से, दलीपपुर से, नोखा, ससराँव– सगरो से। अइसन अनरीछ पहिले केहू सुनलहीं ना रहे। सतखंडा महल के चउथका अँगनई में रहत रही रानी। पँचवा खंड में पतोह आ ओकरा पीछे वाला खंड में नतिन पतोह– गिद्धौर राज के बेटी, जवना के बियाहे खातिर गइल बरिआत के खिस्सा आजु ले सै–पचास कोस में सुनल–सुनावल जाला। पतोह–नतिन पतोह आ गोतिया–देआद के मेहरारून के झुंड घेरले रहे, रानी के आ ऊ आदमिन के मुँह चीन्ह–'चीन्ह के कमजोर आवाज में ओकरा से हाल–चाल पूछस– 'ठीक से बाड़ू नूं हीरामन बो?... रउवाँ कहवाँ रहत बानी ए पड़िताइन जी? एने कवनो ओह–पता ना मिलल हा राउर!... आ ए चनरिकाबो बहिनी! मलिकार ठीक बाड़न नूं तोहार?।' जेकर नाँव पुकारस रानी, ऊ धन्न–धन्न हो जाव– 'राज के बड़की मलिकाइन आ अइसन नेह–छोह हमरा से!' ओकर आँख लोरा जाय आ ऊ मुँह फेर के लुगा के अंचरा से आपन आँख पोंछे लागे। एही बीच पाछे से कवनो बड़–बूढ़ चिहुँके– 'तनी अगवा से हटऽ बहिनी लोग.... कोइर टोली के मेहरारू आइल बाड़ी स....'

कोइरटोली के बाद हज्जम टोली, अहीर टोली, दुसाध टोली, सोनर टोली, कमकर टोली, चमरटोली– चारो ओर के मेहरारू झुंड बान्हि के रानी के देख गइली स। रानी के देख के, उनका से असीस मांग के लउटत मेहरारून के मुँह से बस भगवान से एके पराथना– 'हे दइब! जइसे हमरा रानी के बोली–बानी लवटवल, उनकर इयाद लवटवलऽ तसहीं कुछ बरिस खातिर उनुकर जिनिगियो लवटा दऽ। बड़ा हुलास रहल हा उनुकरा परनाती खेलावे के.... उहो पूरा हो जाइत त सुखी मन से तहरा लोके जइती हे प्रभु!.... अब जवन बा, सभ तहरे हाथ में बा.... दरबार से त उनका आस उम्मीद ना पहिले रहे, ना आगे रहे के उम्मीद बा....।'

मेहरारून के भीड़ छँटल त मरदन के ठेलमठेल शुरू भइल बुझात रहे। जइसे रानी के गोड़ जे छू लेलस, ओकर बैकुंठ में पक्का–पकी जगहा लिखा गइल– रेहन ना, बैनामा। आ ओतने ना, ओइजाँ से लवटला के बाद

का मरद आ का मेहरारू– 'सभ केहुए नहा–धोआ के हाथ में भर लोटा जल लेके दरबार माने बाबू माने कुँवरा दादा के बनवावल नयका शिव मंदिर में उमड़ गइल– जय हो भोलेनाथ!... जय हो भोले भंडारी... दरबार के सुख–चैन पहिलहीं अस आबाद कर दऽ प्रभु!... आ खाली ओहिजे ना, बलुक मइयाथान, ठाकुरबाड़ी जइसन सभ देवस्थानन में भगवान के गुन–गान होखे लागल– हरे राम, हरे राम, राम राम हरे–हरे....।' दुघरी दिन चढ़त–चढ़त गढ़ प' के हाल देखला प' बुझात रहे कि जइसे थोरिका देर पहिले कवनो फउजी लश्कर रात्रि विसराम क के आपन रहता ध' लेहले होखे भा गंगिया माई के बाढ़ उतरला का बाद जगह–जगह ओकरा चढ़ती के संगे पहुँचल चीज–बतुस रह गइल होखे।

अपना दलान के बरामदा के पुरबारी हिस्सा में भोरहीं से बइठल बाबू साहब अबहियों आवे–जाये वाला लोगन से पहिलही जइसन बात–बतकही करत रहस। लोग उनुकरा से तरह–तरह के बात कहस, परतुत देस आ जेकर जइसन हैसियत रहे, ओकरे हिसाब से आ अपना तरीका से बबुआन के परबोधे के कोसिस करस। उहाँ के जेकर बात नीमन लागे, मूंड़ी हिला के ओकरा से सहमति जताईं आ नीमन ना लागे त अनसइला अस दोसरा तरफ देखे लागीं। एही बीचे रह–रह के खवास–खवासिन आवँऽ सऽ आ बइठल लोगन से जल–जलखई खातिर पूछ जा सन। जेकरा जरूरत होखे, ऊ परात में धइल पानी के चुक्कड़ आ मिसिरी की ढेला उठा लेबे, खाये, पानी पीये आ बरामदा से उतर के एगो कोना में खाली चुक्कड़ फेंक देबे। ओहिजा बटोराइल चुक्कड़न के टाल के देख के पता चलत रहे कि आजु कइसन जमवड़ा जुटल रहल हा गढ़ पऽ।

जहवाँ बबुआन बइठल रहलन, ओहिजा से थोरिका दूर हट के पच्छिम ओरिया के देवाल से सटा के बिछावल दरी प' बइठल पुरोहित जी, जोतसी जी आ भंडारी जी, बुढ़वा बैद जी से तरह–तरह के सवाल करत रहे आ उहाँ के बहुत गम्भीरता से ओह लोग के जबाब देत रहीं। ओइसे भीतर से खुस सभ केहुए रहे, बाकिर कुछ–कुछ ससंकितो रहे। दिक्कत इ रहे कि अन्दर घुमड़त असली सवाल के ओठ प' ले आवे के कवनो रहता केहू के ना सूझत रहे। खाली एने–ओने के बतकही होत रहे। तबहिएँ पुरोहित जी के मन में कवनो बात आइल आ उनुकर आँख चमक उठल– सुनीं सभे! हम एगो बात जानल चाहत बानीं। रउआ सभे गुनी आदमी बानी– एह से समझ–बूझ के बताईं जा– रानी अब ठीक हो जइहें नूं? राउर जोतिस का कहत बा जोतिसी जी? आ रउआ त भोरहीं रानी के नाड़ी जँचले रहनी हँ बैद जी– का बुझाता?

पुरोहित जी के सवाल सुनके बैद जी के आँख पताल ढूँढे लागल आ जोतिसी जी आसमान निहारे लगलन। जब ओह लोग के जबाब देबे में देर भइल त उहे सवाल भंडारी जी माने मुंसी भभीखन लाल दोहरवले– का बुझाता बाबा? कुछ बताईं जा?

भंडारी जी के सवाल सुनि के दुनो आदमी धरती प' लवट आइल लोग आ एक–दोसरा के देखे लागल। आखिर में जोतिसिये जी के जबान खुलल– हमार कवनो विद्या काम नइखे करत ए भाई लोग।... ओह कोठरिया में अकेले बइठके हम रानी के गरहे–नछत्तर बिचारत रहनी हँ। रातिये के सोचले रही कि अब हिम्मत क के बबुआन से कहब।... कहब कि जे भइल, सेकरा के अब भुला दीहीं। काहे कि रानी के अरदोआय अब खतम बोलऽता।... कब साँस टूट जाई, कहल ना जा सके। एह से रउओ उनुकरा भीरी घरी–दु घरी बइठ के संतोष कऽ लीहीं... बाकिर भोरे–भोरे जवन सुनाइल हा आ ओकरा बाद अपना आँख से रानी के देखला के बाद से हमार अकिले काम नइखे करत....।

'इहे हाल त हमरो बा ए महाराज।' बैद जी कहलन– 'हम तऽ आजुओ रानी के नाड़ी देखनी हँ त पहिले से कुछ खास अन्तर ना लागल हा। हँ, नाड़ी तनिका शांत जरूर भइल बिया, जवना से रानी क हँफ नइखे उठत आ बोले–बतिआवे में कष्ट नइखे होखत। बाकिर हतना दिन के कंठरुन्ही के बाद अइसे एक ब एक टनमना गइला के बाद त हमरो बुझात नइखे कुछ। .... का कहीं हम?'

'जब रउआ सभे लेखा पचास कोस में मानिन्द गुनी लोग के इ हाल बा त अब अलगा से कहे के त कुछुओ रहिये नइखे जात बाकिर हमरा अब कुछ दोसरे बुझात बा', पुरोहित जी कहलन– 'आ हम हिम्मत क के कहतानी कि रानी अब जादे देर ले ना ठहरिहन। उनकर इ टनमनाइल, इ बोलल–बतिआवल– सभ चला–चली के बेरा के चीज ह। जइसे बुतइला के पहिले दियरी के लौ खूब तेज हो जाला, वइसहीं सरीर तेयागे के पहिले जीवो चरफराये लागेला। हमनी के भले इ बात ना बुझाये बाकिर अनपढ़–गँवार कहाये वाला लोग–बाग सभ चीज बूझेला।... अँसहीं का मेला बटोरा गइल हा? जे आइल हा, ऊ इहे सोच के आइल हा कि चलऽ, चलाचली के बेरा में रानी के असिरबाद ले लिआव!'

– 'अइसन बात त बबुआन से रउए कहीं ना? बैद जी, जोतिसी जी आ भंडारी जी एके साथे बोल पड़लन– मिरित भुवन तेयागे वाला जीव से कइसन द्वेस आ कइसन दुसमनी? चल के एक बेर उनुकर हाल–चाल पूछ लेतन।'

त अब कुछ राहता प' आइल बा तबीयत...।'

– 'आहि दादा, बैद जी हड़बड़ा गइलन– अतना सब कुछ हो गइल छोटका बबुआ जी आ हमरा के कवनो खबर ना? एही नीमन–बाउर खातिर नूं हम भोरहीं से अगोर के बइठल बानीं इहवाँ...' कहत–कहत ऊ आपन झोरा उठवलन आ सीधे अन्दर दरबार में।

– आ एगो बात अउरू महाराज जी, अमर सिंह पुरोहित जी से कहलन– हमरा ठीक से बुझात नइखे, का कइल जाव!... मलिकाइन के हालत–देखके लोग–बाग फेरू एगो बाछी छुआवे के सलाह देबे लागल हा त ऊहाँ के हाथ के इसारा से मना कर दिहनी हाँ आ कुछ देर ले आसमान ताकत रह गइनी हाँ। एही बीच में ऊहाँ के आँख से लोर ढरक गइल हा। हमरा घरे के अपना अंचरा से मलिकाइन के आँख पोंछे लगली हा त ऊ उनुकर हाथ ध' लेहली हा आ कहली हा – 'अब इ कुल्हि छोड़ द दुलहिन... बहुत दिन कइलू लोग, अब हमरा के जाये दऽ! जिनिगी के दाँव हम हार गइनी... अब आना–'आनी के कुछ नइखे।... उनका के बोलवा द तनिका....'

– कहनी हाँ– ई बात रानी अपना मुंह से कहनी हाँ छोटका बबुआ? पुरोहित जी आ जोतिसी जी– दुनो आदमी चिहा गइल लोग– त अब देर कवना बात के जजमान! बबुआन के जल्दी ले चलल जाव मलिकाइन के सोझा...

– 'इहे त हमरा बुझात नइखे महाराज।... ऊ जइहन?'

– 'जइबे करिहन। काहे नाऽ जइहन?'

– 'अकेले जइहन?'

– अब अकेले–दुकेले के बात कहाँ रह गइल छोटका बबुआ? बोलवला के मतलबे इहे बा कि राजा आवस– अकेले आवस चाहे जइसे आवस।.... रउआ ढेर सोचीं मत, पुरोहित जी कहलन– हम कहत बानी नूं बबुआन से...

बबुआन से कहाइल त उहो अचकचा गइलन– 'हमरा लागता कि तहरा लोग के ऊहाँ के बात सुने–समझे में कवनो गलतफहमी भइल बा... हमरा विसवास नइखे होत कि ऊहाँ के अइसन बात कहले होखब...'

– कवनो गलती नइखे भइल भइया, अमर सिंह कहलन– ऊहाँ के अपना मुंह से कहनी हाँ आ हम अपना कान से सुननी हाँ, तबहिए हम रउरा भीरी आवे के हिम्मत कइनी हाँ। ... ऊहो होत ना रहे एह से महाराज जी लोगन से सलाह कइला के बादे रउरा से निहोरा करत बानीं।... चलीं, हमार बात मानी भइया.... जल्दी से चलीं।

– छोटका बबुआ के बात प' भरोसा करीं बबुआन, पुरोहित जी कहलन– देर कइला से कवनो फायदा नइखे।

– त ठीक बा अमर, बबुआन कहलन– "तू जल्दी से फिटिन भेज के नयका बंगला प' से मेहरून्निया के बोलवा लऽ ऊहो बेचैने बाड़ी। सबेरे से कई बेर खबर भेजवा चुकली आवे खातिर। हमहीं मना कर देनी हाँ। जा, जल्दी करऽ!"

'अमर सिंह छन भर बबुआन के चेहरा निहरलन, फेरू उनुकर नजर महाराज जी लोग ओरे गइल। आँखिन–आँखिन में तनिका संवाद भइल आ ऊ बरामदा से उतर के सहन प' खाड़ हो गइलन.... "भरत सिंह, जरूरी से फिटिन लेके नयका बंगला प' चल जा आ..."

दिन तीन पहर से अधिका बीत चुकल रहे। सुरुज के ताप में धीरे–धीरे कमी आवे लागल रहे आ ऊ अब रात्रि विसराम के तइयारी में पच्छिम दिशा में तेजी से सरके लागल रहन। जगदीशपुर गढ़ के सामने के मैदान में लोगन के भीड़ त अबहियो रहे बाकिर पहिले जतना ना। दूर–दराज से आइल लोग अपना–अपना घरे लवटे लागल रहन बाकिर खास जगदीशपुर आ आस–पास के लोगन के आवा–जाही अबहियों लागल रहे।

जब नयका बंगला से लवटि के फिटिन आइल त मैदान में तनिका हलचल अस भइल बाकिर राज के सिपाही आ महल के पहरुआ सभ; केहू के भीरी ना ठेके देलन स। घर–परिवार के रहनगर मेहरारुन लेखा सुन्दर, गुलाबी रंग के हल्का जरीदार साड़ी पेन्हले, लिलार प' लाल बिन्दी लगवले आ चांद जइसन दपदपात गोर मुखड़ा प' तनिका घूंघट गिरवले लाम–लहकार,पातर छड़ी जइसन खाड़ मेहरुन्निसा के देख के केहू सपनो में ना सोच सकत रहे कि ऊ कुछ बरीस पहिले ले नाचत–गावत रही। कवनो साज–सिंगार ना कइला के बादो उनकर रूप अपरूप लागत रहे।

मेहरुन्निसा जब सहन में पहुँचली त अमर सिंह उनुकर अगवानी कइलन आ बरामदा के सीढ़ी चढ़त खानी अपने से बबुआन। ओकरा बाद तनिको देर ना भइल। आगे–आगे पुरोहित जी, जोतिसी जी, भंडारी जी आ छोटका बबुआ बाबू अमर सिंह आ ओह लोग के आगे–पीछे बबुआन आ मेहरुन्निसा। रानी के अंगनई में पहुँचला के बादो मेहरुन्निसा के गोड़ तनिका थथमल, बाकिर, उनुकरा कोठरिया में ढुके के त उनका हिम्मते ना पड़ल। उ दुअरिये प' खाढ़ हो गइली। इ देख के रानी के पलंग भीरी पहुँचे–पहुँचे भइल बबुआनो थथम गइलन आ पाछे मुड़ि के आँख के इसारा से उनुकरा के भीतर आवे के कहलन। पता ना कइसे, रानी के बबुआन के धरमसंकट के पता चल गइल। ऊ कहली– 'आवल जाव... हम दुनो आदमी के बोलवनी हाँ...।'

कहानी

गुलेल

विजय शंकर पाण्डेय

पाँच दिन पहिले जब हम महुवारी गाँव आयल रहलीं, तब केतना खुशी–खुशी हमके, कान्ती, अमराजी ओनकर सहेली लोग विदा कइले रहलिन। आज जब हमके आटो के साथे देखिहँ तऽ केतना खुश हो जइहन। ऊ सब तऽ कभी घोरावल छोड़के राबटगंज भी न देखले होइहन। बनारस क हेरिटेज अस्पताल तऽ ओ सभन के सरग के तरह लगी।

चला हो दिवाकर तनी आटो कऽ रफ्तार बढ़ौले चला। देर होत हौ।

लालसा–कान्ती अपने बच्चन के लेके नव बजे से जोहत होइहन। चार दिन पहिले वाले बरसात से लालसा के घरे में पानी भर गइल होई। एगो बूँद बाहर जाये लायक खपड़ा नाहीं रहल। पक्का घर जवन सरकार के पइसा से गाँव परधान बना के देहले बा, ओमा न खिड़की, न दरवाजा, न छत, न जमीन कुछ ना बनल। लालसा बतौलेस कि ओकरे खाता में एक लाख तीस हजार रुपया आयल रहल, सब परधान निकलवा के ले लेहलेस। एतना पर कहेला कि सब पइसा खरच हो गयल। अब फिर सरकार पइसा आगे देही तब बनी।

कान्ती के गंगडीह बन में भीतर जाये के पाँच दिन पहिले जब त्रिपुरारी मिसिर घोरावल ब्लाक के महुवारी गाँव में बैगा बस्ती में गइलन तऽ ओ दिन बैगा लोग बन कऽ देवी बसन्ती देवी कऽ पूजा करत रहलन। मरद मेहरारू सब लोग दारू पी के मस्त रहलन। घूम–घूम के एक दूसरे कऽ हाथ पकड़ के करमा गीत गावत रहलन आ हुडुक के थाप पर ताल मिलावत रहलन।

का बने वारे लेवेरे तितिलिया,
हाथे लिहे गोतिया गुलेल।
बोने–बोने मारेले तितिलिया,
हाथे लिहे गुलेल।
चुरूम–चुरूम लावा रे तितिलिया,
बधन–बधन लावा रे गुलेल।

त्रिपुरारी मिसिर क बाइक जब रुकल तब कान्ती समझ गइलिन कि डाक्टर साहब चन्द्राज क कटल ओठ देखे बदे आयल हयन। कान्ती बइठ के करमा गीत सुनत रहलिन। ओन उहाँ से उठ के चल अइलिन। एक ठे पत्थर क ढोका लिया के रख देहलिन, 'डाक्टर साहब बइठा।'

एकरे पहिले त्रिपुरारी मिसिर अपने गाँव कूड़ी से छोटे के साथे लालसा अउर शान्ती से मिल चुकल रहलन। कान्ती के मालूम रहल कि डाक्टर साहब चन्द्रा क कटल होठ कऽ आपरेशन करावे बदे आयल होइहन।

कान्ती क मुँह लटकल देख के डाक्टर त्रिपुरारी पुछलन कि, "कान्ती तुम कैसी उदास हो?" कान्ती अपने दुःख के छिपा नाहीं पउलिन, कहे लगलिन कि रोज ओन 160)रु. के लकड़ी बन से काट के ले आवेलिन, 80)रु. कऽ खाये के खुराकी अउर 80)रु. लालसा के दारू पिये बदे देलिन। आज ओनके पिये बदे पचास रूपया देहलिन। खुराकी में जियादा खरच हो गयल। एही बात के लेके लालसा ओके मारे हयेन। कान्ती बतौलिन कि कुछ बैगा बजार में जाके मजदूरी करेलन, मुला एन कवनो काम नाहीं करतन।

त्रिपुरारी कान्ती के झोपड़ी में जाके देखलन। ओनके पास न ओढ़ना, न बिछौना, न कपड़ा लत्ता, न बरतन। दू लइका नंग धिड़ंग भुइयाँ सूतल रहलन। परधान के तरफ से बनल कोठारी में कान्ती कऽ मुरगा–मुरगी रहेलन।

ओन लोगन के सरकारी सहायता नाहीं मिलत। केवल मिट्टी क तेल राशन के दुकान से मिल जाला। राशन कुछ नाहीं मिलत। वृद्धा पेंसन, चाहे विधवा पेंसनो नाही मिलत।

कान्ती बतौलिन कि ओनके बिरादरी कऽ लोग कई गाँव में बसल बाड़न। विसाहार, बालपोखर, कोलामी, तिलौली, धरमौली, खण्डेहुल, शिव दुवार, शक्तिनगर, अनपरो में बस गयल हयन। वइसे छतीसगढ़ में भारी संख्या में वैगा लोग हयन।

डॉ0 त्रिपुरारी के कान में ओही घरी बहुत मधुर गीत क आवाज आयल। कान्ती बतौलिन कि मेहरारू सब लचारी गावत हइन।

ताले तलैया बीच पोखरा, ओमिन जल भर जाय।
ओमेन भइया बहिना नहाय,
ओनकर जियरा जुड़ाय।।
हरिअर बाँसे के कमरिया, कामर लचकत जाय।
छोड़ा–छोड़ा हमरी अँचरवा,
अँचरा सोहरत जाय।।

डाक्टर के उहाँ देख के अउर वैगा लोग आ गइलन। कुछ बतवलन कि "ओनके में सात कूरी होला। सातो कूरी कऽ लोग मतंग ऋषि कऽ औलाद हयन।" ओन लोग चमार, मुसहर, कोल, धरकार, खटिक कऽ छूवल पानी नाहीं पियतन। रापटगंज जिला में रजवड़िया, सेवड़िया, ठकुरिया अउर तेगड़िया कूड़ी कऽ लोग रहेलन।

कुछ गबदा लोग भूतो–प्रेत कऽ पूजा करेलन। जियादा लोग शिव भगवान कऽ अउर दुरगा माता कऽ पूजा करेलन। नीम अउर पीपल कऽ पूजा करेलन। नीम में ब्रह्मदेव अउर पीपल में शनि देव का बास मानेलन।

बसन्ती माई के बन कऽ देवी मानेलन। फरवरी महीना में बसन्ती देवी कऽ पूजा करेलन। शिकार क काम आदमी करेलन। बन से सूअर, साम्भर, साह, खरगोश, केकड़ा, हरिनहवा मूस के ज्यादा पसन्द करेलन।

त्रिपुरारी पुछलन कि, "सबसे ताकतवर भोजन किसको मानते हो?"

तब सिधारी घोरिहा कूरा वाले बतौलन कि "तुम रोज एक केकड़ा खाते हो, अउर साँझ को महुवा वाला एक बोतल दारू पियोगे तो तुम्हारा चेहरा लाल टेस हो जाएगा, एक महीना में तुम्हारे पास कोई रोग नहीं रहेगा।"

बात के टारत डा. त्रिपुरारी लालसा कऽ लइका चन्द्राज कऽ कटल ओठ कऽ आपरेशन कराके ठीक करावे कऽ बात कहलन। "एकरे बदे लइका के लेके बनारस चले के पड़ी। भाड़ा, खाना– पीना कऽ सब प्रबन्ध डाक्टर करिहन। ई सब खरचा सरकार द्वारा मिल जाला। बनारस के हेरिटेज अस्पताल में आपरेशन होई। तीसरे दिन घरे आ जइबै। लइका क ओठ सब बच्चन के तरह ठीक हो जाई।"

बैगा लोग जल्दी कोई कऽ बात नाही मनतन। ई लोग कोई पर विश्वास नाहीं करतन। बजार के अदमी के बाहरी दुनियाँ कऽ आदमी समझेलन। एनकर आपन अलग दुनियाँ हौ। ओही में रहल चाहेलन। दूसरे लोग बन से जुड़ल नाहीं चाहतन।

सिधारी बैगा पूछलन कि "डाक्टर साहब आप अउर लोगन क ओठ ठीक कराये हयन कि पहली बार इहाँ आयल हयन। आपके का पड़ल हौ कि एतना दूर से चल के हमरे इहाँ आयल हयन।"

डाक्टर बतौलन कि हम ई धरम क काम करीला। एकरे खातिर हमके सरकारी सहायता क रुपया मिलेला। जापान सरकार के माध्यम से ई योजना भारत सरकार कऽ हौ कि देश में ओठ कटल, तारू कटल होई क बच्चा न रह जाय। "हम अब तक कम से कम दस हजार लइकन कऽ ओठ ठीक कराये होब।" अपने मोबाइल में कैद कुछ ओठ कटल बच्चन कऽ फोटो एन लोगन के देखौलन। जब एतना लोगन क फोटो, सिधानी, लालसा, पारबती, कान्ती, अमरीता, अमराजी देखलिन तब ओनके विश्वास भयल। कान्ती, अपने लइका कऽ ओठ ठीक करावे बदे तइयार भइलिन।

बातचीत के दौरान अमरावती बतौलिन कि ओन लोग जंगल में झुण्ड के साथ जालिन। एक साथ कम से कम तीन चार लोग रहेलिन। जंगल में भालू, चीता, हुँड़ार से भेंट हो जाला। ई लोग पत्थर पर पत्थर जोर से पटक के जानवरन के डेरवा के भगा देलिन। कभी अकेले पड़ जाये पर जानवर जान से मार देलन। बन से ई लोग चिरौंजी, बहेरा, खिरिन, मकोय, बइर, महुवा अइसन फल बीन के ले आवेलिन। करीब–करीब हर वैगा अपने घरे महुवा कऽ दारू बनावेला। मरद–मेहरारू दारू पीयेला। ओन रोज दारू नाहीं पियतिन। त्रिपुरारी देखलन "कुछ नई बहुरिया ठीक–ठाक रहलिन। फिर जाये बदे तइयारी करे के कहि के ऊ त्रिपुरारी मिसिर के विदा कइलिन सब।"

दुसरे दिन, आपरेशन बदे डाक्टर जब बस्ती में पहुँचलन त सन्नाटा देखलन। ई का? हमरे आटो बाइक क अवाज सुनके, हारन देहले पर कोई कान्ती के घरे से नाहीं निकलल। का! कान्ती वने चल गइल का? का सभन क विचार बदल गयल? चन्द्राज कऽ ओठ ठीक करावे कऽ सभन क मन नाहीं बा का? ओ दिन तऽ बहुत समझाये रहलीं, तमाम फोटो दिखाये रहलीं तऽ सब खुशी–खुशी तइयार रहलन। लेकिन का बात हौ? आज कवनो नाहीं दिखात हयन। ऊ मने मन सोचलन।

'कान्ती के लइका के अमराजी लेके आवत हइन। का, हो कान्ती कहाँ हौ?' ऊ पुछलन।

– डाक्टर साहब कान्ती कहाँ बा, अब ए दुनियाँ में।

– का भयल कान्ती के?

बनारस जाये के तइयारी में कान्ती हम लोगन कऽ साथ छोड़ के परसों दिन गंगडोह बन के अन्दर घुस गइल कि भीतर जियादा लकड़ी मिल जाई।

ओकरे ऊपर अकेल पा के भालू पिल पड़ल। इहो खूब लड़ले रहल, ओकरे टंगरी में खून कऽ निशान देखले से ई पता चलत हौ कि इहो लड़ल रहल। जब रात देर तक नाहीं आइल तब ई शंका भयल कि गड़बड़ हौ। रात के खोजले कहीं पता नाहीं चलल।

बिहाने हमार मरद, हम, लालसा, फटीचर, गुलटा सब कोई तीर कमान, गुलेल, टंगारी लेके जंगल में गइली। खोजत खोजत एक खाई में कान्ती गिरल पावल गइल। मुँह नोंचल रहल। हाथे से टंगारी छूट के दूर गिरल रहल। गुलेल कमर में खोंसल रहल।

ए संसार के अब अउर देखल नाहीं चाहत रहल बेचारी। सायद एही से आपन दूनों आँख चींटन के दान दे देले रहल। जवने पेट के भरे बदे एतना बन के भीतर आ गइल रहल, ओके भालू से फरवा देहले रहल।••

ukjk; .kh fogkj] dkyksuh] fprbZiqj] 1 ¼fpjbZiqj½ okjk.klh&5

उपन्यास–अंश

तिसरकी कड़ी

बनचरी

अशोक द्विवेदी

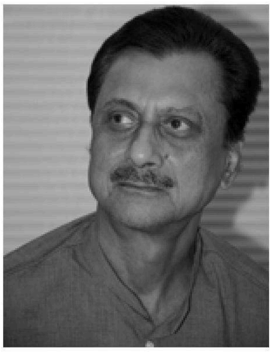

समय बीतत देर ना लागे। साँच कहीं त पाँख फहराइ के उड़त समय–पंछी के बान्ह–बझाइ के रखलो ना जा सके। उल्टे उहे अपना सँगे–सँगे सब कुछ उड़ा ले जाला। लड़िका से सयान, जवान आ बूढ़ बना देला। समय के गति सब कुछ बदल देला। चर–अचर, पसु–पंछी, जिया–जंतु सब ओकरा बेग में कबो धीम, कबो तेज चलत बदलिये जाला। हिडिमा का सँगे ओकरा लसोर प्रीति का मिठास में अझुराइल, भीम के पते ना चलल कि कब चुपेचुप पावस ऋतु बीत गइल। निझाइल फेंड़ फेर हरियाराइं गइलन सऽ। आचार्य चाण्डक का कुटीर का बहरी, भीम के बतवला जमीन में जोन्हरी, आ बजड़ा में बाली आ गइल रहे। मकई के बड़े–बड़े बाल मन ललचावत रहे। आचार्य चाण्डक के खुसी के ठेकान ना रहे। दू गो बिपरीत जीवन संस्कृति का मेल से उपजल ई प्रेम आ विश्वास के हरियरी अब फरे फुलाये लगल रहे। ऊ दाना भरल बालियन के बस्ती का जानकार बूढ़ पुरनियन के देखावस। सँगे बइठि के मंत्री उत्तुंग आ नायकन के संगे बिचार आ मंत्रणा करसु कि आगा का करे के चाहीं।

हिडिमा गरभ से रहे, एकर जानकारी जब भीम के कुन्दकी काकी से भइल रहे त छिन भर खातिर खुसी का मारे उनका कठया मार देले रहे। उनका विश्वासे ना होखे कि ऊ बाप बने वाला बाड़न। ऊ अपना खुसी के भितरे जाँतत अगराइल पुछले रहले,'काकी, का ई बात हिडिमो के मालुम बा?' काकी अँगुरी ओठ प धरत फुसफुसाइल रहली,'ना–ना ओकरा पता ना रहे; हमरो खाली लच्छन देखि के अनुमाने रहे, बाकि बैदजी ओकर नाड़ी–नटिका देखि के तुरंते बता दिहले। अब एक बात के खेयाल रउरे राखे के बा कि हिडिमा के शरीर आ मन दूनों के कवनो असुबिधा ना होखे।' माता कुन्ती का साथ–संसर्ग आ उनका हाव–भाव–जतन से हिडिमो बाद में जानिये गइल कि ऊ अब महतारी बने वाली बिया। बीज से अँखुवा त अढ़ाई महीना पहिलहीं फूट गइल रहे।

मातृत्व के बोध होते मेहरारु के झुकाव आपरूपी अपना आवे वाला संतान का ओर हो जाला। भीम अगराइ के, हिडिमा के जब–जब अपना आलिंगन में लेसु, ऊ निहाल हो जाव। एकोर भीम के अपार प्रीति आ दुसरा ओर भीतर से फूटत ममत्व आ छोह। ऊ आँख मूनि के सपनलोक में बिचरे लागे, कबो–कबो चिहुँकि उठे आ नीन में परल भीम के अपना बाहुलता में बान्ह लेव,'हमके अइसन अवस्था में छोड़ि के मत जाईं। हमार त ना, बाकि अपना ए सुघर सलोना सन्तान के त खेयाल करीं "ना आर्यपुत्र, मत जाईं हमके छोड़ के!"

भीम जब अँकवारि में लेके ओके झँझोड़ि के जगावस आ ऊ भर आँखि उनके देखि लेव, तब ओकरा चैन परे। भीम ओकरा मनोदशा के समझत रहलन। उनुका साफ बुझात रहे कि माता कुन्ती के दिहल अपना बचन का कारन, ऊ सन्तान पवला का बाद, भीम से बिछोह के खेयाल से भितरे–भीतर आकुल–व्याकुल रहत बिया। भलहीं सभका सोझा ऊ हँसत–मुस्कात लउकत बिया, बाकि आड़–अलोत मिलते एकालाप करत बुदबुदाए आ आँसु गिरावे लागत बिया। भीम एकाध बेर अइसन अवस्था में ओके देखलहूँ रहलन। ऊ लाख ढाढस देसु ओके, बाकि उनहूँ के मन जानत रहे कि अपना भार्या से उनका बिछोह के समय अब नियरात जात रहे। टीस त उनहूँ का भीतर उठे बाकि ऊ पुरुष रहलन। राज काज, पलिवार आ लोगन का बीच भुला जासु; बाकि हिडिमा त जइसे एकदम एकाग्र आ आत्मलीन होखत जात रहे।

एक दिन सखी निरिमा का छोट लइका के खेयाल अइला पर हिडिमा छोहाइल ओकरा कुटीर में चल गइल। निरिमा खुसी से धधाइल ओके बहुत देर ले अपना अँकवारी में बन्हले रहल। जब हिडिमा दुलार से ओकरा लइका के माथा चुमलस त ओकरो, छिन भर खातिर अइसन लागल; जइसे कवनो ममतामयी महतारिये अपना जामल के चूम रहल बिया। ऊ धीरे–धीरे, नीन में सुतल ओह छोट शिशु के माथा प' अइसे हाथ फेरत रहे, जइसे ऊ ओकरे संतान होखे। वात्सल्य आ ममता के आभा से चमकत ओकरा मुखमंडल पर जननी के ममता, प्रेम आ करुना विलास करत रहे। निरिमा का मालुम हो गइल रहे कि ओकर हिरऊ सखी अब खुद माई बने वाली बिया। एह बन

तूँ अतना जल्दी काहें आ गइलऽ? तहरा पिताजी का सँगे रहत, हमके कुछुवे दिन त बीतल, हा। अभी त हम पति–पत्नी का सम्बन्ध आ निकटता के, अनुभूतिये भर क पवले रहनी।'

— 'का बड़बड़ात रहेलू हिडिमा? लऽ हई पी लऽ! अब्बे तोहरा खातिर गरम–गरम बनवलीं हाँ!' कुन्दकी काकी ओकरा एकान्त के भंग क देसु। मन मार के, आ मोका के समझ के हिडिमा पटा जाव, बाकिर कुछ रहे, जवन ओकरा भीतर हर घरी टीसत–करकत रहे।

दरसल हिडिमा के कुन्ती माता के ऊ बात रहि–रहि के मन परि जाव, जवना में ऊ कहले रहली कि 'तूँ अधिका से अधिका एक बरिस भा सन्तान पैदा भइले तकले, भीम का सँगे रहि सकेलू।' ऊहो पगली बे तरक–बितरक के सकार लेले रहे। अब जबकि ऊ घरी नियराइल जाता, त रहि रहि–रहि उहे करार, ओकरा भीतर खदके लागता। भितरे–भीतर ऊ तड़फड़ा के रहि जात बिया। ऊ इहो जानत बिया कि खाली ऊहे ना, बलुक आर्यपुत्र भीमो के एह स्थिति के पता बा, बाकि आगा होखे वाला बिछोह के घरी जस–जस निगिचाइल आवत रहे हिडिमा के अधीरता आ बेचैनी बढ़ल जात रहे। इहो साँच रहे कि ओकर प्रेम, अब गरभ में कुलबुलात आवे वाला पूत का ममत्व में बँटाइ गइल रहे, बाकि एह ममत्व के छतरछाँह तबे न मिली, जब भीम ओकरा लगे आ ओकरा एकदम निगिचा रहस। भीम का बाँही में बन्हाइ के सुतला में ओकरा निनियों लागे। इ नीन ओह भरोस पर आवे कि ओकर प्रिय, ओकर आ ओकरा गरभ में सुगबुगात लड़िका से बिलग नइखन; उनकर संरक्षन हर घरी बनल बा। पिता कइसे अपना पुत्र के त्याग सकेला? हिडिमा भीम के बाँहि धइले, उनकर हथेली अपना पेट पर ले जाव,'रउरा बुझाता कुछु? ई राउरे, सन्तान, रउरा से सीखे आ जाने खातिर, अबहियें से अतना बेचैन काहें बा?

— 'काहें?' भीम अनजान अस, सवाल करस

— 'एसे कि आप एके अकेल छोड़ के चल जाइब, बे सहारा....!' हिडिमा के नजर दूर कहीं टँगा जाव।

— 'ना हिडिमा, हम भला अपना पुत्र के बेसहारा कइसे छोड़ सकीले, ऊ त आवे वाला समय में पिता के गर्व आ शौर्य बनी।' थोरिकी देर खातिर उनकर गर भरभरा गइल, फेर विश्वास भरत कहले,'हम जानत बानी कि हमार प्रानप्रिया भार्या हिडिमा, इहाँ ओकर संरक्षक रही। हमार आधा अंग, आधा बल बन के, ऊ हमरा पूत के बुधिमान, गुनी, दयालु आ पराक्रमी जोधा बनाई! बनाई। नऽ हिडिमा?' भीम ओकरा कान्ह के हिलावत पुछलन, "बोलऽ ना हिडिमा, हमार आ हमार बेटा हमरा कुल के जस आ कीर्ति के बढ़ाई नऽ?"

— "हँ आर्यपुत्र! ऊ पिता के अनुगामी आ पिता नियर पराक्रमी बनी।" हिडिमा के आँख से जलधार बहे लागल। भीम ओके अपना आलिंगन में कस के बान्हत बउराह अस ओकर मुँह चूमे लगलन; बाकि उनकर बुदबुदाइल ना बंद भइल,"हम जानत बानी, हमके भरोसा बा, हमार हिडिमी, हमार अतुलनीय हिडिमी सबकुछ कर सकेले! ऊ हमरा पुत्र के अतुलनीय बनाई, भीमों ले बढ़ के बीर आ पराक्रमी! हम का करीं हिडिमी, ना त हम आदर्श पति बननी, न आदर्श पिता! हम अपना परिस्थिति से विवश बानी हिडिमी, हमके क्षमा करिहऽ।"

हिडिमा के मातृत्व उमड़ आइल। ऊ भीम के चेहरा अपना छाती प धरत, माथ प हाथ फेरे लागल,"हँ स्वामी, हिडिमी अपना करेजा प पाथर धइके एकनिष्ठ इहे करी; अपना प्राणप्रिय के एकेक बात पूरन करी, विधाता साक्षी बानऽ, हम रउरा पूत के अइसन यशस्वी बनाइब कि संसार इयाद करी।' फेरु भीतर से उठल बिछोह का हूक के जाँतत कहलस,"रउरा जाईं स्वामी, अपना भाइयन का सँग, अपना सँग भइल हर अन्याय, हर अधर्म के नाश करीं, हम रउरा सफलता खातिर तप करत रहब!' आँखि से लगातार बहत जलधार से भीम का माथ क केश भींजे लागल त उनका होस भइल। ऊ आपन मूड़ी हटाइ के हिडिमा के देखलन,'ई का हिडिमा? तूँ रोवत बाड़ू? हमरा के हमेशा खुसी आ आनंद देबे वाली हिडिमा, अतना कमजोर ना हो सके?' ऊ अपना हथेली में हिडिमा के आँसु से भींजल चेहरा ऊपर उठवलन, अपना अँगौछा से पोंछलन, फेर गाल से गाल सटा के अँकवारि में लेत कहलन,'का करीं हिडिमा हम? हम तोहके छोड़ के जाइल नइखीं चाहत, तूँ हमार पहिल प्रीति, पहिल सहचरी आ गुरू हऊ! हम तोहसे बहुत कुछ सिखनी आ जनलीं। तोहरा सँग ऊ सुख पवनी जवन दुर्लभ बा! बन–पहाड़ आ एह दुर्गम अरण्य के रहस–भेद हम तोहरे से सिखलीं, हमरा सोच–बिचार के तूँ नया दिशा दिहलू आ अब तूँही हमरा के बलहीन करत बाड़ू?'

— "ना स्वामी, ई त भीतर क उदबेगल प्रीति रहल। हिया निगोड़ी, मनबे ना करेले, जतने जाँतल चाहीला, फुइंफोर अस निकलि आवेले।" हिडिमा अपना भावावेग के दाबत भीम के ढारस दिहलस, फेरु कुछ सोचत सवाल कइलस,'स्वामी, इहाँ से कहाँ जाइब?'

— 'पता ना, जहाँ नियति ले जाव!'

— 'कबले एही तरे छिछियात घूमत रहब?'

— 'जबले उचित समय ना आवे। जबले बिदुर काका क सनेस ना मिले, भा जबले जेठ भ्राता आ

माता ओह दुष्टन के मान मर्दन के आज्ञा ना देसु'। भीम का चेहरा पर क्रोध के तनाव आ गइल

– 'एगो अउर बात पूछीं?

– 'हँ पूछऽ !

– 'एह अनजान लमहर जात्रा आ लड़ाई भिड़ाई में हमहूँ आपके कबो इयाद आइब कि ना?'

भीम अवाक्। उनका भक मार दिहलस। फिरु अपना के सहज करत, हिडिमा के दूनों हाथ अपना हाथ में लिहलन,'तूँ ई कइसे सोच लिहलू कि हम तोहके भुला जाइब? तूँ आजीवन हमरा अन्तस में रहबू!' आ हिडिमा के लरुवाइल शिथिल देंह अपना छाती से लगावत आँख मून लिहलन। हिडिमो के भींजल पलक अपना आपे मुना गइल।

रात ढेर बीत गइल रहे। भीम अपना गोदी में, लगभग सुत गइल हिडिमा के धीरे–धीरे ओलरत बगल में सुतवलन आ ओकरा अझुराइल केशन के धीरे से सझुरावत, ओकरा माथ पर हाथ फेरत, सोचे लगलन, 'नियति कतना विचित्र संजोग जुटावेले। काल्हु तक अनजान एह दुर्गम–गझिन बन में एगो रहस्य लेखा बिचरे वाली एह भोली बनचरी प्रिया का बारे में उनका का पता रहे? आज एतना दिन, इहाँ एकरा साथ रहि गइला का बाद बुझाता कि ई कतना आपन आ नगीच बिया। कबो ना भुला सके वाला, एकरा सँग क एक एक छिन क हास–हुलास, विहार, रमण, विलास, प्रेमावेग, आलिंगन एगो इन्द्रजाल लेखा आँख का सोझा पँवरे लागल। 'कुछ दिन का बाद हिडिमा आ एकर बन–साम्राज्य आ उनका पर अपार नेह, सरधा आ विश्वास राखे वाला बन के निश्छल कर्मनिष्ठ लोगन क साथ छूटि जाई। नियति अब कहाँ ले जाई आ कहाँ अझुराई, पता नइखे। पापी दुर्जोधन आ दुष्ट शकुनि के दण्ड देबे के समय कब मिली, इहो पता नइखे। पता त इहो नइखे कि काल्हु का होई..बाकि जिनिगी साइत इहे हऽ। नियति का हर खेल, हर चाल में नया आ विचित्र संजोग का मोहरा का रूप में हमहूँ एहर से ओहर, मन से, भा बेमन से चलबे करब। चलहीं के परी' उनका जोर से जमुहाई आइल। ऊ आँखि मूनत एगो लमहर साँस लिहले आ आपन हाथ हिडिमा का देंह प फेरत सूते के जतन करे लगले।

हिडिमा अधनिनिये उनकर हाथ अपना हाथ में पकड़ के करवट बदललस। उनका कुछ सकून मिलल। हिडिमा का साथ, साइत ई उनकर अंतिम रात हऽ, अब कुछ दिन बाद साइत सन्तान भइला पर ऊ पूर्ण रूप से माई बनल हिडिमा से मिलिहें। हो सकेला उहो मोका ना मिले। ऊ अपना पीर के भितरे दबलन, हिडिमा से आँख मिला के जाये के अनुमति माँगल साइत ठीक ना होई, ई बेचारी मोह में बिलखे लागी। ना ना ओकर रोवल ऊ बरदास ना क पइहें।' भीम के अबहियों नीन ना आवत रहे। पता ना, हिडिमो खाली नीन के बहाना नइखे नु कइले। ऊ ओकरा माथ आ गाल के सुहरवलन। उनकर हथेली भींजल लागल। हाय रे नियति, तोर ई कइसन खेल बा?' ऊ मन कड़ेर करत दोसरा ओर करवट बदल लिहलन, जइसे अपना भावावेग आ मोह पर बरियाई आँकुस लगावत होखसु। ••

आश्रमवासियन आ ऋषि शालि से विदा लिहला का बाद ब्राह्म महूरत में सुरु भइल जात्रा पुरुब दिसा में पह फटला ले, चुप्पी ओढ़ले जारी रहे। सबकर मन भारी रहे आ उदास। कुन्ती त एकदम शान्त आ थिर रहली। जुधिष्ठिर आ उनका अनुजन के मन जरूर बोझिल रहे। भीम का भावहीन, सुन्न चेहरा पर, दिन उजरइला का बाद बेचैनी जरूर कुलबुलाए लागल रहे। उनका भितरी भयानक अन्तर्द्वन्द छिड़ल रहे। उनके रहि–रहि अपना कठोरता आ चुपचाप पलायन पर ग्लानि होखे। पता ना हिडिमा, का सोची? पुत्र–जन्मोत्सव का समय, उनकर पूरा पलिवार, हिडिमा का खुसी आ उछाह के बढ़ावे जरूर पहुँचल रहे, बाकिर साँझ के बिना कुछ बतवले, बिना हिडिमा के ढाढस दिहले, चुपचाप आश्रम लवटि आइल रहे। हिडिमा आज उनके जोही आ जब ओके ई पता चली कि पूरा पलिवार सँग हमहूँ, ओकरा के बिना बतवले चल गइनी, तब का होई? का एह स्थिति में ओकरा कोमल हिरदया प आघात ना लागी? ऊ अपना विवशता पर आपन गोड़, जोर से पटकले।

– 'का भइल मझिला भइया? कवनो चीझु से ठेस लागल का?' पाछा चलत सबसे छोट भाई चिहुँकल।

– 'हँ। बहुत कड़ेर लागल हा!' भीम आपन गोड़ झटकारत आगा बढ़ गइले।

सहदेव आ नकुल नीचे ओह जगहा पर देखे के कोसिस कइल, जहाँ भीम का ठेस लागल रहे, बाकि अइसन कुछ ना लउकल, जवना से उढ़ुक लागे।

– 'अब फजीर हो चलल बा। एह–टेढ़ मेंढ़ कुस–काँट वाला बनइला डहर प चलत–चलत अबले गन्तव्य के कवनो ओर–छोर ना बुझाइल?'जेठ भाई कुछ बिचारत कहले।

– 'आश्रम के ऋषि लोग त बतावत रहे कि एनिये उत्तर ओर चलला पर पांचाल राज के सीमा आ जाई, बाकिर कबले आई, आ केतना कोस चलला के बाद आई, ई समझल कठिन बा। जटा जूट वाला तपस्वी अस लागत जेठ का पाछा माता कुन्ती का सँगे चलत अर्जुन संवादहीन माहौल के तूरत कहले।

भीम का भीतर अबहियों हिडिमा का राज में चलत उत्सव के दृश्य चलत रहे। एकदम सफाचट केशविहीन तेजस्वी बालक। कन्धा उनहीं लेखा चौड़ा, छाती उनहीं लेखा उभरल। भटर–भटर ताकत ओकर बड़ बड़ नयन, एकदमे हिडिमी लेखा, देखते भीम ओके गोद में उठावत पुकरले,'घटोत्कच। मतलब उत्कच विहीन घट लेखा चिक्कन सिर वाला। ऊ हँस देले रहे, जइसे बाप के दिहल ई नाँव ओकरो अच्छा लागत होखे। सोच में परल नीन में चलत भीम के सँचहूँ ठोकर लागल। उ लड़खड़इले त पाछा से अनुज नकुल, सम्हारत धीरे से कहले,'का, मझिला भइया? आज तोहरा के ठोकर बहुत लागत बा! सम्हर के चलऽ!'

– 'हूँ!' भीम बस अतने कहि पवले। पाछा–पाछा धीरे–धीरे चलत भीम के तन्द्रा एक छिन खातिर टूटल, फेरु ऊ ओइसहीं डेग डाले लगले, जइसे ऊ अपने से परत होखे। घटोत्कच के ऊ निश्छल–निर्दोष छवि ओइसहीं सजीवे उनका सामने रहे। हिडिमा के गोद में ओके दिहला का बाद, पुरोहित का कहला पर ऊ ओकरा चमकत लिलार पर अपना रक्त के टीका लगावत, मनेमन फुसफुसाइल रहले,'राजा लेखा रहिहे बेटा। अपना ममतामयी त्यागी माता के खयाल रखिहे; हमार कमी ओके ना खले, एकर ध्यान रखिहे बेटा घटोत्कच!' ऊ निश्छल भाव में हँसल रहे, जइसे पिता के मनोभावना के समझत उनके आश्वस्त करत होखे।'

– 'बेटा भीम। अब हमरा नइखे चलल जात।' माता कुन्ती के पुकार प उनकर सपनाइल तन्द्रा टूटल। ऊ झपटल महतारी का लगे पहुँच गइले,'माता आप हमरा पीठी चढ़ जाईं।'

कुन्ती भीम का मनोदशा के समझत रहली। खुद उनहूँ क मनोदशा ओइसहीं रहे। भीम का पिठइयाँ चढ़त कहली,'बेटा, इहे जीवन के तप हऽ। अपना कर्म का राह प चलत अपना भीतर उमड़त मोह–छोह के गला घोंटे त्यागे के परेला। बेटा एकर पीरा बर्दास ना होखे, बाकि काल के गतियो ना रुके। आपन कर्म करहीं के परेला।'

भीम कुछ ना बोलले। उनकर गला सूखत रहे। ऊ अपना भीतर के धुंध फार के निकलल चहले। माता के बोलला से, कुछ तोख जरूर भेंटाइल, बाकि भीतर कहीं अपराधबोध लेखा होत रहे। अबहियों ऊ सवाल उनके कुरेदत रहे,'हिडिमा उनकर अर्धांगिनी, ओह वन–साम्राज्य के राजकुमारी जवन उनके आ उनका पलिवार के अतना दिन आश्रय दिहलस, पोसन आ रक्षन कइलस, चले के बेर कवनो कृतज्ञता जतावल त दूर, ओके बतावलो जरूरी ना समझल गइल कि हमनी का जात बानी जा। ऊ सकुचात धीरे से सवाल कइले,'ई त सही बा माता, बाकि हिडिमा आ ओ बन–समाज के बिना बतवले चुपचाप एह पलायन पर हमरा अबहियों बहुत क्षोभ होता।'

– 'होइबे करी बेटा। हमरो होता। तहरा सब भाइयन के एकर मलाल बा, बाकि परिवार का सन्मति आ सहमति से लिहल गइल निरनय त सबका मानहीं के परी नऽ? हिडिमा आ ओकरा राज के समझदार लोग हमहन का परिस्थिति आ विवशता के समझत होई, ना तऽ आगा चल के समझ जाई; आ बेटा हमन का एह जात्रा के गोपनीयता बनवले रहला खातिर, ई जरूरी रहल हा।'

– 'बाकिर हमरा समझ से माता, कम से कम हिडिमा भाभी के बतावल चाहत रहल हा! ऊ हमन का पलिवारे के अंग रहली, उनके बतवला में हमहन के कवन खतरा?' भीम का पाछा चुपचाप चलत असंतुष्ट अनुज नकुल बीच में बोल परले।

– 'हँ बेटा नकुल, तहार कहल सोरहो आना साँच बा, बाकिर तूँ औरत के प्रेम आ मोह के ना समझबऽ!' ऊ लमहर साँस छोड़ली, जइसे ऊ ओही पीड़ा भरल मनःस्थिति से गुजरत होखसु, हिडिमा एकदम निश्छल, प्रेम के छछात मूरत हियऽ, ऊ आँखी का सोझा एह बिछोह के ना सहि पाइत। ओकरा गोद में अभी एगो नान्ह बालक बा, ओकर ममता अलगे बा। तूँ ना समझबऽ बेटा औरत पुत्र आ पति का बीच, कब्बो केहु के छोड़ के, केहु के अपनावल ना चाहेले।'

– 'बाकिर अब जब ओकरा ज्ञात होई, त ना छपटाई?' नकुल का अब्बो इतमीनान ना भइल।

– 'हमके बहुत पियास लागल बा माता, राउर अनुमति होई त" भीम बतकही से दुखी होत कहले

नकुल धावत आगा जाके जेठ भाई से रुके के कहले आ सहदेव का हाथ से कमंडल लेत, वापस भीम का ल पहुँचले,'लऽ भइया, दू घोंट जल पीलऽ तब आगा बढ़ल जाई।'

भीम माता के पीठ से उतारत कहलन, 'पहिले माता के पियावऽ। ऊ थाकल आ पियासल बाड़ी।'

कुन्ती का चेहरा पर एगो फीका मुस्कान आइल। ऊ भीम आ नकुल के छोह से देखत कहली,"ले आवऽ

हाथ उठा के सबके असीसत महर्षि, जल से आचमन कइला का बाद, कुन्ती का परिवार सँगे भोजन करे बइठलन।

भोजन का बाद, भीम महर्षि खातिर फेंड़ का जरी आसन बिछवलन आ चूल्हा का बँचल आग से उहाँ नया आग जरवलन। उनकर अनुज ओमे सूखल लकड़ी डालि के लहकवलन सऽ आ जब लपट, निकले लागल त सभ गोलियाइ के महर्षि वेदव्यास का सामने बइठि गइल। महर्षि मंद मुस्कान का साथ जुधिष्ठिर आ उनका अनुजन का ओर वत्सल भाव से ताकत कहलन, 'बेटा! अइसे त समस्त कुरुवंश प हमार नेह आ आशीर्वाद सुरुवे से रहल बा, बाकिर निश्छल नेमी–धरती आ पितृ हीन रहला का कारन तोहन लोग प हमार विशेष छोह आ मोह रहल बा। तोहन लोग का साथ भइल अन्याय, छल आ दुरभिसंधि का कारन हमरो दुख पहुँचल। बेटा, तोहन लोग क धीरज, सहनशीलता, दया आ क्षमा तोहन लोग क राह अपना आपे आसान करी। समय संजोग तोहन लोग के, आगा चल के, जस आ कीर्ति दिही।"

– 'महर्षि, अभी कबले हमनी का एही तरे निराश्रय बन बन लुकात– छिछियात रहब जा?' अर्जुन व्यग्र होके पुछलन।

– 'कहलीं हाँ नऽ, समय–संजोग अच्छा बा!' महर्षि सहज भाव से कहलन।

– 'बाकिर इहाँ एह बन में भुखाइल–पियासल बिना ठौर–ठेकान के घुमलो ठीक नइखे नऽ महर्षि!' भीम हिचकिचात आपन विवशता प्रगट कइलन।

– "अइसन नइखे बेटा, इहाँ से लगभग डेढ़ कोस उत्तर–पच्छिम एगो बढ़ियाँ नगर बा– एकचक्रानगरी। तोहन लोग के ब्राह्मन का भेख में, उहाँ कवनो स्वाध्यायी

तक मौन रहला का बाद महर्षि मुस्कियात फेर कहे सुरु कइले,'तोहन लोग सोचत होइबऽ जा 'भटकाव' का बारे में। ई भटकलो तोहन लोग खातिर मूल्यवान बा। एकरो पाछा कवनो कारन, कवनो उद्येष्य बा। ई तोहन लोग के पीड़ादायक आ ऊबाऊ लागत होई, बाकिर ए भटकाव के सार्थकता ई बा कि ई अरजल अनुभव, ज्ञान आ परिचय, आवे वाला समय में तोहन लोग का बहुत कामे आई।' बस अब तोहन लोग विश्राम करऽ जा। हमरो ब्राह्ममुहूर्त्त में आगा पयान करे के बा!' वेदव्यास मौन हो गइले। सब उहें आपन अँगौछा बिछा के शयन आ विश्राम क उपाय करे लागल। महर्षियो ओठँघि के आँख मून लिहलन। ••

कुछे दिन बाद अचानक जब निम्बा से पता चलल कि महाराज आ उनकर पूरा परिवार आश्रम छोड़ के जा चुकल बा त हिडिमा के करेजा मुँह में आ गइल। निरिमा ओके सम्हारत धीरे से कहलस,'देखऽ सखी, होने दूनों लड़िका आपुस में कइसे खेलत बाड़न सऽ; का एह समय तूँ अपना बिकलता आ पीरा के उजागर कइल ठीक समझत बाड़ू?'

हिडिमा अपना छलछलाइल आँख के कोर पोंछत, फेर पुछलस, 'आर्यपुत्र जाये का बेर कुछ कहले रहले?'

– 'हँ' निम्बा अपना ढबढबाइल आँखि के दोसरा ओर घुमावत बोलल, 'तोहन लोग, हिडिमा आ घटोत्कच के ध्यान रखिहऽ जा। संभव बा, हमनी का कवनो

एकरा बाद बिना निम्बा के प्रतिक्रिया जनले, ऊ निरिमा का लइका सँग बइठल, अपना लइका के गोदी में उठावत; निरिमा के आवाज दिहलस,'चलऽ सखी, अब राजकुटीर में चलल जाव!' कुन्दकी काकी कुटीर का बहरा बइठल, हिडिमा के अपने ओर लसरात गुमसुम बेचैन आवत देखली त उनका बेचैनी भइल। ओकरा पाछा निरिमा अपना लड़िका के गोदी में उठवले भागत आवत रहे। निम्बा ओही पाथर–शिला पर मूड़ी लटकवले बइठ गइल रहे, जवना प' थोरिके देर पहिले हिडिमा आ निरिमा बइठल रहली स।

– 'हे दइब, का बात हऽ? हिडिमा अइसे काहें तेजी से चलल आवति बिया? अबहिएँ त ऊ लड़िका लेके उहाँ घाम लोढ़े गइल रहलसि हा!' काकी बेकल भाव से, हिडिमा के तेजी से आवत देखत आशंका में परल रहली। हिडिमा के आँचर नीचे लसरात रहे आ ऊ एकदम बदहवास लउकत रहे।

'लऽ काकी अपना नाती के सम्हारऽ!' हिडिमा काकी के अपना गोद के लइका थमावत दनदनाइल कुटीर में ढुकल। का बात ह रे निरिमा? का भइल? हिडिमा काहें अतना बेकल आ बदहवास बिया?' ऊ पाछा आवत निरिमा से सवाचे के कोसिस कइली। ऊहो अपना गोद से, अपना लड़िका के उतार के नीचे बइठावत कहलस,'काकी तूँ कुछ घड़ी ए अबोध लड़िकन के सम्हारऽ! महाराज हमन के बिना कुछ बतवले आश्रम से पलिवार सहित कहीं चल गइले। बस, अब बाद में बताइब!' ऊ तेजी से भितरी झपटल। काकी कुन्दकी अवाक रहली।

हिडिमा मुँहकुरिये गिरल फफकि–फफकि रोवत रहे। निरिमा ओकरा माथ आ पीठि प धीरे–धीरे हाथ फेरत कहलस,"धीरज राखऽ बहिन, तहरा रोवला से हमरो करेजा फाटऽता! तनी सोचऽ बहिन तूँ त रानी हऊ। राजा आ रानी ना रोवे। ऊ त खाली दोसरा के आँसू पोछेला।"

हिडिमा पर एकर तनिको असर ना परल। ऊ भोंकार पारि के रोवत निरिमा का गोदी में आपन मुँह लुकवा लिहलस,"हमसे खाली ईहे अपराध नू भइल रहे कि हम अपना पागलपन में, माता कुन्ती के बचन दे दिहले रहलीं कि ऊ, ऊ हमार प्रान के अधार खाली पूत जनमले तक हमरा लगे रहिहें! त भोग हिडिमी, भोग अब अपना अपराध के दंड!' ऊ हिडिमा पर झुझलात निरमा का कोरा में आपन माथ पटकलस!

बहरा दुआरी प बइठल काकी कान भितरे ओड़ले, हिडिमा के बोली सुनत कठुवाइल रहली। काल्हु ले अपने में मगन आ खुस रहे वाली ए अभागी लइकी प' अतना जल्दी अइसन भयानक चोट! हाय रे दइब! बहुत निर्मम आ कठोर बाड़ऽ तूँ! बचपन में महतारी–बाप छिनलऽ आ एह भरल जवानी में ओकरा प्रेम का अधारे के। भीम के ऊ भोला–भाला हँसत चेहरा काकी का आँख का आगा नाचे लागल। ऊहो बेचारू त कहीं चुपचाप अइसहीं तड़फड़ात होइहें। 'सँचहूँ तूँ बहुत निरदई बाड़ऽ बिधाता।' क्षोभ से भरल काकी बुदबुदइली। उनका गोदी में कसमसात भीम के लड़िका उनकर आँचर खिंचलस। तकली त ऊ अबोध आपन हाथ गोड़ पटकत, उनहीं का ओर ताकत रहे। कुन्दकी काकी ओके अपना छाती से लगावत ओकर माथ चुमली, "जाये दऽ बेटा, तूँ ही तऽ बाड़ऽ घटोत्कच! अब तूँ अब अपना माता के संबल बनऽ!"

– 'देखऽ सखी! बिधाता क बिधान साइत इहे रहल। तबे नू तुहूँ माता कुन्ती से, अनजाने ई करार कइलू? हमके नइखे पता कि ई करार तूँ कइसे आ काहे कइलू; बाकिर जब कइलू तऽ ओके पूरा करे का समय, तोहके आपन जीउ कड़ेर करहीं के परी। करेजा पोढ़ करऽ आ एह राज के, एह बन के स्वामिनी अस व्यवहार करऽ!' निरिमा, हुचुकत–सुसुकत हिडिमा के पीठ सुहुरावत बोल त दिहलस, बाकि ऊहे बूझत रहे अपना भावुक सखी के प्रेम के भभकत–उफनत बिह्वलता के। ऊ हिडिमा के मूड़ी उठा के आँचर से ओकर आँसुवन से नहाइल–भींजल मुँह पोछलस। 'तनी सोचऽ सखी, बहरा बइठल दूनों अबोध लड़िकन के काकी अकेल कबले सम्हरिहें? तोहार आ महाराज का प्रेम के निशानी; ऊ अबोध लड़िका तोहरे भरोस पर नु बा?'

अचानक हिडिमा चुप हो गइल। सीधा बइठत अपना अझुराइल आँचर के, ठीक कइलस। आपन मुँह नीक से पोंछत, बोलल,"हँ हो, हम महाराजो के बचन देले बानी कि उनका पुत्र के, ओकरा पिता लेखा बनाइब!' जइसे अचके ओके कुछ इयाद आइल होखे, ऊ बउवाइल बदहवास उठल,'हम उनसे कहले रहनी कि हम अपना करेज पर पत्थल रख लेब, आ रउरा बेटा के अइसन बनाइब कि राउर कुल ओकरा प गरब करी।' अपना के सम्हारत ऊ कुटीर का दुआरी का ओर बढ़ल त निरिमा ओकरा पाछा झपटल।

– 'काकी, हऊ मिठका वाला काढ़ा बनइतू, त हिडिमा का सँगे हम्हूँ पियतीं।' निरिमा बहरा निकलते, कुन्दकी काकी का गोदी से घटोत्चक के उठा लिहलस। ऊ लगातार हिडिमा का मुँह का ओर ताकत रहे। हिडिमा से ना रहल गइल, अपना लड़िका के निरिमा का कोरा से लेत ओकर आँख फेर छलछला उठल।

कुटीर का तरफ लवटत खा, हिडिमा रच्छकन का सँगे आवत पुण्डरक के देखलस, छिन भर खातिर ओकरा आँखिन में चमक उभरल। फेर पाछा आवत कुन्द से धीरे से फुसफुसाइल,'पुण्डर के बोला ले आवऽ। हम महाराज का विशेष कुटीर में ओकरा से बात कइल चाहत बानी। अभी ना, तनी रुकि के।' एकरा बाद हाली–हाली फाल डालत ऊ राजकुटीर का राह प मुड़ गइल। ओ बेरा, ओकर सुतल डगमगाइल आत्मविश्वास लवट आइल रहे। अब ऊ एक बेर फेर उहे फुर्तीली आ सावधान बनकन्या बन चुकल रहे, जवन पहिले, अपना शिकार के सम्हरे–सोचे के मोका ना देत रहे।

दूपहर हो चलल रहे। हिडिमा राजकुटीर के पहिलका कुटीर क बंद फाटक खोललस आ भीतर ढुकल। भीम का निजी विश्राम आ राजकाज वाला बिचार–कक्ष के ई दुआरी साइत महीना भर से बन्द पड़ल रहे। ऊ ओमे घुस के एक बेर चारु ओर नजर दउरवलस फेर कुछ इयाद क के एगो लमहर साँस छोड़लस। कुछ देर आपन आँख बन क, के मन में डूबत भीम का सहज रूप के अनुभव कइलस। ओके उनकर संबोधन इयाद आइल, 'हिडिमा तोहसे हम बहुत कुछ सिखनी–जनलीं, एह बन–पहाड़ आ जीवन के मरम समझावे वाली गुरु हऊ तूँ।' ओकर रोआँ–रोआँ सिहर उठल, लागल कि ऊ ओकरा लगहीं खड़ा हँस रहल बाड़न,'हिडिमी, तहार ई फुर्ती आ चपलता त वानरी के पीछे छोड़ देता; अद्‌भुत! अचूक निशाना बा तोहार हिडिमा! हमके त आभासे ना भइल कि कब तूँ कटार चलवलू आ अतना अचूक कि एह बनइला सुअर का पँजरी में धँसि गइल।"अरे बनचरी हिडिमा बावली हो गइल बाड़ू का? एह ऊँच–खाल पहाड़ पर अइसे भागत बाड़ू कि हम हाँफ जाइब!" अपना कान्ही पर लड़िका के जँतले हिडिमा का बन्द आँखिन से बहत जलधार से ओकर कपोल भींजत रहे आ धीरे–धीरे ऊ खारा जल ओकरा गर से होत, नीचे कंचुकी में समात रहे। कुछ खरखराइल त ओकर तन्द्रा टूटल। ऊ महसूस कइलस कि बहत आँसू से ओकर स्तन भींज उठल बा। हाली–हाली अपना आँचर से आपन आँख, गाल आ गर पोंछत पाछा मुड़ल त निरिमा के दुआरी पर खड़ा पवलस। 'आवऽ सखी निरिमा, आज हमरा मन में आइल कि महाराज के ई विशेष कक्ष खोल के देखल जाव!' ऊ सफाई देत फेरु कक्ष में धइल सब चीझन के निरीक्षण करे लागल

– 'बहुत अच्छा कइलू सखी। एही बहाने एह विशेष कुटीर के साफ सफाइयो हो जाई। तूँ बहरा आके लड़िका के सम्हारऽ, तले हम झट से इहाँ क साफ–सफाई क देत बानी।' निरिमा ओकरा बेकली से अनजान बनत भीतर घुसि आइल। ऊ खूब समझत रहे हिडिमा के, ओकरा हाव–भाव से ऊ भितरे–भीतर रोवत–कुल्हुरत ओह बियोगिनी प्रेमिका का पीर के अनुभवो करत रहे, बाकिर ऊपर से इहे देखावे कि ऊ कुछ नइखे समझत।

हिडिमा घटोत्कच के निरमा का ओर बढ़ावत कहलस,'ल तूँ ही धरऽ इनके कुछ देर, हम बहुत देरी से इनके लदले फिरत बानी।' निरमा अचकचाइल लड़िका के ले लिहलस,'हम काकी का लगे नन्हका के बइठा आइल बानी। उहें भइल तहरा के आवत आ इहाँ रुकत देख लेले रहनी हाँ, बाकिर तोहके एकरा भीतर फाटक खोल के घुसरत देखनी हाँ त, समझ गइलीं हाँ कि तूँ।' निरिमा के बात मुहें में रहि गइल। हिडिमा आपन आँचर अपना करिहाँव में बान्हि के भीतर क बिछावन उठवले बहरा निकाल के झारे लागल। निरमा फेरु बरिजलस,'अरे एसे का होई, एके नीक से झारे–बहारे के पड़ी। चलऽ अब्बे निम्बा के आवे द; आज हमनी का भाई–बहिन मिल के एके साफ सुथरा कइ के एम्मे पिये खातिर जल आदि रख दिहल जाई। तोहके त इहाँ कुछ देर खातिर रोज बइठे के चाहीं। आखिर राज काज के बेवस्था अब तोहरे न देखे सम्हारे के बा।'

हिडिमा भितरी से बहारे वाला झाड़ू उठा के हाली–हाली कक्ष के झारे–बहारे शुरु क देले रहे। जइसे निरिमा का कहला–सुनला के ओकरा प कवनो असर ना रहे। निरिमा हार–थक के, उड़त धूर–गर्दा से लड़िका के बचावे खातिर खुदे बहरा निकल आइल।

पता ना कवना झोंक में, हिडिमा आज काम में भिड़ गइल रहे। ओही पुरनका सुभाव आ रंग–ढंग में ओकर स्रम देख के निरिमा के व्याकुलता बढ़ल जात रहे। ऊ फेर चिचियाइल 'अब तूँ एकदम अधिकई कर रहल बाड़ू अपना साथ। हई लऽ आपन लड़िका! हमरा से ई अनेत अब बरदास ना होई!'

हिडिमा सँचहूँ बहरा निकल आइल आ आपन हाथ आ कपड़ा झारत फाटक बन करे लागल। ओकरा मुँह आ केस पर गर्दा चढ़ गइल रहे। 'अइसन करऽ निरिमा, कि अब तूँ एगो घड़ा में जल ले आके, इहाँ का जल पात्र के; धो के पिये खातिर राख दऽ। एतना कइला से अब ई कुटीर बइठे–बतियावे लायक हो गइल। दिन में हमन का इहाँ बइठ के लड़िकन के कुछ सिखावल–बतावल जाई, बिचारो–बतकही होई आ रात खा इ कक्ष अब कुन्दु का जिम्मा रही।' हिडिमा फलगरे कुन्दकी काकी का लगे पहुँच गइल 'अरे, हिडिमा इ धूर–गर्दा, कहाँ से पोति अइलू? लड़िका लेके आचार्य

एकचक्रानगरी खातिर संकट आ अभिशाप बनल बकासुर के अन्त आ राजा द्रुपद का स्वयंबर आयोजन में ब्राह्मन वेशधारी महाराज वृकोदर का अनुज के धुनष–संधान के सूचना का साथ पुण्डरक से, दबल जबान इहो सुने के मिल कि अपूर्व सुन्दरी द्रुपद पुत्री द्रौपदी के पाँचो भाइयन से बियाह माता कुन्ती का आदेश प करावल गइल। हिडिमा एकदम अवाक रहि गइल। ऊ पुण्डरक से फेर बात करे के कहि के आचार्य चाण्डक, किहाँ शिक्षा लेबे गइल अपना पुत्र घटोत्कच के ले आवे चल गइल। ओ समय ऊ कुन्दकी काकी आ खाना पकावे में ओकर सहायता करत कुन्दु तक के कुछ ना कहलस।

"घटोत्कच अतना कम उमिर में, अतना समझदार, साहसी आ बुद्धिमान होई, एकर कल्पना हम ना कइले रहलीं, बेटी हिडिमा। ई त विलक्षण प्रतिभा वाला बालक बा!" आचार्य श्री गद्‌गद रहलन

– 'अरे, अभी कहाँ? अभी त ई हमरा कोरा में सुतल सुतल खाली, अपना पिता महाराजा वृकोदर के बखान सुनेला आचार्य जी। अभी त एके आपसे बहुत कुछ जाने सीखे के बा। हम त घबड़ाइल एसे चलि अइनी हाँ कि कहीं ई आपके परेशान मत करत होखे।'

– 'ना भाई बेल्कुल ना। ई त एकदम शान्त आ धीर गम्हीर बा। सीखे समझे आ जाने खातिर व्यग्र। हम त ए बालक में भावी राजा आ महापराक्रमी जोधा क कुल्हि लच्छन देख रहल बानी हिडिमा। इहे ना हमार अनुमान बा कि आवे वाला समय में ई माता के आज्ञाकारी आ पितृभक्त भइला का साथ अइसन अइसन अचरजकारी काम करी, कि सगरो लोक में धन्य–धन्य कहाई।' आचार्य एकदम सहज भाव से घटोत्कच क भविष्य बाँचे लगलन।

हिडिमा निहाल हो गइल ई सुन के। अपना पुत्र के अपना छाती से लगा के ओकर माथा चूमत ऊ आचार्य के चरन प आपन मूड़ी ध दिहलस। आचार्य का छलछलाइल आँखिन से नेह झरे लागल। ऊ हिडिमा का माथ प छोह से हाथ फेरत, ओकर कान्ह ध के सोझ करत कहलन,'बेटी हम त इहे आ अतने कहब कि एह बालक के असली गुरु आ पिता दूनू तूँही बाडू। हमके तोहरा तप आ कर्म निष्ठा पर अभिमान बा!'

हिडिमा अपना भीतर का कूल्हि भावना के दबावत उठल आ घटोत्कच से, आचार्य के प्रणाम करे के कहलस। ऊ तुरन्ते, हिडिमे लेखा आपन चिक्कन मूड़ी आचार्य का चरन प ध दिहलस। 'कल्यान हो वत्स! आयुष्मान आ यशस्वी होखऽ।' आचार्य चाण्डक हँसत कहलन,'देखलू बेटी, ई एक्के छन में तोहार अनुकरण करत शिष्टाचार जान गइल। एही सुभाव आ गुन का कारन, हम कहत बानी कि बहुत कम्मे समय में, ई सब कुछ सीख–जान जाई।'

हिडिमा ओ बेरा आचार्य के गोड़ लाग के, घटोत्कच के लेले जब अपना कुटी प पहुँचल त कुन्द घबड़ाइल रहे,'का दीदी, तूँ बिना बतवले कहीं चल जात बाडू? अरे हम अब्बे खुदे, इनका के ले आवे जाते रहनी हाँ।'

– 'त का हो गइल कुन्द? कुल काम, हर समय तूँही करत रहब? हमार दुलरुआ अनुज, अब कुछ काम हमके खुद करे दऽ। जहाँ जरूरी होई, हम खुदे तोहसे कहब। ठीक नऽ, अब चलऽ हमरा भूख लागल बा आ तोहरा एह नटखट भैने के भूख त पुछहीं के नइखे। देखऽ, ई कइसे धावल काकी का लगे पहुँच गइल।' हिडिमा हँसत कहलस त, घटोत्कच का ओर ताकत कुन्दुओ का हँसी छूटि गइल।

भोजन का बाद, हिडिमा अपना दिनचर्या का सुधारे का बारे कुन्दकी काकी आ कुन्द से सलाह लेबे का गरज से कहलस,'काकी हम अब कुछ नया करे के सोचत बानी। जदि फजीर होते हम नहाइ–धो के आचार्य जी का कुटीर पर घटोत्कच के लेके चल जाईं, त तहरा आ कुन्द के घबड़ाये के ना चाहीं। कुन्दुओ के अब तनी स्वतंत्र रहे दीं जा, इहो अपना जीवन के नया राह चुनस, आपन जीवन साथी खोजसु। उत्तुंग काका सेनानायक दाण्डी का लइकी क बड़ा बड़ाई करत रहलन। पछिला उत्सव में ऊ अपना भाई सँग इहाँ आइलो रहे। कुन्द के चेहरा लाल हो गइल। ऊ लजात उठल त हिडिमा ओकर हाथ पकड़ लिहलस,'हमके सब मालूम बा कुन्द! अइसे भगला से काम ना चली। ऊहो तोहसे प्रेम करति बिया। आज महाराज इहाँ रहितन त हमके ना कहे के पड़ित। उनका जगह प आज हमहीं के कुछ करे के पड़ी। तूँ हमार, सबसे प्रिय, मुँहलगा छोट भाई होके, दिन–रात हमरे चक्कर में लागल रहबऽ त जिनिगी ना चली।'

– 'हम बियाह ना करब! हम तोसे आ माई कुन्दकी से अलग ना रहि सकीले!' कुन्दु तड़फड़ात उठ गइल।

– 'सुनऽ, हमार अनुज होके तूँ आज ले हमरा कवनो आदेश के नकरले बाड़ऽ? ना नऽ; त आज कइसे नकार देबऽ?'

– 'एम्मे, आदेश देबे क कवन बात बा? ई हमार निजी इच्छा आ बिचार बा!' कुन्दु आपन मुँह दुसरा ओर घुमा लेले रहे।

– 'काकी, परसों मंत्री काका हमसे इ प्रस्ताव राखत,

तोहसे बात करे के कहले रहलन। हम घटोत्कच के आचार्य से मिलावे जात रहनी आ हमरो मनःस्थिति ठीक ना रहे, बाकि आज जब सलतंत भइलीं, त बिचार कइलीं। हमके त ई प्रस्ताव मंजूर बा, तोहार का बिचार बा काकी?' हिडिमा, काकी के असमंजस तूरत पुछलस

— 'हमके त ई संबंध अच्छा लागत बा, बाकिर कुन्दु समझस कि ऊ का चाहत बाड़े।' काकी अबहियों अझुराइल लउकली

— 'देखऽ काकी, इहाँ रसोई आ दुसरा घरेलू काम क चिन्ता छोड़ऽ। काल्ह इहाँ मंत्री काका कवनो समझदार मेहरारू के ए कुल्हि खातिर भेज दिहें। बाहरी कामकाज जइसे, लकड़ी आ जल आदि ले आवे खातिर एगो सहायक आ रच्छक आ जइहें सऽ! तूँ अब खाली हमरा लगे, एह लड़िका के देखिहऽ।' एगो अनिश्चित चुप्पी फइल गइल। केहू कुछ ना बोलल। हिडिमा कबो कुन्द, कबो काकी का ओर देखे। जब केहू कुछ ना बोलल त मुँह लटकावत कहलस,'हमहूँ कतना बावली बानी, तोहन लोग का निजी ममिला में हमरा के दखल ना देबे चाहत रहल।' हिडिमा दुखाइ गइल।

— 'ना दीदी हिडिमा। तहरा कहला पर त, हम जरत आगि में कूद जाइब; बाकिर तूँ काहें नइखू समझत कि तहरा से अलगा होके के खेयाल हम कबो सपनो में ना कर सकीले।' कुन्दु बेकल होके कहलस।

— 'हँ, हिडिमा हमहूँ तोहके अकेल छोड़ के अब कहीं अकेल ना रह सकीं, कुन्दु का जवन बुझाव तवन करस।' काकी के भितर क उहापोह बहरिया गइल

— "हम ई कब कहलीं हाँ कि तोहन लोग हमसे बिलग होके रहऽ। हम खाली कुन्दु का बियाह के बात कहनी हाँ, उहो तब जब हमके उचित आ अच्छा लागल हा। मंत्री काका हमन क बुजुर्ग आ पिता समान बाड़न, उनहूँ क इहे सुझाव रहल हा, कि तोहसे सलाह क के ई बियाह जल्दी क दिहल जाव।"

— 'ठीक बा! बाकि बियाह बाद कुन्दु क मेहरारू कहाँ रही?' काकी पुछली

— 'ओकर मन, ओकर इच्छा होई त इहाँ रही भा काकी का पुरनका कुटीर में रही, भा कुन्दु का सँगे आपन नया कुटीर बनाई। हमरा राय में ई कुन्दु आ उनका पत्नी पर छोड़ दिहल जाव।' हिडिमा का एह सलाह के काकी मान लिहली। कुन्दुओ आपन मूक सहमति दे दिहलस।

अगिला दिन हिडिमा फजिरहीं घटोत्कच के लेके आचार्य का कुटीर पर चल गइल। आचार्य बहरा एगो पाथर पर लमहर चाकर चउकी अस बनल पाट प मृग चर्म बिछा के बइठल ध्यान–पूजा करत रहलन। हिडिमा घटोत्कच का सँग, ओइसहीं मूड़ी नीचे रखि के परनाम कइलस, जइसे पछिला दिन कइले रहे। घटोत्कच ओकर अनुकरन कइलस, फेर हिडिमा कुटीर का पाछा फइलल खेत में पसरल, सीत से नहाइल हरियरी देखे लागल। ललछौंही किरिनिन के लाली, जौ का पतइन प टँगाइल ओस बूनन में दिप–दिप बरत रहे। अचके ओके ठठा के हँसत भीम के इयाद आइल,'देखलू हिडिमी, हम कहत रहलीं नऽ कि आचार्य के पिछुवारा का जमीन प' खेती कइल जा सकेला।' ऊ रुसला लेखा आपन मुँह फेर लिहलस,'हुँह; जाईं होने, हम त रउवा के अबले सोझिया समझत, रहलीं हाँ, रउवा त सुन्दर मेहरारू देखते, हमरा के भुला गइनी! साँच–साँच बताईं। सँचहूँ राजकुमारी द्रौपदी बहुत सुन्दर बाड़ी? बाकि एगो बात हमरा बेल्कुल ना बुझाइल कि कइसे पाँचो भाई एक्के मेहरारू से बियाह क लिहले? हिडिमा कुछ देर ले गुमसुम खड़ा रहे। कवनो जबाब ना मिलल; ई झूठ हऽ नऽ आर्यपुत्र? हमरा के कउँचावे खातिर, अइसन हवा उड़ावल बा नऽ?'

— 'का देखत बाड़ू हिडिमा?' आचार्य थिर खड़ा, चुपचाप खेत निहारत हिडिमा के आवाज दिहले, 'अरे, राजकुमार घटोत्कच! तुहूँ आ गइल बाड़ऽ? अतना सेकराह?'

— 'प्रणाम आचार्य जी। आज हम ई सोच के जल्दी आ गइलीं कि हम आपके निगिचा बइठ के, आपसे कुछ अपनहूँ सीखब जानब; घटोत्कच का बहाने हमरो भल होई!' हिडिमा सफाई दिहलस। 'हई खेती देख के बहुत अच्छा लागल, सबेर के उगत सुरुज का लाली में, एके देख के मन के बहुत शान्ती आ संतोष मिलल!'

— 'बेटी, ई सब महाराज के कल्पना आ प्रेरना के देन हऽ! इहाँ का लोगन के एकर महत्व धीरे–धीरे सही, बाकिर समझ में आइल!' जाने के त भ्रमण आ अनुभव ज्ञान से हमहूँ बहुत कुछ देखले जनले रहनी, बाकि इहाँ ओके, महाराजे चरितार्थ कइले, उनका लगे दूर दृष्टि रहे, अपना कल्पना के, सामरथ से साकार करे क संकल्प आ भरोसो रहे। खैर जाये दऽ ई सब, तोहके अतना परेसान ना होखे के चाहीं। समय पर सब ठीक हो जाई। चलऽ कुटीर का भीतर। इनहूँ के ले चलऽ; इ कुछ खइहें–पिहें तब नू चैन से पढ़िहें–सिखिहें।' आचार्य हँसत घटोत्कच के अपना लगे बोलवलन

कुटीर में, कोना टाँगल एगो झपोली से सुखावल दाख आ मुनक्का निकाल के, एगो डलिया में राखत, हिडिमा का लगे चुपचाप खड़ा घटोत्कच का ओर बढ़वले,'लऽ राजकुमार घटोत्कच, ए बेरा त कुटिया

में, इहे बा।'

हिडिमा डलिया ले लिहलस आ आचार्य का आसन पर बइठला का बाद अपनहूँ बइठ गइल। घटोत्कच के अपना लगे बइठा के डलिया ओकरा आगा रख के ओके खियवलस फेर कुछ सकुचाइल कहलस, "आचार्य हम रउरा कुटीर का लगे घटोत्कच का सँगे–सँगे, कुछ अउरी लड़िकन के शिक्षा क बेवस्था बनावल चाहत बानी। रउरा सँग हमहूँ ओह लड़िकन के सिखावत–पढ़ावत रहब त मन लागल रही। हम चाहऽ तानी कि हमरा बनवासी समाज के लड़िकन के हर तरह के शिक्षा आ ज्ञान मिले।"

– 'बहुत उत्तम बिचार बा बेटी; बाकिर ई काम बड़ा अनुशासन आ तपस्या वाला काम बा। ए बुढ़ापा में अकेले सपरावल बहुत कठिन बा। हँ एकरा खातिर इहाँ एगो अउर बड़ कुटीर बनवा के, कुछ मेधावी लड़िकन के पढ़ावे सिखावे क व्यवस्था कइल जा सकेला। तूँ चाहत बाडू त जरूर करऽ! अपना सँग दू चार लोगन के अउर राख लऽ। हम आज मंत्री उत्तुंग, राजपुरोहित आ दू चार शिक्षा देबे लायक लोगन से सलाह करब।'

– 'राउर अनुमति मिल गइल इहे हमार मनोबल बढ़ावे खातिर बहुत बा! ए काम खातिर हमहूँ अपना बुद्धि–बिवेक से पूरा जोर लगाइब।' हिडिमा अब सन्तुष्ट आ उत्साहित लउकत रहे।

– 'अब हम घटोत्कच के आपका लगे छोड़ के कुछ देर खातिर जा सकीले आचार्य जी?' हिडिमा का पुछला प आचार्य मूड़ी हिला के अनुमति दे दिहले। हिडिमा का बहरा निकलला का बाद ऊ घटोत्कच का लगे बइठ के कहानी सुनावे लगले।

हिडिमा सबसे पहिले निरिमा का घरे गइल फेर ओके लेके, बस्ती का भीतर घूमे निकल गइल। निरिमा हरान रहे ओकरा ए जल्दियइला पर। राह में घूमत खा, ऊ बतवलस कि अब ऊ रोज अइसहीं घंटा–दू घंटा घूम–घूम के अपना राज के लोगन से मिले जाई। औरतन आ लड़िकन से। ऊ इहो बतवलस कि ऊ छोट लइकन का शिक्षा–दीक्षा खातिर आचार्य जी कुटीर पर व्यव्स्था कइल चाहत बिया। निरिमा ओकरा ए नया झक आ जिद प खुस बाकिर असमंजस में रहे। ऊ हिडिमा का भीतर आइल अचानक एह जिद भरल निरणय के रहस्य समझ ना पवलस। सुने में त इ बिचार बहुत अच्छा लागल बाकिर एह समय में, जबकि हिडिमा क लड़िका अभी छोट बा, का ई उचित होई; ओकर मन उलझन में रहे, बाकिर ऊ हिडिमा क सुभाव जानत रहे। ऊ जवन एक बेर ठान लीही, ओके पूरा करे खातिर जीवे–जाने लाग जाई। ओकरो आसा के एगो नया किरिन फूटत लउके लागल। ठीके बा, एही बहाने इहाँ का समाज में कवनो नया बदलाव आ जाव।

तकरीबन घंटा भर का एह भ्रमण में ऊ दस–बारह गो लरकोर औरतन आ लड़िकन से मिलल। रानी हिडिमा का ए अपनापन आ बिचार से, उन्हन का आँख में उभरल खुसी आ चमक साफ लउकल। लवटत खा हिडिमा गम्भीर होके कहलस,'निरिमा हम तहरा आ अपना लड़िका का सँगे, बस्ती के कुछ अउर लड़िकन के लेके, छोटे स्तर पर, पहिले ई कार्यक्रम चलावल चाहत बानी। तूहूँ चाहऽ त अपना पति से सलाह क के, हमार साथ दे सकेलू।'

– 'जब तोहार निश्चय अतना भल आ नीक बा त भला कवना महतारी–बाप के एसे आपत्ति होई? हम त हर घड़ी तोहरा पिछहीं रहब; रहल प्रश्न हमरा पति के त ऊहो महाराज के हमेशा अनुगामिये रहल बाड़न।

ओह दिन हिडिमा निरिमा के ओकरा कुटीर प' छोड़ के आचार्य का कुटीर पर घटोत्कच के लेबे गइल आ आचार्य काका से, अपना भ्रमण के उपलब्धि बतावत कहलस,'आचार्य जी, हमार अभियान त अब सुरु हो गइल। अगिला हफ्ता से हम दस गो लड़िकन के बटोरि के सुरुआती व्यवस्था बनावे खातिर इहाँ घंटा–दू घंटा बइठे शुरु क देइब!'

– 'ठीक बा, जइसन तोहार इच्छा, बाकिर बेटी, ए दस गो लड़िकन के सम्हारल आ सिखावल अतना आसान ना होई। हँ कुछ दिन इनइन के एह खुला जगह प' सामूहिक खेल–खेलावल उचित रही!' आचार्य चाण्डक हिडिमा का ए तत्परता प सचहूँ, खुदे उत्साहित रहलन।

हिडिमा का चल गइला पर ऊ खुदे टहलत मंत्री उत्तुंग से मिले चल दिहलन। उत्तुंग ओघरी सेनानायक दांडी, पुण्डरक आ राजपुरोहित का सँग कुछ सलाह करत रहलन। सेवक से आचार्य का अइला क खबर मिलल त सब सँगहीं उठि के बहरा आ गइल। आचार्य चाण्डक उत्साह में भरल, हिडिमा का रुप में होखे वाला बदलाव के आहट भाँपत, शिक्षण–शिविर बनवावे आ ओमे, लड़िकन के भविष्य साजे का कई उपायन पर सबसे सलाह कइला का बाद कहलन,"कवनो योजना पूरा–पूरा तबे सफल हो पावेले, जब ओके लागू करे में, भरपूर निष्ठा आ लगन होला। एही पहिल पाठशाला का सफलता का बाद, पूरा राज में कम से कम पाँच गो पाठशाला बनावे के पड़ी। ई आवे वाली पीढ़ी का साथे–साथ, ए दुर्गम पिछड़ा बनवासी समाजो खातिर लाभकारी होई।"

आचार्य से मिलल ई नया सनेस, एक बेर फेर मरुवाइल राज–बेवस्था में, नया जान, आ नया गति लिया दिहलस। आनन–फानन में, आचार्य का कुटीर का आगा खुलल लमहर–चाकर क्षेत्र में, पाठशाला खातिर सफाई आ पाठशाला–कुटीर के निरमान क काम सुरु हो गइल। बालक घटोत्कच अपना महतारी आ आचार्य का साथ बइठल–बइठल एह निर्माण के देखत समझत रहे। रोज ऊ हिडिमा का साथ, सबेरे आचार्य का कुटीर पर पहुँचे आ दू–तीन घंटा रहे। ओकर तरह–तरह के बाल सुलभ जिज्ञासा, ओराये क नाँव ना लेव। कबो हिडिमा, कबो निरिमा, कबो आचार्य कबो दादी कुन्दकी सभे ओकरा जिज्ञासा के थोर–बहुत कम करे। निरिमा का लड़िका का अलावा अब दू–तीन गो अउर नया लड़िकन का पहुँचला से ओकर, धमा–चउकड़ी आ उछल–कूद बढ़ गइल रहे। अपना से बड़ो उमिर का लइकन के छकावत ओके देख के निरिमा हँसत कहे,'आखिर बेटा त, महाराज वृकोदरे के न हउवे! उनहीं अस पराक्रमी आ हिम्मती होई!' हिडिमा खाली हलुकाहे मुस्कियाइ के रहि जाव।

साल बितत देर ना लागे। जाड़ा–गरमी–बरसात। एक रितु बीतल कि दूसर आइल। नया बात इहे भइल कि सेनानायक दाण्डी के बेटी 'बेनू' क बियाह कुन्द से करवा दिहल गइल। बेनू, हिडिमा का कहला पर काकी का पुरान आवास में कुन्दु का सँगे रहे लागल। काकी हिडिमा के कुटीर ना छोड़ली। कुन्दु सबेरे–साँझ ओइजे अपना माता से मिले आवे। हिडिमा के हमेशा भागत–दउरत ब्यस्त आ चिन्तित देखि के ओकर मन दुखी होखे, त उदास होके अपने के कोसे लागे। ओकरा उदासी आ अनमनइला प' हिडिमा क ध्यान गइल, त एक दिन एगो रच्छक के भेज के ऊ ओकरा के निम्बा, कुन्दु आ पुण्डरक के पाठशाला पर बोलववलस। ओ बेरा हिडिमा लड़िकन के पहाड़ का फेड़, फल, फूल गुफा आ झरना का बारे में बतावत रहे। निरिमा आ बस्ती के एगो–दुगो मेहरारू बइठि के, आपुस में हिडिमा का एह पढ़ाई पर हँसत रहली स। लड़िका बालसुलभ सवाल पूछँ स, आ हिडिमा बिना अउँजइले उनहन के जबाब देत रहे। अचानक ऊ जब देखलस कि कुन्दु, निम्बा, पुण्डरक उहाँ आ गइल बाड़न स त लड़िकन के लेले–देले, छाजन का बहरा निकलि आइल,'तोहन लोग, कुछ दिन ए लड़िकन खातिर समय निकालऽ जा। हम चाहत बानी कि ए लड़िकन के बन का भीतर ले जाके, बन का साथ जलाशय, पशु–पक्षी, झरना आ पहाड़न का बारे में बतावल जाय।'

– 'बाकिर दीदी ई अभी बहुत छोट आ अबूझ बाड़न सऽ!' निम्बा कहलस

– 'ई काम कई टुकड़ा में, कई दिन, हमहन का सामूहिक देखरेख में कइल जाई। तोहन लोग इन्हन का रक्षण का साथ–साथ, जुद्ध–कला का बारे में सिखइबऽ बतइबऽ जा! लड़िकन के ई सैर दिन में होई। साँझ खा सब बस्ती लवट आई। हिडिमा का ए आदेश प' उनहन का साथ–साथ निरिमो अचंभित रहे। अचानक सबकर चेहरा प उगल असमंजस के भाव देखि के हिडिमा खुदे बोल परल,'हम जानत बानी कि हमार ई बात तोहन लोग के एह समय उटपटाँग लागत होई, बाकिर हमार बिचार बा कि छोट्टे पर से लड़िकन के अपना आसपास के जानकारी आ पहिचान जरुरी बा। ई काम महीना में दू बेर कइल जाई।' पहिला भ्रमण परसों सबेरे किरिन फुटला का बाद होई। हम देख लेत बानी कि हमरा आ निरिमा का अलावा अउर कइ गो मेहरारू तइयार बाड़ी स, बाकि ई तय बा।'

– 'अच्छा दीदी, हमहन का एकदम तइयार आ तत्पर रहब जा!' पुण्डरक बोलल

– 'अपना सँगे दू गो फुर्तीला रच्छकन के जरुर ले लिहऽ!' कुन्दु आ निम्बा के कुछ बतावे के नइखे, ई लोग हमहन का खान–पान आ लड़िकन के देखभाल के बेवस्था करी।' हिडिमा के अधिकार भरल आदेश में अपनापन आ विश्वास के छुपल भाव सबसे ढेर कुन्दु के बुझाइल।

कुन्दु का मेहरारू बेनु के, अब धीरे–धीरे समझ में आवे लागल रहे कि रानी हिडिमो, सँचहूँ कुन्दु के अपना छोट भाई अस नेह–छोह करेली आ ओकरा बियाह में उनहीं क दबाव रहे। ऊ इहो समझ चुकल रहे कि कुन्दु, महाराज वृकोदर आ हिडिमा का नाँव प' सरबस न्यौछावर कर सकेले। एही से अब ऊ राज काज भा हिडिमा का कवनो काम खातिर एतराज ना करे, बलुक अब ऊ खुदे काकी आ हिडिमा का काम–काज में हाथ बँटावे लागल रहे। ओकरा ए व्यवहार से कुन्दु अब पहिले ले ढेर खुस आ उत्साहित लउके लागल।

हिडिमा भले अपना के काम में बझवले रहे, बाकिर ओकर ध्यान 'घटोत्कच' से एने ओने कबो ना भटके। सबेर से लेले रात खा ओके सुतवला तक, कवनो न कवनो रुप में छाया लेखा ओकरा सँग–सँग मँड़रात रहे। रात के कहानी सुनावत खा, ऊ भीम आ उनका अनुजन के आचार–बिचार आ बीरता के बखान करत ओके बार–बार जतावे कि ऊ महाबली आ पराक्रमी जोद्धा के बेटा हऽ। अइसन असामान्य साहस आ शौर्य के स्वामी कि बड़–बड़ असुर राच्छसन के उनकर

लोहा माने के पड़ल। बालक घटोत्कच जब पूछे कि ओकर पिता कहाँ बाड़न, त ऊ बतावे कि ऊ अन्यायी आ आतताई दुष्टन आ राच्छसन के मारे गइल बाड़न। घटोत्कच, उठ के बइठ जाव,"हमहूँ जाइब दुष्टन के मारे।"

– 'हँ बेटा, बाकिर एकरा खातिर पहिले बलवान आ बुधिमान बने के पड़ी, तोहके जुद्धकला में दक्ष बने के पड़ी!'

– 'त हम बनब! माता हम बलवान आ बुधिमान कइसे बनब?'

– 'बेटा, एकरा खातिर तोहके जल्दी–जल्दी बहुत कुछ सीखे के परी। हम तोहके बनाइब बलवान आ बुधिमान जोद्धा। बाकिर अब तूँ सुत जा बेटा, सबेरे से हम तोहके खुदे सिच्छा देबे सुरु करब।' हिडिमा घटोत्कच क पीठ ठोंके आ ओकर माथ चूम के अपना छाती से लगा लेव। महतारी का भरोसा आ आश्वासन पर घटोत्कच सुति जाव, त हिडिमा, भीम का छबि के इयाद करत भितरे–भीतर रोवे आ अहके। कबो–कबो त तन्द्रा में उनसे बतियावहूँ लागे। निसबद रात का अन्हार में चुपचाप ओकरा आँख से लोर झरे आ केहु का पता ना चले। कबो–कबो ओकरा हिचिकी पर एकोरा सुतल काकी उठ जासु,'हमके पता बा तूँ चुपे–चुपे रोवत बाड़ू हिडिमा, बाकिर तूँ रहि–रहि अपना बचन के काहें भुला जात बाडू कि अब तूँ अपना बेटा खातिर तप करबू? इहे तप हऽ तोहार? आँय?'ऊ उठि के अन्हारा टोवत हिडिमा का लगे पहुँच के ओकर माथ सुहुरावे लागसु, 'बावली हऊ? लड़िका जाग जाई!'

– 'का करीं काकी? करेजा पर अब कतना पाथर धरीं, कतनो अपना के समझाईं बाकिर उनकर इयादे अइसन बा। काकी, का हिडिमा के अब ईहो हक नइखे कि अपना प्रानप्रिय के इयाद करो? का उ सँचहूँ भुलाये, लायक बाड़न?'

– 'ना बेटी, तहार हक बा उनके इयाद करे कऽ, हम इहो जानत बानी कि तूँ महाराज से सच्चा प्रेम कइलू। जब हम खुदे उनका के नइखीं भुला पावत, त दोसरा के का कहीं, काकी खुदे रोवे सुसुके लागसु। तब हिडिमा चुप हो जाव, आ उनके चुप करावे लागे।

एक दिन पुण्डरक के अपना गुप्तचर भेदियन से पता चलल कि महाराज आ उनकर भाई साँच में हस्तिनापुर के पराक्रमी पाण्डव रहलन सऽ। त ऊ अपना ओह प्रमुख गुप्तचर के लेके, हिडिमा का कुटीर पर सबेरहीं सबेरे पहुँच गइल। हिडिमा एकान्त में गुप्तचर के सुनावल पूरा खबर अपना काने सुनलस। ऊ बतवलस कि एकचक्रानगरी में बरिसन से उत्पात मचावे वाला बिकराल महा उत्पाती असुर बकासुर के बध, महाराज वृकोदरे कइलन। दरसल महाराज के परिवार जवना ब्राह्मन का घरे रहत रहे, ओकर भोजन आ खाये–पिये वाला आहार क छकड़ा बकासुर तक ले जाये क पारी आ गइल रहे। ब्राह्मन का घरे ब्राह्मन का भेख में रहे वाला महाराज, ओकर जान बचावे खातिर, ओह दिन खुदे छकड़ा लेके गइलन। उहाँ ओह भयानक राच्छस के बध कइला का बाद, भेद खुले का डरे, महाराज वृकोदर के परिवार, राजा द्रुपद का बेटी का स्वयंबर में जाये वाला ब्राह्मनन का गोल में शामिल होके चुपचाप नगरी से बाहर निकल गइल।

– 'ई हमके पता बा। तूँ आगे सुनावऽ।' हिडिमा गंभीर बनल रहे। ओके त भीम का कुल का बारे में पहिलहीं से पता रहे।

– 'महाराज अनुजन का साथ स्वयंबर देखे राजसभा गइल रहलन। उहाँ पूरा आर्याबरत के बीर आ धनुर्धारी राजा लोगन से राजा क मानल शर्त पूरा ना हो पावल। भला खउलत तेल का कड़ाहा में देख के ऊपर टाँगल, चक्कर में घूमत मछरी का आँख में के बाण मार पाई? जब सभ थाक गइल त महाराज के धनुषधारी भाई जाके एकदम सच्चा निशाना लगवलन। राजकुमारी द्रौपदी उनके जयमाल डाल त दिहली, बाकि उहाँ बटुराइल राजा आपन हरबा हथियार लेके महाराज के परिवार के ललकारे लगलन। वासुदेव कृष्ण का हस्तक्षेप आ समझवला का बाद ममिला शान्त भइल बाकि माता कुन्ती के एगो अचरज भरल आदेश का जाने काहें, ई भइल कि...।' गुप्तचर चुप हो गइल

– 'हो सकेला माता ओ लोगन के बिना देखले–समझले अइसन कहि देले होखस?' हिडिमा तरक करत, ओके आगा क हाल बतावे के कहलस

– 'हँ साइत, अइसने कुछ रहे। माता सुनली कि 'भिच्छा माँग के आ गइनी जा माता!' आ भितरे से कहि दिहली कि आपुस में बाँट लऽ जा।' उहाँ ब्यास रिसि आ वासुदेव कृष्ण आके ए धरम संकट से उबरे क राह निकालल लोग। ऊ समझावल लोग कि माता बे देखले कुटी का भितरे से माँगल भिच्छा महाराज का भाई लोगन के आपुस में बाँट लेबे क आदेश देले रहली। उनका पता ना रहे कि भिच्छा का जगहा सजीव औरत बिया। अनजाने में बेसमझले दिहल माता क आदेश सबका मानहीं के पड़ी। पहिले से तय बिधि का विधान में हस्तक्षेप का बजाय एह बियाहो के तपस्या मान के करे क अनुमति राजा द्रुपदो के दे देबे के चाहीं।'

– 'आगा बतावऽ गुप्तचर, एकरा बाद का भइल?' हिडिमा भितरे भीतर छपटात रहे

– 'बियाह का समय ई रहस्य सामने आइल कि हमनी के महाराज हस्तिनापुर के प्रतापी राजा पाण्डु के पुत्र ह लोग। फेर अतने जानकारी में आइल कि बियाह का बाद ऊ लोग उहाँ से हस्तिनापुर चल गइल।' गुप्तचर चुप हो गइल

– 'अउर कुछ?'

– 'हँ स्वामिनी। हमार साथी भेदिया हस्तिनापुर गइल बा, उहाँ का भइल होई, ओकरा लवटले प मालुम होई।'

– 'ठीक बा, अब तूँ जा आ बहरी खड़ा नायक पुण्डरक के भीतर भेजऽ!' हिडिमा आसन से उठ के खड़ा हो गइल फेर पुण्डरक के भीतर अइला पर, ओके चेतावनी दिहलस कि एह तरह के सूचना सबका बीच प्रचारित ना कइल जाव। दुसरा गुप्तचर का लवटते, हमके सूचना तुरंत दिहल जाव। 'पुण्डरक तूँ महाराज के सबसे प्रिय नायक आ शिष्य हउवऽ, तहार जिमवारी सबसे अधिका बा।' हिडिमा, जात–जात, अपना सेनानायक के उत्साह बढ़ावे खातिर कहलस।

तरह–तरह के सूचना हिडिमा के रहि–रहि बेचैन त करे, बाकिर अपना अन्तस में चलत अन्तर्द्वन्द आ उथल–पुथल के कवनो चीन्हा भा आभास ऊ अपना मुख प' ना झलके देव। एने एक पक्ख से जात्रा पर निकलल आचार्य चाण्डक क कुछ पता ना रहे, एह कारन ऊ अब अउर सतर्क आ सावधान रहे। पाठशाला से खाली भइला आ सबका चल गइला का बाद ऊ अकेले अपना बेटा घटोत्कच से बतियावे। कबो–कबो भीम का दया–करुना आ संवेदनशीलता क बखान करत करत अचानक रोवहूँ लागे। बालक घटोत्कच ओघरी अपना हथेली से ओकर आँसू पोंछत ओके ढाढस देव, "माता तूँ चिन्ता मत करऽ हम पिता के हर तरह से सहायता करब। उनहीं लेखा हमहूँ बनब!" बेचारा नान्ह लड़िका; ओके का पता कि माई, भीम का प्रेम आ बिरह में भितरे–भीतर जरत–पघिलत बिया। हिडिमा बालक घटोत्कच के ममता का कारन छाती में भींचत, आपन आँख पोंछत जीउ कड़ा करे लागे। यद्यपि ई ओकरा खातिर आसान ना रहे। ऊ अपना ओह स्मृति के, जवना में कवनो तरह से भीम के भावुक प्रेम आ अपनत्व शामिल रहे, मन परते, कवनो बहाना से घटोत्कच से अलगा एकान्ता में चल जाव।

Øe'k%vfxyk vad ea-

लघुकथा

चोरी आ भीख

आनन्द संधिदूत

जाड़ा का दिनवाँ में कूड़ा बीने वालन का जीविका पर बड़ा उल्टा प्रभाव पड़ जाला। होला ई कि कूड़ा में से दफ्ती, प्लास्टिक वगैरह बीन के आपन खर्च चलावे वालन के ई कुल सामान मिलबे ना करे। चौरस्ते–चौरस्ते जरे वाला अलाव में दफ्ती–प्लास्टिक फूँक के रेक्सा–ठेला वाला ताप जालन सऽ आ कूड़ा बीने वालन के आपन खाली बोरा लिहले घुमते रहि जाये के पड़ेला।

अइसने एगो हाड़ कँपावे वाली ठण्ढ के दुपहरिया रहे। बारह–तेरह साल के देवराज धरिकार। कान्ही पर कूड़ा के खाली बोरा लिहले आइल आ हमरा चउतरा पर कटाइल फेड़ नियर थस्स दे बइठ गइल। हम कुछ हाल–चाल पूछीं एकरा पहिलहीं ऊ खुदे बोले लागल, "का बताईं बाबूजी, काल्ह एक बोरा कूड़ा बीन के एक जगह धइले रहनीं करीब पैंतीस–चालीस रुपिया के माल रहल। सोचले रहलीं कि आज बेंचब बाकिर आज गइलीं त बोरवे गायब! केहू चोरा लिहल। आज सबेरे से बोरा लेके घूमत बानीं कुछ ना मिलल। भूखो लागल बा।"

हम खुद छँड़ा आदमी, खाये के का देतीं? आलमारी में एक थाह पुरान अखबार पड़ल रहे ओही अखबार के देवरजवा के आगे फेंकत कहलीं कि, "ले एही अखबार के बेंच के खाना खा ले।" ऊ कृतज्ञ मन से अखबार के उठवलस आ चल गइल।

अगिला दिने देवरजवा फेर हाजिर! हम कडुआहट से पुछलीं, "अब का रे?"

देवरजवा बड़ा सम्मान से अपना हाफ पैन्ट का जेब में से एगो दस रुपिया के नोट निकललस आ हमरा ओर बढ़ावत कहलस, "बाबूजी ई काल वाला अखबरवा के पइसा हउए।"

हम पइसा लेबे से इन्कार करत कहलीं, "ई त हम तोहके एही तरे देले रहलीं। पइसा रख ले।"

लेकिन ऊ पइसा रखलस ना। हमसे बार–बार पइसा रखे के विनती करे लागल। हम बड़ा तिखार के पुछलीं त कहलस, "हमार माई चोरी आ भीख माँगे से बरिजले बिया। बाबूजी पइसवा लेलीं नाहीं त हमार माई मारी।" हम ओकरा स्वाभिमान आ सच्चाई के सम्मान करत पइसा ले लिहनी।

inkjFkyh dsxyh] ok yhxat] fetkiqj ¼mizi½

साहित्यिक–सांस्कृतिक गतिविधि

गतिविधि–1

पाती अक्षर–सम्मान – 2015'' आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया के अधिवेशन

बापूभवन सभागार (टाउनहाल) बलिया में 'पाती'–मंच आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया का ओर से ''पाती–अक्षर–सम्मान समारोह आ सम्मेलन के सातवाँ अधिवेशन के भव्य आयोजन में दू गो प्रतिनिधि भोजपुरी रचनाकर्मियन के ''अक्षर–सम्मान'' का साथ, विचार–गोष्ठी, लोकगायन आ कविगोष्ठी के सघन कार्यक्रम संपन्न भइल। 10 बजे दिन से साँझ 6 बजे ले चलल एह वैचारिक–सांस्कृतिक गरिमापूर्ण कार्यक्रम क खासियत ई रहे कि एमे दिनभर सैकड़न भोजपुरी–प्रेमियन, रचना कर्मियन आ कलाधर्मी लोगन क जमावड़ा लगल रहे। एह कार्यक्रम में संभावना कला मंच के चित्र–काव्य प्रदर्शनी का अलावा भोजपुरी पुस्तक आ पत्र–पत्रिकन के स्टालो लागल रहे।

ifgy 1= %^ikrh v{kj&l Eeku&2015**

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफे0 अवधेश प्रधान, प्रोफे0 सदानन्द साही (भोज0 अनुसंधान समन्वय केन्द्र का0 हि0 वि0), डा0 नीरज सिंह (अध्यक्ष भोज0 विभाग, कुँ0 सिंह विश्वविद्यालय, आरा) आ डा0 जयकान्त सिंह 'जय' (विभागाध्यक्ष, भोजपुरी, लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर) आदि अतिथियन का हाथे सरस्वती प्रतिमा पर दिया जरवला आ फूलमाला चढ़वला का बाद 'पाती' के यशस्वी संपादक आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया इकाई के संरक्षक डा0 अशोक द्विवेदी अंगवस्त्र आ माल्यार्पण से अतिथियन क सम्मान कइलन फेरू लोकगायक शैलेन्द्र मिश्र आ ओमप्रकाश के स्वागत–गान आ देशगान 'बटोहिया' के प्रस्तुति भइल।

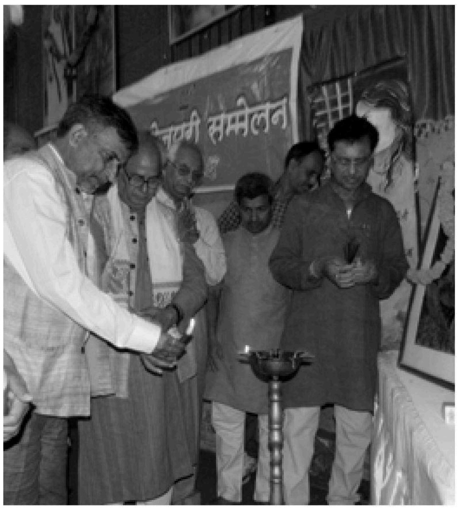

''पाती'' पत्रिका का ओर से, पाती–मंच से जुड़ल लेखकन हर वर्ष दिहल जाए वाला ''अक्षर–सम्मान'' ए साल कवि–कथाकार श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी आ श्री प्रकाश उदय के दिहल जाए वाला रहे। प्रो0 अवधेश प्रधान (अध्यक्ष) आ प्रो0 सदानन्द साही (मुख्य अतिथि) का साथे ई सम्मान, 'पाती' संपादक द्वारा स्मृति–चिन्ह, शाल, प्रमाण–पत्र आ नारियल–पुष्प का साथे सम्मानित होखे वाला दूनों कवि–कथाकारन के दिहल गइल। सम्मानित भइला का बाद खचाखच भरल सभागार में, भगवती प्रसाद द्विवेदी अपना भावुक उद्‌गार में कहलन कि 'अपना जनम–भूमि बलिया में, अपना लोगन का बीच मिलल एह सम्मान से हम गौरव क सुखद अनुभूति करत बानी। ''पाती'' पत्रिका से हम पहिले से जुड़ल रहल बानी आ ई कहे में हमके गर्व होता कि ई मंच भोजपुरी का रचनात्मक–लेखन के नया दिशा देले बा। अपना मंच पर, अपनन का बीच, ई सम्मान पावल हमरा खातिर महत्वपूर्ण बा।

डा0 प्रकाश उदय कहलन कि बरिसन पहिले हम ''पाती'' का मंच से जुड़लीं त जुड़ले रहि गइनी। अबले त हम ''पाती'' का ओर से दिहल जाये वाला सम्मान आ स्मृतिचिन्ह, दोसरा खातिर ढोवत पहुँचावत रहलीं हाँ। एह साल, जब हमरे के मिलल त, अचरज भरल हर्ष के अनुभूति करत, बलिया का माटी आ सृजन–परंपरा के नमन करत बानी।

से, एकर संपादक डा0 अशोक द्विवेदी एह संस्कृति के जोगवत अपना भाषा–साहित्य के ऊपर उठावे खातिर लगातार प्रयास करत रहल बाड़न। 'प्रेम' के केन्द्र में राखि के लिखल कहानियन के ई विशेषांक 'प्रेम' का विविध पक्ष के दर्शन त करावते बा, भोजपुरी कथा–साहित्य के मौलिक रूप–रंग आ ओकरा विकासो के देखावत बा। श्रमसाध्य आ समर्पित संपादन खातिर हम द्विवेदी जी के बधाई देत बानी। 'अँजोरिया' आ 'भोजपुरिका डाट काम' के संस्थापक आ संपादक **M0 vkseizdk'k flag**, कथा–साहित्य में 'पाती' का योगदान क चर्चा करत भोजपुरी भाषा के एकरूपता, मानकीकरण आ व्याकरणो के सवाल उठवले आ कहले कि हमहन के मिल–जुल के एहू दिसाईं प्रयास करे के चाहीं।

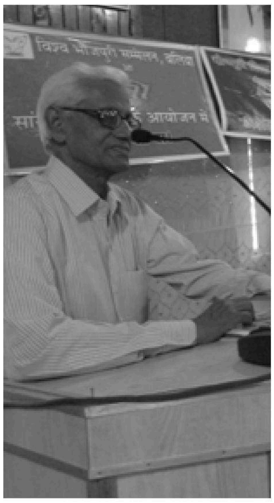

fr1jk1= %^Hkkstiqjh dkO;&1a/;k*

दुपहरिया के अल्पाहार (लंच) का बाद भोजपुरी कवि–गोष्ठी, हास्य–व्यंग्य के वयोवृद्ध कवि कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र' का अध्यक्षता में शुरू भइल। लोकप्रिय चर्चित गीतकार डा0 कमलेश राय अपना संचालन में 'पाती' मंच से जुड़ल कवि–लेखकन के आत्मीय संबोधन करत सरस्वती – वंदना आ काव्य पाठ खातिर भालचंद्र त्रिपाठी (आजमगढ़) के बोलवले। भालचंद्र जी का मधुर कंठ से फूटल गीत, ''कबके दिया बुताइल, अबले निनियाँ कहाँ भुलाइल बा। आपन सुधि, अपने हियरा में, ढेर दिना पर आइल बा।'' पर मोहित मंत्रमुग्ध श्रोता अंतर ले भींज उठलन। लय–ध्वनि आ भाषा का तरलता से भींजल जनसमुदाय के शिवजी पाण्डेय 'रसराज', नागमती–विरह प्रसंग पर रचल गीत सुनवलन। भगवती प्रसाद द्विवेदी मातृभाषा का मातृत्व आ नेह–छोह के व्यंजित करत कविता सुनवलन। बनारस से आइल कवि विजयशंकर पाण्डेय आस्था आ विश्वास के दिया जरवलन। फेरू डा0 प्रकाश उदय अपना चिरपरिचित अंदाज में अभावग्रस्त जीवन में दिखावा आ सपना के रेघरियवात कविता पढ़लन त तालियन का ध्वनि से हाल गउँजि गइल।

डा0 अशोक द्विवेदी कवि के रचनाधर्मिता आ चिन्ता के प्रगट करत कविता सुनवलन– 'तुँहीं बतावऽ/जागीं कबले/केकरा खातिर रात–रात भर?' मऊ से आइल वरिष्ठ कवि–गीतकार दयाशंकर तिवारी प्रतीक्षा–गीत 'बइठल सँझिया से होला सबेर बलमा' सुनवलन त हीरालाल हीरा के 'किचेन शास्त्र' के व्यंग आ चुभन पर श्रोता वाह–वाह करे लगलन। शशि प्रेमदेव के, चोट करत, झकझोरत गजल बहुत सराहल गइल। जनपद के वरि0 कवि त्रिभुवन प्रसाद 'प्रीतम' डा0 शत्रुधन पाण्डेय, विजय मिश्र, कन्हैया पाण्डेय आ वी0 एन0 शर्मा 'मृदुल' का काव्य–पाठ का बाद संचालन करत लोकप्रिय कवि आ प्रशंसित गीतकार डा0 कमलेश राय के गीत सुने के मिलल– 'बहरे, घरे, खेत–खरिहाने/सूते भले निखहरे गाँव
रोजे सुख के साँझ निहारत/जागेला भिनसहरे गाँव!'

भोजपुरी जीवन के जिजीविषा, प्रेम आ प्रकृति के साथ ओकरा क्षोभ आ संघर्ष के उजागर करे वाली कई

रचना मंच से पढ़ल गइली सऽ। एमें जनपद के प्रतिनिधि कवियन के काव्यपाठ भइल। अशोक तिवारी, शुभचिंतक पाण्डे 'कलंकी' डा0 राजेन्द्र भारती, फतेहचंद बेचैन, बृजमोहन प्रसाद 'अनाडी', नवचन्द्र तिवारी, जनार्दन चतुर्वेदी आदि लोग काव्यपाठ कइल।

देवरिया से आइल वरिष्ठ कवि गिरिधिर करूण, आरा से शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी, आ हास्य के मूर्तिमान रूप कविवर कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' एह काव्य–संध्या के आकर्षण आ शोभा रहे लोग। डा0 कमलेश राय के कुशल संचालन स्वयं स्तरीय रहे।

संपूर्ण कार्यक्रम के सोगहग आ परिपूर्ण बनावे में मंच संचालक के0 के0 सिन्हा, लोकगायक शैलेन्द्र, ओम प्रकाश आ सभागार–सज्जा खातिर 'संभावना कला मंच' के चित्रकार राजकुमार आ उनका सहयोगियन क योगदान सराहे जोग रहे।

gljkyky ^gljk*] (सचिव विश्व भोज0 सम्मेलन, इकाई बलिया)

गतिविधि–2

बक्सर में मनावल गइल स्व. गणेशदत्त 'किरण' जयंती

विगत 05 जून के बक्सर (बिहार) में आर्या एकेडमी का सभागार में 'भोजपुरी के भूषण' के नाँव से विख्यात लब्ध प्रतिष्ठ कवि स्व. गणेशदत्त 'किरण' के जयंती समारोह मनावल गइल। अरुणोदय प्रकाशन तथा भोजपुरी साहित्य मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बक्सर के विदुषी विधायिका तथा पूर्व मंत्री श्रीमती सुखदा पाण्डेय रहलीं। एह अवसर पर श्री शिवबहादुर पाण्डेय 'प्रीतम' हिंदी में अनूदित महाकवि किरण के बहुप्रशंसित कृति 'किरण बावनी' अउर 'भोजपुरी चौमासिक पत्रिका 'गधपुरना' के ग़ज़ल विशेषांक के लोकार्पण मुख्य अतिथि का हाथे भइल। एकरा बाद विद्वान वक्ता लोग स्व. किरण जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर चर्चा कइला का अलावे भोजपुरी ग़ज़ल के बानगी पर आपन विचार जाहिर कइल। मुख्य अतिथि श्रीमती पाण्डेय कऽ कहनाम रहल कि बक्सर जइसन छोट जगह में भोजपुरी के संरक्षण, संवर्द्धन आ प्रचार–प्रसार खातिर एह प्रकार के गतिविधि एगो सुखद लक्षण कहल जाई। उहाँ का गर्व का साथे बतवलीं कि पटना विश्वविद्यालय में अध्यापन करत खा भोजपुरी पढ़ावे वाली उहाँ का पहिलका व्यक्ति रहलीं। उहाँ का आयोजक लोग से इहो निहोरा कइलीं कि भविष्य में भोजपुरी भाषा आ भोजपुरी साहित्यकारन का नाँव पर जवने कार्यक्रम आयोजि होखे ओकरा से उहों के जुड़े के मौका दिहल जाव।

दुसरका सत्र के संक्षिप्त काव्य गोष्ठी में गाजीपुर आ बलिया के तीन गो लोकप्रिय युवा ग़ज़लगो मिथिलेश गहमरी, शशि प्रेमदेव आ शंकर शरण के काव्य पाठ कऽ श्रोता लोग भाव विभोर होके आनंद उठावल।

कार्यक्रम के मुख्य कर्त्ताधर्त्ता डा. अरुण मोहन 'भारवि' का अलावे सर्व श्री शिवबहादुर पाण्डेय 'प्रीतम', रामजी पाण्डेय 'अकेला', प्रो0 रवीन्द्र शाहाबादी, प्रो. बलिराज ठाकुर, अनिल कुमार त्रिवेदी, दीपनारायण सिंह, कुमार नयन, भगवान पाण्डेय 'निरास', रामेश्वर मिश्र 'विहान', दीपक कुमार राय आउर स्व0 किरण जी के पुत्र विजय कुमार तिवारी आ पौत्र श्री चन्द्रशेखर गंधमादन आदि के मौजूदगी सराहे जोग रहल।

'kf'k izsnso, बलिया

'पाती' के पचहत्तरवाँ अंक, शिक्षक आ कवि मित्र शशि प्रेमदेव का मेहरबानी से देखे पढ़े के मिलल। भोजपुरी भाषी भइलो प हम एह से अनजान रहलीं कि हमन का मातृभाषा में एतना स्तरीय पत्रिका छप रहल बाड़ी सऽ। हम बेर–बागर हिन्दी के एकाध गो पत्रिका पढ़ेलीं, कवि सम्मेलन आ मुशायरो के रसास्वादन करत रहेलीं, बाकिर अपना भोजपुरी साहित्य के अइसन खजाना कबो हाथे ना लागल। असल में भोजपुरी, सिनेमा, कैसेट–वाला गीत आ नाच–नौटंकी में अतना छेछड़ई, फुहरपन आ गंदगी देखत–सुनत हमहन का मन में अइसन धारणा बन जाला कि भोजपुरी में अइसने कुल्हि के भरमार होई। 'पाती' के अंक पढ़ के लागल कि भोजपुरी में स्तरीय आ पढ़े–गुने जोग श्रेष्ठ साहित्य रचा रहल बा। एमे संपादकीय से लगाइत, सगरी कहानी, कविता, गीत–गज़ल आ लघुकथा सहारे जोग बा। हमरा ओर से 'पाती' के हर लेखक, कवि, कथाकरन के हिरदया से बधाई आ वाह, वाह! हमके अगिला अंक के बेसब्री से इन्तजार रही।

■ 1 q'kh fl g ¼l 0v0½ dqjfl g bUVj dkyst] cfy; k

निस्संदेह 'पाती' के प्रेमकथा विशेषांक जोगवे जोग बा। भोजपुरी का प्रतिनिधि कथाकरन के 24–25 गो कहानियन से भरल ई विशेषांक एगो अनोखे आयोजन क सृष्टि करत बा। एक से बढ़ के एक सुन्दर, भाव–विचार से भरल–पुरल कहानी आ ओमे 'बनचरी' उपन्यास के अंश....पढ़ीं त पढ़ते रहि जाईं। 'पाती' के उज्जर भविष्य के कामना करत कुशुल संपादन खातिर बधाई।

■ f'koitu yky 'fo|kFkhZ uhydBi qje dkyksuh] pquk jkM] cjbZ;j] okjk.klh

'पाती' अंक 75 प्रेम कथा विशेषांक, भोजपुरी साहित्य के कथा–लेखन के विविधता आ विकास का साथ रचनाशील प्रगति के रेखांकित करत बा। ई अंक सही माने में जतन करे लायक बा। 'बनचरी' उपन्यास त सुने में आइल कि पूरा हो गइल बा छपे जा रहल बा। बाकिर ओकरे प्रारंभिक पछिला आ एह अंक में पढ़ला का बाद जिज्ञासा चरम पर बा। अगिला अंक के प्रतीक्षा रही। का ई पूरा उपन्यास ''पाती'' मे एही तरे धारावाहिक आवत रही?

■ f{kfrt ikMs] xksiky dkWyksuh ikbVh vkua ¼xqtjkr½388001

['बनचरी' उपन्यास 300 पृष्ठ के बा। एकर साठे पैंसठ पृष्ठ अभी ''पाती'' में धारावाहिक आइल बा। एह उपन्यास के ''पाती'' में पूरा के पूरा छापल मुश्किल बा। हो सकेला एह तिसरी कड़ी का बाद बन्द क दिहल जाव। या अगिला कड़ी में उपन्यास के अंतिम अध्याय देके, प्रकाशित किताबे रउरा सब का सोझा राख दिहल जाव।

■ 1 åknd&e.My] ^ikrh**]

काल्ह हम 'पाती' पत्रिका के पिछिला कुछ अंक देखत रहीं। अंक में खाली पुरनिया लोग भेंटाय। ऊहे रमाशंकर श्रीवास्तव, तैयब हुसैन पीडित, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, गदाधर सिंह, आशारानी लाल, आनंद संधिदूत, विष्णुदेव तिवारी, हीरालाल हीरा आदि आदि। कवितवा मे त एकाध गो नया नाम लउकबो करे बाकिर वैचारिक लेखन में कुछ अपवाद के अलावा नीमन स्थिति ना लउकल। एही के एगो रूप साहित्य अकादेमी के एगो बड़हन कार्यक्रम में देखे के मिलल जवना में हिन्दी अंग्रजी के ढेर बड़हन नाम शामिल रहे। बाकिर सब चेहरा उहे रहे जवना के हम पिछिला 12–15 बरिस से देखत आ रहल बानीं। हमरा बगल में चर्चित कवि मदन कश्यप बइठल रहले त हम पूछ दिहनी कि खाली पुरनिये लोग उलकत बा, अइसन काहें? उनुकुर जवन जवाब रहे ऊ भोजपुरियो से जुड़ रहल बा, एह से इहाँ रख रहल बानीं। ऊ कहले कि 'नयकी पीढ़ी फेसबुक आ ह्वाट एप पर बाझल बिया। ओही प क्रांति कइला से ओकर काम चल जा रहल बा। फेसबुक आ ऐप के हाल ई बा कि रउआ केहू के लिखल देख के अगर सोचनीं कि एक घंटा बाद पढ़ लेब त ओतना देरी में ओकरा ऊपर 1000 लोग के लिखल आ जाई। अउर रउआ खोजते रह जाइब। एतना गति, एतना क्षणिकता, एतना हड़बड़ी कि साहित्य पढ़ल आ लिखल जइसे कवनो मुसीबत होखे। कायदे से त साहित्य एह तुरंता व्यवस्था के खिलाफ खड़ा होला आ हमनी के एह माध्यम के उपयोग एह दिशा में करे के चाहीं। कइल भी जा सकेला बाकिर ढेर लोग एगो अंधा दउड़ में भागे में लागल बा। 'पाती' के संपादकीय में अशोक द्विवेदी भोजपुरिया लेखक के विशेषता बतावत लिखले बाड़न कि,'भोजपुरी भाषा के रचनिहार शहरी ढंग से जिये वाला कवि आलोचक लेखा गांव–देहात के ऋतुचक्र, उत्सवधर्मिता आ संवेदनशीलता का प्रति निठोठ बौद्धिक, कठकरेज आ उदासीन ना होई।' बाकिर जहाँ तक ले हमार नजर जा रहल बा अब शिष्ट भाषा आ लोक भाषा के रचनाकार वाला ई अंतर नइखे रह गइल। पाती के संपादक लगातार एह कोशिश में लागल बाड़े कि एकरा के वैचारिक चेतना के, बहस के अउर संवाद के पत्रिका के रूप में भोजपुरिया समाज के सोझा राखीं। संपादकीय आ आलेख के चयन तक में उनुकरा एह प्रयास के देखल जा सकेला।

■ izeksn dqekj frokjh] vfl 0 izkQslj] fgUnh&foHkkx] xqtjkr fo|kihB] xqtjkr

भोजपुरी-साहित्य के पठनीय सृजन/प्रकाशन

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)

अशोक द्विवेदी

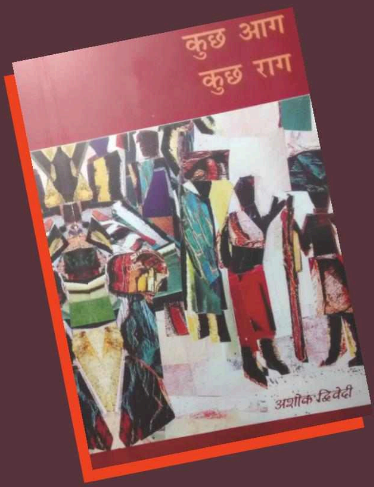

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

प्रकाशक-विजया पब्लिकेशन, एक्स (909), चाँद मोहल्ला, गाँधीनगर, दिल्ली-110031

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)

अशोक द्विवेदी

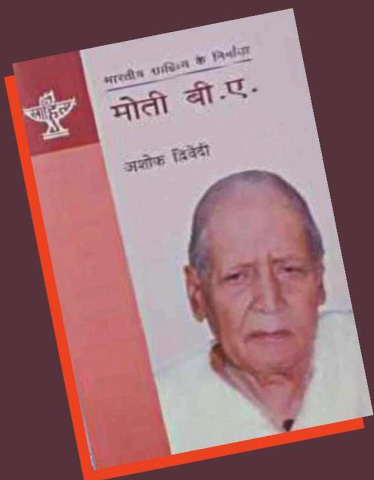

₹ पेपर बैक-50/-

प्रकाशक-साहित्य अकादमी, 35, फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली-110001

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 पर किताब उपलब्ध बा!

Mobile: +91-9919426249, Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

रजि0 नं0 – आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979)

पाती अंक 76-77 जून-सितं0 2015

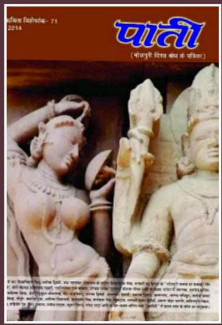

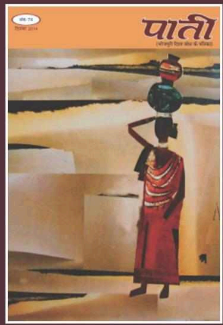

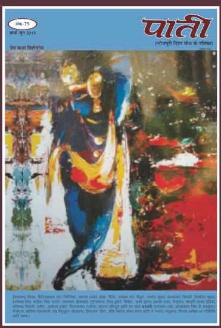

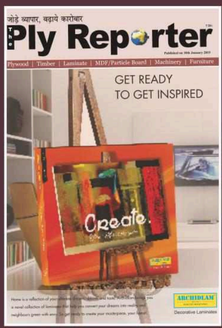

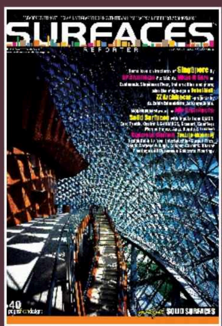

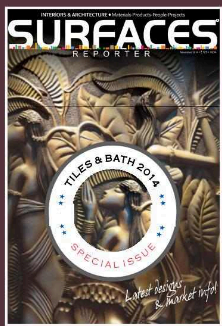

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

40/76, LGF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 09310612995 E-plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक–सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०) खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्डo एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित आ एफ १११८, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-१९ से प्रकाशित।

पिछला पन्ना <<<<< . . . . (पाती, जुलाई - सितंबर 2015 अंक-75) . . . . >>>>> अगिला पन्ना

भोजपुरिका डाटकाम bhojpurika.com का सौजन्य से.